लेखन

अनुच्छेद-लेखन

अनुच्छेद-लेखन

हिंदी में अनुच्छेद शब्द का प्रयोग अंग्रेज़ी के 'paragraph' शब्द के पर्याय के रूप में किया जाता है। इसके अंतर्गत केवल किसी एक भाव अथवा विचार की पूर्ण, किंतु संक्षिप्त अभिव्यक्ति की जाती है। इसमें निबंध की तरह संबंधित विषय के विभिन्न पहलुओं पर विचार न करके उसके किसी एक पहलू का ही संक्षिप्त वर्णन किया जाता है। यह वर्णन अत्यंत सारगर्भित होता है। एक सामान्य अनुच्छेद आकार में 10-12 पंक्ति अथवा 80-100 शब्दों का होता है।

अनुच्छेद की विशेषताएँ

एक अनुच्छेद में निम्नलिखित मुख्य विशेषताएँ होनी चाहिए–

(क) अनुच्छेद के वाक्य पूर्ण, एक-दूसरे से जुड़े हुए और एक ही भाव अथवा विचार के वाहक होते हैं।

(ख) भाषा विषय के अनुरूप भावात्मक, ओजस्वी और प्रवाहपूर्ण होती है।

(ग) अनुच्छेद में कथनों एवं तथ्यों का अनावश्यक विस्तार नहीं होता और न ही उनकी पुनरावृत्ति होती है।

(घ) भाषा और विचारों की स्पष्टता अनुच्छेद का सर्वप्रमुख गुण होती है।

(ङ) रोचकता भी अनुच्छेद का अनिवार्य गुण है।

(च) अनुच्छेद कल्पनात्मक न होकर तथ्यात्मक अधिक होता है। मगर विषय के अनुरूप उसमें यथावश्यक कल्पना का समावेश भी किया जा सकता है।

अनुच्छेद के प्रकार

अनुच्छेद निबंध का महत्त्वपूर्ण अंग है। निबंध मुख्यतः चार प्रकार के होते हैं; उसी के अनुसार अनुच्छेद के भी चार मुख्य भेद होते हैं–

(क) वर्णनात्मक–इसमें किसी स्थान, दृश्य, वस्तु या व्यक्ति का तथ्यों के आधार पर वर्णन किया जाता है; जैसे–कोई अविस्मरणीय घटना आदि।

(ख) विचारात्मक–इसमें किसी भी दिए गए विषय पर अपना मत अर्थात् विचार व्यक्त करने होते हैं; जैसे–परिश्रम का महत्त्व आदि।

(ग) भावात्मक–इसमें व्यक्ति दिए गए विषय पर संवेगात्मक रूप से अपने अनुभव, श्रद्धा अथवा मान्यता के अनुसार अपनी सोच को व्यक्त करता है; जैसे–जब मैंने किसी की सहायता की आदि।

(घ) कल्पनात्मक–इसमें व्यक्ति अपनी कल्पना के आधार पर दिए गए विषय पर अपने विचार व्यक्त करता है; जैसे–यदि मैं प्रधानाचार्य होता आदि।

अनुच्छेद-लेखन में ध्यान रखने योग्य मुख्य बातें

अनुच्छेद-लेखन में निम्नलिखित मुख्य बातों का ध्यान रखा जाना अपेक्षित है-

- अनुच्छेद लिखते समय भाषा का प्रवाह बना रहना चाहिए तथा भाषा सीधी, सरल और स्पष्ट होनी चाहिए।
- मुहावरों, लोकोक्तियों तथा सूक्तियों का उचित प्रयोग करना चाहिए।
- शब्द-सीमा का विशेष ध्यान रखना चाहिए।
- अनुच्छेद लिखते समय भूमिका या उपसंहार नहीं लिखना चाहिए।
- अनुच्छेद भले ही सीमित शब्दों में लिखा जाए, परंतु उसमें विषय से संबंधित सभी महत्त्वपूर्ण तथ्यों का समावेश होना चाहिए।
- सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि 'अनुच्छेद-लेखन' मात्र एक अनुच्छेद (Paragraph) में लिखा जाए। उसे एक से अधिक अनुच्छेदों में कभी नहीं लिखना चाहिए। प्रायः छात्र प्रत्येक संकेत-बिंदु के लिए अलग अनुच्छेद बना देते हैं, जो सब प्रकार से गलत है।
- अनुच्छेद लिखते समय उसकी प्रथम पंक्ति के आरंभ में कुछ स्थान छोड़कर ही लेखन आरंभ करना चाहिए।
- अनुच्छेद-लेखन से पूर्व दिए गए विषय और उसके संकेत-बिंदुओं पर भली प्रकार से विचार कर लेना चाहिए कि किस संकेत-बिंदु के लिए क्या बात लिखनी है।
- अनुच्छेद लिख लेने के बाद उसको दिए गए संकेत-बिंदुओं को ध्यान में रखते हुए दो-तीन बार पढ़ना चाहिए और उसमें हुई विषय एवं वर्तनी संबंधी अशुद्धियों का सुधार करना चाहिए।
- अनुच्छेद में बहुत अधिक काट-छाँट नहीं होनी चाहिए। यदि उसमें काट-छाँट अधिक हो गई है तो साफ़ एवं सुंदर लेख में उसका पुनर्लेखन करना चाहिए।

निर्देश–निम्नलिखित विषयों में से किसी एक पर दिए गए संकेत-बिंदुओं के आधार पर लगभग 100 शब्दों में अनुच्छेद-लेखन लिखिए–

1. जी-ट्वेंटी और भारत *(CBSE SQP 2023-24)*

संकेत-बिंदु– • जी-ट्वेंटी क्या है? • गठन का कारण • कार्यशैली और भारत की भूमिका।

ग्रुप ऑफ ट्वेंटी (जी-20) विश्व के बीस देशों का समूह है। इसका गठन सन् 1999 में हुआ था। यह यूरोपियन यूनियन और 19 देशों का एक अनौपचारिक समूह है। जी-20 शिखर सम्मेलन में इसके नेता हर साल जुटते हैं और व्यापार, जलवायु परिवर्तन, सतत विकास, स्वास्थ्य, कृषि, ऊर्जा, पर्यावरण और भ्रष्टाचार विरोध आदि मुद्दों पर चर्चा करते हैं। प्रारंभ में जी-20 वित्त मंत्रियों और केंद्रीय बैंकों के गवर्नरों का संगठन था। सन् 2008 में दुनिया में भयानक मंदी आई। इसके बाद इसे शीर्ष नेताओं के संगठन में परिवर्तित कर दिया गया। इस मंच का उद्देश्य विश्व की विकसित और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं को परस्पर लाभान्वित कराना और आपस में जोड़ना है। जी-20 में दो समानांतर ट्रैक होते हैं–वित्त ट्रैक और शेरपा ट्रैक। जी-20 प्रक्रिया का समन्वय सदस्य देशों के शेरपाओं द्वारा किया जाता है। वित्त ट्रैक का नेतृत्व सदस्य देशों के वित्त मंत्री और सेंट्रल बैंक के गवर्नर करते हैं। शेरपा पूरे साल के दौरान हुई वार्ताओं का पर्यवेक्षण करते हैं। भारत 1 दिसंबर, 2022 से 30 नवंबर, 2023 तक जी-20 का अध्यक्ष रहेगा। यह भारतीयों के लिए गौरव की बात है। भारत का जी-20 अध्यक्षता का विषय 'वसुधैव कुटुंबकम्' या 'एक पृथ्वी एक कुटुंब एक भविष्य है।' इसे उपनिषद् से लिया गया है। जी-20 का लोगो भारत के राष्ट्रीय ध्वज के रंगों और राष्ट्रीय पुष्प कमल से प्रेरित है।

2. प्रकृति की रक्षा मानव की सुरक्षा *(CBSE SQP 2023-24)*

संकेत-बिंदु–• मनुष्य प्रकृति का अंग • प्रकृति से खिलवाड़ • दुष्प्रभाव और दूर करने के उपाय।

मनुष्य प्रकृति की गोद में जन्म लेता है। प्रकृति ही उसका पालन-पोषण करती है और अंत में वह प्रकृति में ही विलीन हो जाता है। नदी, पर्वत, वन आदि की तरह वह भी प्रकृति का अंग है। प्रकृति से अलग मनुष्य का अस्तित्व नहीं है। आज मनुष्य प्रकृति के साथ खिलवाड़ कर रहा है। बाँध बनाकर वह नदियों की धारा को रोक रहा है। पर्वतों को काटकर सड़कें बना रहा है। वनों को नष्ट कर रहा है। मनुष्य ने जल-वायु और भूमि को प्रदूषित कर दिया है। वह प्राकृतिक संसाधनों का दोहन कर रहा है। इससे प्रकृति का संतुलन बिगड़ रहा है। मौसम चक्र में परिवर्तन आ गया है। सरदी, गरमी, वर्षा असमय और असामान्य रूप से होने लगी है। भूकंप, बाढ़, आँधी, तूफ़ान आदि प्राकृतिक प्रकोपों में बढ़ोतरी हो गई है। पर्यावरण प्रदूषण के कारण असाध्य रोग उत्पन्न हो रहे हैं। प्रकृति के प्रकोप से मानव के अस्तित्व को खतरा उत्पन्न हो गया है। यदि मनुष्य को अपना रक्षण करना है तो उसे नदियों, पर्वतों, वनों, पशु-पक्षियों आदि का रक्षण करना होगा, क्योंकि–'**प्रकृति की रक्षा ही मानव की सुरक्षा है।**'

3. भारत के गाँव/ग्रामीण जीवन और भारत

संकेत-बिंदु –• भारत : गाँवों का देश • गाँव का पर्यावरण • स्वतंत्रता से पहले के गाँव • आज की बदलती स्थिति।

भारतवर्ष गाँवों का देश है। यहाँ की 60 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या गाँवों में रहती है। आधे से अधिक लोगों का जीवन खेती पर निर्भर है। भारत के संदर्भ में गाँवों का उल्लेख आते ही हमारे मस्तिष्क में लहलहाते खेतों, हरे-भरे बागों, हल चलाते किसानों और रंग-बिरंगे परिधानों में सजी-धजी गाँव की युवतियों का चित्र उभरता है। शहरों के कोलाहल से दूर गाँव के शांत वातावरण में गोधूलि में लौटती गाय-भैंसों के गले में बँधी घंटियों की रुन-झुन और पोखर के पास स्थापित बड़े शिवालय से मधुर आरती की ध्वनियाँ कानों में गूँजने लगती हैं। चारों ओर प्रकृति का मनोरम सौंदर्य फैला दिखाई देता है। समूचे देश की आत्मा यहाँ बसती है, तभी तो महात्मा गांधी ने गाँवों को भारत की आत्मा कहा था। स्वतंत्रता-प्राप्ति से पहले भारत में गाँवों की दशा शोचनीय थी। अंधविश्वास, निरक्षरता का बोलबाला था। परंपराओं और रूढ़ियों में जकड़े गाँववासी कुएँ के मेंढक का-सा जीवन जी रहे थे। सुविधाओं का अभाव था, न सड़कें थीं, न स्कूल, न अस्पताल और न ही मनोरंजन के साधन। किसान वर्ष में चार महीने बेकार रहता था और धनाभाव तथा कर्ज़ में दबे रहने के कारण बड़ी कठिनाई से अपना गुज़ारा करता था। स्वतंत्रता-प्राप्ति के पश्चात् गाँवों की स्थिति में बदलाव आना प्रारंभ हुआ। पिछले 20-25 वर्षों में गाँवों के विकास में तेज़ी आई है। सरकारी नीतियों, कार्यक्रमों और पंचवर्षीय योजनाओं में गाँवों के विकास पर विशेष ध्यान दिया गया। अब देश के लगभग सभी गाँवों में बिजली पहुँचाने की व्यवस्था की गई है। देश के लगभग सभी गाँवों का विद्युतीकरण हो चुका है। गाँवों में शिक्षा, स्वास्थ्य और चिकित्सा के क्षेत्र में तेज़ी से परिवर्तन आया है। कृषकों की आर्थिक सहायता हेतु बैंक खोले गए हैं, पक्की सड़कों का निर्माण हुआ है, अस्पताल और स्कूल-कॉलेज़ भी खोले गए हैं। चिकित्सा और स्वास्थ्य सेवाओं का प्रसार किया गया है। खेती के अतिरिक्त किसानों को अन्य व्यवसाय अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है; जैसे–मुर्गीपालन, मत्स्यपालन, हथकरघा आदि। इनसे उनकी आर्थिक दशा में काफ़ी सुधार हुआ है। आज गाँवों में नारी-शिक्षा और नारी सशक्तीकरण के प्रति जागरूकता बढ़ रही है।

4. वह सड़क-दुर्घटना

संकेत-बिंदु– • दुर्घटना : कब और कहाँ? • दुर्घटना-स्थल का दृश्य • मैं क्या कर पाया?

3 जनवरी, 20XX की सुबह साढ़े सात बजे मैं अपने पिताजी के साथ गाड़ी से विद्यालय जा रहा था। कोहरा छाया हुआ था। सड़क पर काफ़ी भीड़ थी। पिताजी बहुत धीरे-धीरे गाड़ी चला रहे थे। जब हम गांधी चौक पर पहुँचे तो हमने वहाँ बीस-पच्चीस आदमियों की भीड़ देखी। एक रिक्शा पलटा हुआ था, उसके पास एक आदमी और एक बच्चा घायल पड़े थे। बच्चा हमारे विद्यालय की वेशभूषा में था। मैंने ध्यान से देखा तो हमें पता चला कि वह तो मेरा दोस्त शशांक है। मैंने चीखते हुए पिताजी से कहा–'पिताजी! वह तो मेरा दोस्त शशांक है।' हम दोनों दौड़कर शशांक के पास पहुँचे। उसके नाक और मुँह से खून निकल रहा था। पास में रिक्शे वाला घायल हुआ पड़ा था। लोगों ने बताया कि एक कार वाला इन्हें टक्कर मारकर भाग गया है। पिताजी ने तुरंत उन दोनों को गाड़ी में डाला और अस्पताल ले गए। मैंने पिताजी के फ़ोन से शशांक के पिताजी को दुर्घटना की सूचना दी। रिक्शे वाले को तो कम चोट लगी थी, लेकिन शशांक को बहुत चोट आई थी। डॉक्टर ने भर्ती करके तुरंत उपचार प्रारंभ कर दिया। उसके माता-पिता भी आ गए थे। वे बहुत दुखी थे। पिताजी ने उन्हें सांत्वना दी। इसी बीच डॉक्टर ने आकर बताया कि शशांक को होश आ गया है। खतरे की कोई बात नहीं है। चेहरे पर चोट है, जो जल्दी ही ठीक हो जाएगी। हमने भगवान का धन्यवाद किया कि उन्होंने शशांक की रक्षा की। उसके माता-पिता ने मेरा और पिताजी का आभार प्रकट किया। तीन दिन बाद शशांक को अस्पताल से छुट्टी मिल गई। उस घटना को यादकर मैं आज भी सिहर उठता हूँ।

5. करत-करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान

संकेत-बिंदु– • सूक्ति का आशय • जीवन में अभ्यास का महत्त्व • सफलता का मूलमंत्र। *(CBSE SQP 2023-24)*

निरंतर अभ्यास और परिश्रम से मंदबुद्धि भी विद्वान बन जाता है। रस्सी की रगड़ से यदि पत्थर पर भी निशान बन सकता है तो अभ्यास व परिश्रम करने से जड़मति (मूर्ख) सुजान (विद्वान) क्यों नहीं बन सकता। किसी भी रचनात्मक कार्य को करने के लिए प्रतिभा के साथ-साथ निरंतर अभ्यास की भी आवश्यकता होती है; क्योंकि अभ्यास ही मनुष्य की सफलता का मूलमंत्र है। इस संसार में अभ्यास करने वाला व्यक्ति ही सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ता है। प्रसिद्ध संस्कृत वैयाकरण वरदराज के जीवन में यह सूक्ति पूरी तरह चरितार्थ हुई। बचपन में वरदराज मंदबुद्धि बालक थे और इसी कारण आचार्य ने उन्हें गुरुकुल से निकाल दिया। एक दिन वरदराज ने कुएँ पर रस्सी की रगड़ से पत्थर पर पड़े निशान देखकर दृढ़निश्चय किया कि वह निरंतर अभ्यास से अपनी कठोर जड़ता का उसी प्रकार विनाश करेगा, जिस प्रकार रस्सी ने कठोर पत्थर को घिसकर उस पर अपने निशान बना दिए हैं। इसी निश्चय के साथ वह गुरुकुल लौट गए। उनका निरंतर अभ्यास, लगन और परिश्रम रंग लाया और वरदराज ने ज्ञान अर्जितकर एक महान वैयाकरण के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त की। इसके विपरीत जो व्यक्ति परिश्रम से बचता है, निरंतर अभ्यास नहीं करता, वह जीवन में उन्नति के शिखर तक कभी नहीं पहुँच पाता। इसलिए अभ्यास में निरंतरता आवश्यक है। चाहे महान खिलाड़ी सचिन तेंदुलकर हो या ऐतिहासिक पात्र एकलव्य, दोनों ने निरंतर अभ्यास के बल पर ही अपने लक्ष्य की बुलंदियों को छुआ है: अतः लगन और कठोर परिश्रम के साथ निरंतर अभ्यास से ही जीवन में सफलता प्राप्त की जा सकती है।

6. जी०एस०टी : एक बड़ा आर्थिक सुधार

संकेत-बिंदु–• जी०एस०टी० का तात्पर्य • प्रारंभ • कर की दरें • लाभ।

जी०एस०टी० का अर्थ है–गुड्स एंड सर्विसेज टैक्स अर्थात् 'वस्तु एवं सेवा कर'। यह एक अप्रत्यक्ष कर व्यवस्था है, जिसका संचालन 'वस्तु एवं सेवा कर परिषद्' द्वारा होता है। भारत के वित्त मंत्री इसके अध्यक्ष होते हैं। जी०एस०टी० को 1 जुलाई, 2017 को लागू किया गया। इससे केंद्र सरकार और राज्य सरकारों द्वारा भिन्न-भिन्न दरों पर लगाए जा रहे विभिन्न करों को हटाकर, पूरे देश में एक ही अप्रत्यक्ष कर व्यवस्था लागू हो गई है। अर्थशास्त्री इसे स्वतंत्रता के पश्चात् का सबसे बड़ा आर्थिक सुधार बता रहे हैं। 'वस्तु एवं सेवा कर परिषद्' (जी०एस०टी० काउंसिल) ने पाँच तरह की कर दरें निर्धारित की हैं–0, 5, 12, 18 एवं 28 प्रतिशत। कुछ आवश्यक वस्तुओं को जी०एस०टी० से मुक्त रखा गया है। इस कर व्यवस्था से राज्य सरकारों और केंद्र सरकार के राजस्व में

कोई विशेष कमी नहीं आएगी। 'वस्तु एवं सेवा कर' व्यवस्था के अनेक लाभ हैं; जैसे–सरल अनुपालन, पारदर्शिता, कर दरों में एकरूपता, करों पर कराधान की समाप्ति, प्रतिस्पर्धा में सुधार, भ्रष्टाचार पर नियंत्रण, अधिक राजस्व निपुणता आदि। आम भारतवासी को जी०एस०टी० से सबसे बड़ा लाभ यह है कि पूरे देश में किसी भी वस्तु की खरीद पर एक ही टैक्स चुकाना पड़ेगा। अतः देश में समान कर व्यवस्था लागू करना एक बहुत बड़ा आर्थिक सुधार है और सरकार का राष्ट्रहित में एक बड़ा कदम है।

7. नई राष्ट्रीय शिक्षा-नीति

संकेत-बिंदु– • नई राष्ट्रीय शिक्षा-नीति जारी • नई राष्ट्रीय शिक्षा-नीति के प्रमुख प्रावधान • देश के विकास में योगदान।

देश में जुलाई 2020 से नई राष्ट्रीय शिक्षा-नीति लागू कर दी गई है। स्वतंत्र भारत की तीसरी शिक्षा-नीति का उद्देश्य गुणवत्तापूर्ण तथा सार्वभौमिक शिक्षा के साथ ही व्यावसायिक शिक्षा पर बल देना है। इसमें भारतीय संस्कृति की विविधता का उचित समावेश किया गया है। इस शिक्षा-नीति में रटकर याद करने की पद्धति के स्थान पर छात्रों का कौशल विकसित करने और उनकी क्षमताओं का आकलन करने पर जोर दिया गया है। इसमें मानव संसाधन विकास मंत्रालय का नाम बदलकर एक बार पुनः शिक्षा मंत्रालय कर दिया गया है। इसमें 3 से 18 वर्ष के बालकों के लिए निःशुल्क शिक्षा का प्रावधान किया गया है। बारह वर्ष की (10+2) स्कूली शिक्षा-प्रणाली के स्थान पर (5+3+3+4) की शिक्षा-प्रणाली लागू कर दी गई है। पहले पाँच वर्ष में तीन वर्ष की प्री-प्राइमरी और पहली-दूसरी कक्षा की शिक्षा सम्मिलित है। इसके बाद तीसरी, चौथी और पाँचवीं कक्षा को प्राथमिक शिक्षा में सम्मिलित किया गया है। यह शिक्षा मातृभाषा में दिए जाने का प्रावधान है। इसमें छठी, सातवीं और आठवीं के तीन वर्षों में गणित और विज्ञान पर बल देते हुए व्यावसायिक शिक्षा का आरंभ किया जाएगा। स्कूली शिक्षा के अंतिम चार वर्षों में नवीं से बारहवीं तक की शिक्षा सम्मिलित है। इसमें विद्यार्थियों को वैकल्पिक विषयों के चुनाव की छूट दी गई है। विज्ञान, कला और वाणिज्य वर्गों में निर्धारित विषयों का प्रतिबंध नहीं रहेगा। इसी प्रकार उच्च शिक्षा में भी आमूल-चूल परिवर्तन किया गया है। नई राष्ट्रीय शिक्षा-नीति में प्राथमिक शिक्षा में बच्चों के लिए बस्ते का बोझ कम करने, नवीं से बारहवीं तक की मूल्यांकन पद्धति में परिवर्तन करने तथा मातृभाषा के साथ शिक्षणेतर गतिविधियों–खेल व योग आदि पर बल देने का प्रावधान है। आशा है कि भारत को विश्व की महाशक्ति और जगद्गुरु बनाने में नई राष्ट्रीय शिक्षा-नीति का क्रियान्वयन मील का पत्थर सिद्ध होगा।

8. परोपकार

संकेत-बिंदु– • परोपकार का अर्थ • प्रकृति का परोपकारी रूप • निःस्वार्थ सेवा • उदाहरण।

स्वार्थ-भावना से रहित होकर दूसरों के हितार्थ किया गया प्रत्येक कार्य 'परोपकार' की श्रेणी में आता है। मनसा, वाचा, कर्मणा समाज का मंगल-साधन करना ही परहित है। स्वार्थ-निरपेक्ष और परहितार्थ कार्य ही सबसे बड़ा धर्म है। पारस्परिक विरोध की भावना का नाश करना तथा प्रेमभाव को बढ़ाना परोपकार है। प्रकृति अपना सबकुछ दूसरों पर लुटा देती है। अनंत जलराशि का भार वहन करती हुई नदियाँ जीवनपर्यंत प्रवाहित होती रहती हैं, झंझावातों को वृक्ष मौन भाव से झेलते हुए अपनी छाया और फल से दूसरों की क्लांति और क्षुधा मिटाते हैं, सूर्य की किरणें संसार को जीवन प्रदान करती हैं। जब प्रकृति के तत्त्व परोपकार में संलग्न हैं तो मानव, जो ईश्वर की सर्वोत्कृष्ट कृति है, उसे तो परोपकार के लिए सर्वस्व न्योछावर करने के लिए तत्पर रहना ही चाहिए। साधुजन का जन्म इस धरती पर परोपकार के लिए ही होता है। परोपकार करने से आत्मा प्रसन्न रहती है। परोपकारी मानवता का सच्चा पुजारी कहलाता है। त्याग और बलिदान भारतीय संस्कृति के प्राण हैं। भारत-भूमि पर एक से बढ़कर एक परोपकारी हुए हैं। राजा रंतिदेव, महर्षि दधीचि, राजा उशीनर और कर्ण से हमें सदैव परोपकार की प्रेरणा मिलती रहेगी। ईसा मसीह का सूली पर चढ़ना, सुकरात का ज़हर पीना और शंकर जी का विषपान करना परोपकार के ही ज्वलंत उदाहरण हैं।

9. हमारा प्यारा भारत/मेरा देश

संकेत-बिंदु– • भौगोलिक स्थिति • प्राकृतिक सौंदर्य • सभ्यता और संस्कृति • वर्तमान स्थिति।

'सारे जहाँ से अच्छा हिंदोस्ताँ हमारा'

हमारा भारत पुरातन और भव्य, भाषाओं और संस्कृतियों की संगमस्थली, विश्व सभ्यता का जनक, अनुपम प्राकृतिक सौंदर्य से मंडित तथा स्वर्ग से भी महान है। कितना गौरवमय इतिहास है इस देश का! ऐसे देश की माटी में जन्म लेना भी सौभाग्य और गौरव की बात है। कश्मीर से कन्याकुमारी तक और गुजरात से गंगासागर तक फैला हमारा भारत विश्व का सातवाँ महान देश है। उत्तर में पर्वतराज हिमालय इसके उन्नत भाल पर हिममुकुट के समान सुशोभित है–तो दक्षिण में हिंद महासागर इसके चरणों को निरंतर धोता है। पावन गंगा और यमुना नदियाँ इसके हृदयहार के रूप में इसे रमणीयता प्रदान करती हैं।

भारत की प्राकृतिक सुषमा अनुपम है। हिमालय के हिममंडित पर्वतशिखर, कल-कल करती नदियाँ, लहलहाते खेत तथा हरे-भरे वन-उपवन, भाँति-भाँति के जीव और पशु-पक्षी इसके सौंदर्य को दर्शनीय बनाते हैं। यहाँ समय-समय पर छह ऋतुएँ आकर इसका शृंगार करती हैं। वसंत के आगमन से तो धरती दुल्हन जैसी सज उठती है। विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र भारत एक धर्म-निरपेक्ष राज्य है। यहाँ सभी धर्मों के लोग परस्पर मिल-जुलकर रहते हैं। हमारे देश में खान-पान, वेश-भूषा, रहन-सहन और भाषा की दृष्टि से अनेक विभिन्नताएँ हैं, फिर भी भारतवासी माला में गुँथे फूलों के समान प्रेम और भाईचारे के धागे में बँधे हैं। भारतीय संस्कृति का मूलस्वर विश्व-कल्याण है। 'वसुधैव कुटुंबकम्' अर्थात् 'समस्त विश्व एक कुटुंब के समान है' का स्वर यहाँ गूँजता है। आज भारत विश्व-शांति का अग्रदूत बनकर सब जगह शांति-स्थापना में अपना योगदान दे रहा है। वह दिन अब दूर नहीं, जब भारत फिर से विश्वगुरु की उपाधि प्राप्त करेगा।

10. गया वक्त फिर हाथ नहीं आता

संकेत-बिंदु– • बीता समय फिर हाथ नहीं आता • समय सबसे बड़ा धन • जीवन में सफलता का आधार समय • समय नष्ट करने वाले को समय ही नष्ट कर देता है।

कहा जाता है कि जिस प्रकार मुँह से निकली बात, कमान से छूटा तीर, देह से निकली आत्मा, शाखा से टूटे पत्ते और बीता हुआ बचपन फिर नहीं लौटते, उसी प्रकार हाथों से रेत की तरह फिसलता समय अर्थात् गया हुआ वक्त फिर कभी हाथ नहीं आता। वेदों में भी कहा गया है कि समय लगातार अग्रसर अश्व के समान है, जो एक बार निकल जाए तो लौटकर नहीं आता। समय तो जगत्-नियंता से भी अधिक शक्तिशाली है; क्योंकि रूठे हुए प्रभु को तप, आराधना और भक्ति से पुनः मनाया जा सकता है, परंतु रूठे हुए कल को अर्थात् बीते हुए समय को करोड़ों उपाय करके भी वापस नहीं बुलाया जा सकता है। उसे प्रसन्न नहीं किया जा सकता है। समय मानव की बहुमूल्य निधि है, समय ही सबसे बड़ा धन है; अतः समय की गति को पहचानकर कार्य करने वाला भाग्यशाली है, धनी है, सिद्ध पुरुष है। समय जब द्वार पर दस्तक देता है तो जो उसकी आवाज़ पर कर्म करने वाले होते हैं, वे लाभांवित होते हैं और जो दैव-दैव पुकारते रहते हैं, वे जीवन में पिछड़ जाते हैं। समय की अवहेलना करने वाला समय की मार से कब बचा है? समय सत्य का पथ-प्रदर्शक है। समय की पाबंदी ही सफलता की कुंजी है। कल का काम आज निपटाना ही यशस्वी बनने का साधन है। समय को नष्ट करने वालों को एक दिन समय ही नष्ट कर देता है; क्योंकि गया हुआ वक्त फिर हाथ नहीं आता।

11. संयुक्त परिवार *अथवा* संयुक्त परिवार : आज की आवश्यकता

संकेत-बिंदु– • संयुक्त परिवार का अर्थ • संबंधों में पड़ती दरार • जोड़ने से लाभ • युवा पीढ़ी को रिश्तों का ज्ञान • मिल-जुलकर रहने की भावना • अच्छे संस्कारों का ग्रहण • बुज़ुर्गों की उपस्थिति व महत्ता • अकेलेपन से मुक्ति।

परिवार समाज की सबसे महत्त्वपूर्ण इकाई है। समाज में दो प्रकार के परिवार होते हैं–एकल परिवार और संयुक्त परिवार। पहले समाज में संयुक्त परिवार अधिक होते थे, लेकिन आज एकल परिवारों का चलन हो गया है। संयुक्त परिवार प्रायः समाप्त ही हो गए हैं। संयुक्त परिवार उन परिवारों को कहते हैं, जिनमें माता-पिता, भाई-भतीजे और उनकी संतानें सब मिलकर रहते हैं, सबका भोजन एक ही चूल्हे पर बनता है और आय-व्यय का हिसाब परिवार के मुखिया के हाथों में होता है। ऐसे परिवारों में परिवार का मुखिया सभी सदस्यों में कार्यों का बँटवारा कर देता है। सब अपने-अपने कार्यों के लिए मुखिया के प्रति उत्तरदायी होते हैं। आज पारिवारिक संबंधों में दरार पड़ गई है। इसका कारण यह है कि परिवार के बच्चे पढ़-लिखकर बाहर नौकरी करने लगे हैं। उनका अपना अलग घर हो गया है। वे अपनी आय-व्यय का हिसाब स्वयं रखते हैं। इस प्रकार संयुक्त परिवार टूटकर एकल परिवारों में बदल गए हैं। संयुक्त परिवार के अनेक लाभ हैं। इन परिवारों में व्यक्ति अधिक सुरक्षित और सुखी होता है। लोग कठिन-से-कठिन काम को मिलकर कर लेते हैं और बड़ी-से-बड़ी विपत्ति को भी सहन कर लेते हैं। युवा पीढ़ी को रिश्तों का ज्ञान और उनके महत्त्व का पता संयुक्त परिवार में रहकर ही चलता है। लोगों में मिल-जुलकर रहने की भावना का विकास होता है, जिससे आपसी प्रेम और भाईचारे की भावना सुदृढ़ होती है। परिवार के बच्चों को दादा-दादी के रूप में अनुभवी मार्गदर्शक मिल जाते हैं। वे परिवार के बच्चों में अच्छे संस्कारों के बीज बोकर उन्हें देश का सभ्य और सुसंस्कृत नागरिक बनाते हैं। संयुक्त परिवार में किसी भी स्थिति में किसी भी सदस्य को अकेलेपन की समस्या से नहीं जूझना पड़ता, जिससे परिवार का कोई भी सदस्य अवसाद का शिकार नहीं होता। कम आय में भी अधिक-से-अधिक लोगों का पालन-पोषण हो जाता है। संयुक्त परिवार भारतीय समाज की एक बहुत सुंदर और कल्याणकारी परंपरा है, हमें इसे अवश्य बचाए रखना चाहिए।

12. स्टार्ट अप इंडिया : एक महत्त्वाकांक्षी योजना

संकेत-बिंदु– • योजना की घोषणा • शुभारंभ • उद्देश्य • लाभ।

केंद्र सरकार द्वारा नागरिकों के बीच उद्यमशीलता की भावना को बढ़ावा देने और युवकों को उसके लिए प्रोत्साहित करने हेतु 'स्टार्ट अप इंडिया' योजना प्रारंभ की गई। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 15 अगस्त, 2015 को इस योजना की घोषणा की। इसके पश्चात् तत्कालीन वित्त मंत्री अरुण जेटली ने 16 फरवरी, 2016 को इस योजना का उद्घाटन किया। इस योजना का उद्देश्य देश में नवाचार और स्टार्ट अप के पोषण के लिए एक मजबूत पारिस्थितिकी तंत्र (इकोसिस्टम) का निर्माण करना है, जो स्थायी आर्थिक विकास को बढ़ावा देगा। यह तंत्र हितधारकों के लिए एक ऐसा मंच तैयार करेगा, जहाँ उन्हें एक-दूसरे से बातचीत करने, ज्ञान का आदान-प्रदान करने और अत्यधिक गतिशील वातावरण में एक-दूसरे के साथ भागीदार बनने का अवसर प्राप्त होगा। इस योजना के द्वारा सरकार युवकों को वित्तीय सहायता, मार्गदर्शन और उद्योग-भागीदारी के अवसर प्रदान करके भारत में स्टार्ट अप को बढ़ावा देना चाहती है। इसका सबसे बड़ा लाभ यह होगा कि देश के युवक रोजगार के लिए नहीं भटकेंगे, बल्कि वे दूसरों को भी रोजगार, दे सकेंगे।

13. डिजिटल इंडिया

संकेत-बिंदु – • परिचय • अभियान का प्रारंभ • डिजिटल इंडिया के प्रमुख स्तंभ • लाभ • कमियाँ।

'डिजिटल इंडिया' भारत को समृद्ध करने के लिए भारत सरकार द्वारा चलाया गया एक अभियान है। इसका उद्देश्य सभी छोटे-बड़े सरकारी विभागों को इंटरनेट के माध्यम से जनता के साथ जोड़ना और यह सुनिश्चित करना है कि कागज़ का प्रयोग किए बिना सरकारी सेवाएँ इलेक्ट्रॉनिक रूप से जनता तक पहुँच सकें। इस अभियान का प्रारंभ देश के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 1 जुलाई, 2015 को देश के प्रमुख उद्योगपतियों की उपस्थिति में किया। इस अभियान के तीन मुख्य घटक हैं–डिजिटल आधारभूत ढाँचे का निर्माण करना, इलेक्ट्रॉनिक रूप से सरकारी सेवाओं को जनता तक पहुँचाना और डिजिटल साक्षरता। इसके लिए एक द्विपक्षीय आधार का निर्माण किया जाएगा, जहाँ सेवा प्रदाता और उपभोक्ता दोनों को लाभ होगा। 'डिजिटल इंडिया अभियान' के नौ प्रमुख स्तंभ हैं–ब्रॉडबैंड हाइवे, घर-घर मोबाइल फोन की पहुँच, पब्लिक इंटरनेट एक्सेस कार्यक्रम, ई-गवर्नेंस–प्रौद्योगिकी के माध्यम से सरकार में सुधार, ई-क्रांति सेवाओं की इलेक्ट्रॉनिक डिलीवरी, सभी के लिए सूचना, इलेक्ट्रॉनिक विनिर्माण, आई०टी० नौकरियाँ, अगेती फसल कार्यक्रम अर्थात् भविष्य की तैयारी। 'डिजिटल इंडिया अभियान' से भ्रष्टाचार में कमी, सरकारी कार्यालयों में लंबी लाइनों से छुटकारा, देश का तेजी से विकास, रोजगार के नए अवसर, घर बैठे बैंकिंग लेन-देन और खरीदारी आदि अनेक लाभ हैं। लाभ के साथ-साथ इस अभियान की कुछ कमियाँ भी हैं। गरीब और अनपढ़ लोग इसका लाभ नहीं उठा सकते। इसके अलावा गोपनीयता का अभाव, डाटा सुरक्षा नियमों का अभाव, नागरिक स्वायत्तता का हनन, साइबर असुरक्षा आदि भी इसकी कुछ कमियाँ हैं। 'डिजिटल इंडिया' देश के विकास में एक क्रांतिकारी कदम है, लेकिन इसकी सफलता और उत्तम परिणामों के लिए इसकी कमियों को दूर करना अत्यंत आवश्यक है।

14. भारत की ऋतुएँ/ऋतुओं के बदलते रूप

संकेत-बिंदु– • ऋतुचक्र • ऋतुओं का वर्णन • अनोखा देश।

भारत विश्व में सर्वाधिक छह ऋतुओं वाला देश है। इसकी धरती स्वर्गतुल्य है। यहाँ छह ऋतुओं का चक्र गतिशील रहता है। वसंत की वासंती बयार, ग्रीष्म की तपन, पावस की रिमझिम, शरद् की स्वच्छ निर्मल चाँदनी, हेमंत की भीषण ठंड और नवीन पत्ते पाने का आह्वान करता शिशिर–ये भारत की षड्ऋतुओं का परिचय देते हैं। छह ऋतुओं में प्रत्येक ऋतु का चक्र दो-दो महीने का बन जाता है। फाल्गुन और चैत्र मास में वसंत का साम्राज्य होता है; वैशाख और ज्येष्ठ ग्रीष्म ऋतु के होते हैं; आषाढ़ और श्रावण मास में वर्षा ऋतु होती है; भाद्रपद और आश्विन शरद् ऋतु के होते हैं; कार्तिक और अगहन (मार्गशीर्ष) हेमंत ऋतु के और शिशिर ऋतु पौष (पूस) और माघ के महीने में आती है। ऋतुओं का यह चक्र संपूर्ण प्राणि-जगत् पर प्रभाव डालता है। वसंत को 'ऋतुराज' कहा जाता है। शीत ऋतु की समाप्ति के साथ ऋतुराज का आगमन होता है। प्रकृति का कण-कण यौवन में भरकर थिरकने लगता है। ज्येष्ठ माह के आते-आते सूर्य का ताप बढ़ जाता है। गरमी असह्य हो जाती है। लू चलने लगती है। सूर्य के प्रचंड ताप से बचने के लिए सभी पशु-पक्षी वृक्षों की शाखाओं का आश्रय लेते हैं। जल-स्रोत सूखने लगते हैं। संपूर्ण प्राणि-जगत् व्याकुल हो उठता है। फिर आती है छम-छम करती पावस ऋतु। आषाढ़ और श्रावण मास में आकाश काले-काले बादलों से भर उठता है और वर्षा की रिमझिम फुहारें धरती को शीतलता प्रदान करती हैं। किसान का मन-मयूर नाच उठता है। वर्षा का प्रभाव कम होते ही शरद् ऋतु आती है। आकाश स्वच्छ और निर्मल हो जाता है। इस ऋतु में नवरात्र आते हैं। विजयादशमी और दीपावली के पर्व भी उल्लासपूर्वक मनाए जाते हैं। हेमंत ऋतु के आगमन के साथ सरदी बढ़ने लगती है। दिन छोटे और रातें लंबी होने लगती हैं। पौष माह में तो ठंडी हवाएँ शरीर को कँपा देती हैं। इस ऋतु में ही क्रिसमस का त्योहार हर्ष-उल्लास के साथ मनाया जाता है। हेमंत के बाद शिशिर ऋतु का आगमन होता है। पेड़ों के पत्ते झड़ने लगते हैं। कोहरे से ढका वातावरण वसंत के आने की प्रतीक्षा करता प्रतीत होता है। नई कोंपलें फूटने लगती हैं। इस प्रकार ऋतुओं का यह चक्र निरंतर चलता रहता है और मानव-जीवन को गतिमान बनाए रखता है। इन्हीं ऋतुओं के कारण भारत विश्व का अनोखा देश कहलाता है। यहाँ प्रकृति सदैव अपने सभी रूपों और कलाओं का प्रदर्शन करती है।

15. बालश्रम

संकेत-बिंदु– • समाज के लिए अभिशाप • बच्चों का शोषण • कारण • सरकारी प्रयास • हमारी ज़िम्मेदारी।

बचपन मनुष्य के जीवन का सबसे सुंदर और प्यारा समय है, जब न किसी बात की चिंता होती है, न कोई ज़िम्मेदारी। बस, खेलना-कूदना, पढ़ना-हँसना और आनंद उठाना, परंतु सभी का बचपन ऐसा ही हो, यह ज़रूरी नहीं। आज समाज की तस्वीर बिलकुल उल्टी है। छोटे-बड़े सभी शहरों या कहिए हर गली, हर मोड़ पर आपको बच्चे मज़दूरी करते मिल जाएँगे। इन बच्चों का समय स्कूल में कॉपी-किताबों और दोस्तों के बीच नहीं, बल्कि होटलों, घरों, उद्योगों में बरतनों, झाड़ू और औज़ारों के बीच बीतता है। अधिकांश बच्चे घरेलू नौकरों के रूप में कार्य करते हैं, जहाँ इन्हें दो समय का भरपेट भोजन भी नहीं मिलता है। नाममात्र का वेतन देकर दिन-रात काम कराया जाता है, यहाँ तक कि मारा-पीटा भी जाता है। बड़ी संख्या में बच्चे कारखानों में काम करते हैं, जहाँ उन्हें श्रमसाध्य कार्य करने व अस्वास्थ्यकर वातावरण में काम करने को विवश किया जाता है। आपने प्रायः छोटे बच्चों को कूड़े के ढेरों से प्लास्टिक की बोतलें, काँच, लोहा इकट्ठा करते देखा होगा। छोटी-सी उम्र में इन बच्चों को गलीचे बुनने, चूड़ियों के कारखाने, पटाखे बनाने के कारखाने जैसी ख़तरनाक स्थितियों में काम करना पड़ता है। भारत में इस भयावह स्थिति का एकमात्र कारण है–गरीबी और अशिक्षा। अशिक्षित परिवारों में बच्चों की अधिक संख्या उन्हें रोटी जुटाने के लिए काम करने पर मजबूर कर देती है। पिछले कुछ दशकों से बालश्रम के विरुद्ध आवाज़ उठाई जा रही है। बालश्रम को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक गंभीर मुद्दे के रूप में देखा गया है; क्योंकि बालश्रम बच्चे के भविष्य को केवल हानि ही नहीं पहुँचाता, उसे नष्ट कर देता है। यह मानव अधिकारों का उल्लंघन है। हमारे देश में बालश्रम पर रोक लगाने के लिए स्वतंत्रता के पश्चात् अनेक कानून बनाए गए हैं। संविधान के नीति-निदेशक तत्त्वों में राज्यों को निर्देश दिया गया है कि वे ऐसे कानून बनाएँ, जिनसे 14 वर्ष से कम आयु के बच्चों को ऐसे कार्य-स्थल या कारखाने में न रखा जाए, जो खतरनाक हों। बालमज़दूरों की स्थिति में सुधार के लिए सरकार ने सन् 1986 ई० में चाइल्ड लेबर एक्ट बनाया, जिसके तहत बालमज़दूरी को अपराध माना गया। इन सभी प्रयोगों के बावज़ूद बालश्रम भारत में एक चुनौती है। इसकी समाप्ति के लिए आवश्यकता है समाज को जागरूक और बच्चों के प्रति संवेदनशील बनाने की।

16. डिजिटल भुगतान : समय की माँग

संकेत-बिंदु – • डिजिटल भुगतान क्या है? • डिजिटल भुगतान के तरीके • लाभ • महत्त्व।

'डिजिटल भुगतान' एक ऐसा लेन-देन है, जो डिजिटल या ऑनलाइन रीति के माध्यम से होता है। इसमें पैसे का कोई भौतिक आदान-प्रदान नहीं होता, बल्कि भुगतानकर्ता और प्राप्तकर्ता दोनों पक्ष पैसे का आदान-प्रदान करने के लिए इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों का उपायेग करते हैं। भारत में डिजिटल भुगतान को बढ़ावा देने के लिए अनेक तरीके उपलब्ध हैं, जिनमें मुख्य हैं–बैंकिंग कार्ड, प्वाइंट ऑफ सेल (पी०ओ०एस०), इंटरनेट बैंकिंग, यू०एस०एस०डी०, यू०पी०आई०, मोबाइल बैंकिंग, आई०पी०एस०, मोबाइल वॉलेट, बैंक प्रीपेड कार्ड, माइक्रो ए०टी०एम०, भीम एप आदि। डिजिटल भुगतान के अनेक लाभ हैं। यह भुगतान पारंपरिक लेन-देन की तुलना में अधिक त्वरित, सरल, सुविधाजनक और कम खर्चीला है। यह अत्यंत सुरक्षित है, क्योंकि इसमें पैसे के खो जाने, लूटे जाने या डकैती आदि का कोई जोखिम नहीं है। इसमें भुगतानकर्ता को विशेष छूट और उपहार का लाभ मिलता है। भुगतान का स्पष्ट बिल प्राप्त होता है, जिससे भुगतानों पर नज़र रखना आसान है। इससे अपने बजट को नियंत्रित रखा जा सकता है। इसके कारण यात्रा और खरीदारी करते समय नक़द पैसा ले जाने की आवश्यकता नहीं है। इस लेन-देन के द्वारा लाइनों में लगने से बचा जा सकता है और शारीरिक दूरी के नियम का पालन किया जा सकता है। डिजिटल भुगतान करते समय साइबर अपराधियों से सावधान रहना अत्यंत आवश्यक है। डिजिटल भुगतान प्रणाली 'डिजिटल इंडिया' का एक प्रमुख अंग है। इसके महत्त्व और लाभों को देखते हुए कहा जा सकता है कि डिजिटल भुगतान आज के समय की माँग है।

17. पर्यटन (देशाटन) का महत्त्व

संकेत-बिंदु– • अर्थ • महत्त्व और लाभ • आज के युग में पर्यटन।

पर्यटन या देशाटन का अर्थ है–देश के विभिन्न भागों और विभिन्न देशों का भ्रमण करना। पर्यटन ज्ञान-प्राप्ति का एक व्यावहारिक साधन है। विशेष रूप से विद्यार्थियों के लिए पर्यटन ज्ञानार्जन का सहज-स्वाभाविक माध्यम है। केवल पुस्तकों से पढ़कर प्राप्त किया ज्ञान स्थायी नहीं हो सकता। किसी स्थान, दृश्य या वस्तु के प्रत्यक्ष दर्शन से ज्ञान स्थायी हो जाता है। यही कारण है कि आज स्कूल-कॉलेज़ों में विद्यार्थियों को अधिक-से-अधिक स्थानों की सैर कराते हुए उन स्थानों के ऐतिहासिक महत्त्व और विशिष्टताओं का परिचय कराया जाता है। अजंता-एलोरा की गुफाएँ, लाट, स्तूप, मंदिर, भवन एवं खंडहर, किले, मकबरे जैसे स्थान तथा रेगिस्तान, पठार, घाटी, खाड़ी आदि के प्रत्यक्ष दर्शन से इनसे संबंधित जानकारी सब प्रकार से स्पष्ट हो जाती है। देशाटन के माध्यम से भाषा और संस्कृति के आदान-प्रदान से विश्वबंधुत्व की भावना को बल मिलता है। पर्यटन या देशाटन व्यक्ति के विचारों को उदार, दृष्टिकोण को विस्तृत तथा हृदय को विशाल बनाता है। ज्ञान-प्राप्ति के साथ-साथ पर्यटन से मनोरंजन और स्वास्थ्य लाभ भी होता है। विभिन्न स्थानों, वनों, पहाड़ों, नदी-तालाबों, हिमाच्छादित पर्वत-श्रेणियों, कलकल करते झरनों, सागर की उत्ताल तरंगों और हरी-भरी घाटियों को देखकर पर्यटक झूम उठते हैं। प्राकृतिक सौंदर्य से वे अभिभूत हो उठते हैं। उनमें नई प्रेरणा, सरसता व उत्साह का संचार होता है। पर्यटन स्वास्थ्य के लिए भी हितकर है। जलवायु-परिवर्तन से शरीर में नई स्फूर्ति आती है और हृदय में प्रसन्नता का संचार होता है। पर्यटन आज विश्व में बहुत ही लाभप्रद उद्योग के रूप में विकसित हो रहा है। यह विभिन्न देशों की आय का साधन बन गया है। विदेशी पर्यटकों के आने से देश में विदेशी मुद्रा आती है और देश का विदेशी मुद्रा-भंडार बढ़ता है। आज पर्यटन ने अंतरराष्ट्रीय सहयोग, मैत्री व सद्भावना बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है।

18. स्वदेशी अपनाओ

संकेत-बिंदु– • क्या है? आवश्यकता क्यों? • देश की अर्थव्यवस्था पर प्रभाव • सुझाव। ***(CBSE 2023)***

स्वदेशी का अर्थ है–अपने देश का अथवा अपने देश में निर्मित। विशेष अर्थ में किसी भौगोलिक क्षेत्र में जन्मी, निर्मित या कल्पित वस्तुओं, नीतियों, विचारों को स्वदेशी कहते हैं। वर्तमान समय में स्वदेशी की अवधारणा अपने देश की कंपनियों और उद्योगों द्वारा देश में उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं को अपनाने पर बल देना है। देश को विकसित करने, प्रत्येक क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने और देश की अर्थव्यवस्था को सुधारने के लिए स्वदेशी अपनाने की आवश्यकता है। स्वदेशी की भावना से देश की अर्थव्यवस्था पर अनुकूल प्रभाव पड़ता है। जब हम अपने देश में बनी वस्तुओं का उपयोग करेंगे तो देश के उद्योगों को बढ़ावा मिलेगा। इससे देश की अर्थव्यवस्था में सुधार होगा। स्वदेशी अपनाने से विदेशी मुद्रा का भंडार सुरक्षित रहता है। यह अर्थव्यवस्था की मजबूती का आधार है। स्वदेशी की भावना एक सामाजिक, आर्थिक क्रांति उत्पन्न करती है। यह देशवासियों में देश के प्रति प्रेम एवं समर्पण की भावना उत्पन्न करती है। घरेलू उत्पादन बढ़ने से सरकार को अधिक राजस्व प्राप्त होता है। स्वदेशी कंपनियों की कार्य संस्कृति देश की परिस्थितियों के अनुकूल

होती है। ये प्राकृतिक संसाधनों का सीमित उपयोग करती हैं। स्वदेशी से रोजगार में वृद्धि होती है, जिससे प्रति व्यक्ति आय बढ़ती है। गांधी जी ने जन-जन को जागरूक बनाकर स्वदेशी अपनाने की प्रेरणा दी थी। उनका मत था कि भारत को आत्मनिर्भर बनाने में यह एक प्रभावशाली अवधारणा है। हमारा सुझाव है–

''स्वदेशी अपनाओ, देश को समृद्ध बनाओ।''

19. श्रम का महत्त्व

संकेत-बिंदु– • मानव-जीवन में श्रम का महत्त्व • सारी सृष्टि संघर्षरत • कर्म बिना कुछ नहीं। *(CBSE 2015)*

मानव-जीवन में परिश्रम की महत्त्वपूर्ण उपयोगिता है। परिश्रम से ही मनुष्य ने अनगिनत उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं। इसी कारण स्वामी विवेकानंद ने सोई हुई भारतीय जनता को जगाते हुए कहा था–'उठो, जागो और लक्ष्य-प्राप्ति तक मत रुको।' पृथ्वी के रूप को सुंदर बनाने के लिए प्रकृति का कण-कण अपना महत्त्वपूर्ण योगदान देता है। न केवल बुद्धिजीवी, अपितु एक साधारण चींटी भी निरंतर परिश्रम करती रहती है। परिश्रम के द्वारा ही सफलता प्राप्त होती है। संसार में जितने महापुरुष हुए हैं, उनकी महानता का कारण उनका अथक परिश्रम और अनवरत संघर्ष था। किसी भी महान राष्ट्र का निर्माण स्वप्नों के ताने-बाने से नहीं, अपितु लहू और लौह से होता है। भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को उपदेश देते हुए कहा था–'मनुष्य का यह शरीर एक क्षेत्र (खेत) के समान है। बिना कर्म किए उससे कुछ भी फल प्राप्त नहीं हो सकता।' परिश्रम की महिमा का महापुरुषों ने भी अपने-अपने ढंग से गुणगान किया है और इसे ही ईश्वर की सच्ची उपासना कहा है। परिश्रम करने वाला व्यक्ति अपने अभावों से कभी नहीं घबराता। उसका तन-मन एकदम सात्त्विक और पवित्र होता है। संसार के बड़े-से-बड़े मुफ़्त के आकर्षण या सुख-सुविधाएँ श्रमशील व्यक्ति को अपनी ओर आकर्षित करने में असमर्थ होती हैं। ऐसे व्यक्ति स्वप्नों की दुनिया में नहीं, अपितु जगत् की कटु सच्चाइयों पर विश्वास करते हैं और पौरुष के बल पर सफलता प्राप्त करते हैं।

20. युवाओं के लिए मतदान का अधिकार

संकेत-बिंदु– • मतदान का अधिकार क्या और क्यों? • जागरूकता आवश्यक • सुझाव। *(CBSE 2015)*

भारत में लोकतांत्रिक शासन-व्यवस्था है। लोकतंत्र में जनता का शासन होता है। जनता अपने प्रतिनिधि चुनती है और वे चुने हुए प्रतिनिधि सरकार बनाकर शासन करते हैं। इस प्रकार लोकतंत्र में जनता पर जनता की ही सरकार होती है। भारतीय संविधान में 18 वर्ष की उम्र के युवाओं को मतदान का अधिकार दिया गया है। भारत का प्रत्येक वयस्क नागरिक, जो 18 वर्ष की आयु पूर्ण कर चुका हो और वह विक्षिप्त या दिवालिया न हो, जन प्रतिनिधि चुनने के लिए होने वाले चुनाव में मत देने का अधिकार रखता है, इसी को मतदान का अधिकार कहते हैं। यह अधिकार इसलिए दिया गया है, ताकि प्रत्येक नागरिक अपनी पसंद की सरकार बना सके। आज के मतदाता को बहुत जागरूक होना चाहिए। उसे अपने विवेक से बिना डर या लालच के अपने प्रतिनिधि का चुनाव करना चाहिए। उसे शिक्षित, समाजसेवी और योग्य व्यक्ति को ही चुनना चाहिए। उसके द्वारा चुने हुए प्रतिनिधियों के हाथों में ही देश की बागडोर होती है। यदि अयोग्य व्यक्ति का चुनाव हो जाता है तो वह देश को पतन के गर्त में ले जाता है। सामान्यतः एक बार चुने हुए जन प्रतिनिधियों को पाँच वर्ष तक शासन का अधिकार होता है; अतः मतदाता को बहुत सोच-समझकर अपने मत का प्रयोग करना चाहिए। युवाओं के लिए यही सुझाव है कि वे धर्म, जाति, संप्रदाय आदि से ऊपर उठकर निष्पक्ष रूप से योग्य उम्मीदवार को चुनने में अपने मतदान के अधिकार का उपयोग करें।

21. शिक्षक-शिक्षार्थी संबंध

संकेत-बिंदु– • प्राचीन भारत में गुरु-शिष्य संबंध • वर्तमान युग में आया अंतर • हमारा कर्तव्य। *(CBSE 2015, 20)*

भारत में गुरु-शिष्य परंपरा का चलन प्राचीनकाल से है। प्राचीनकाल में शिष्य शिक्षा प्राप्त करने के लिए गुरुकुल में जाता था। गुरु ही उसका माता-पिता, सखा और सर्वस्व होता था। वह अपने गुरु को भगवान से भी अधिक मानता था। गुरु की महत्ता इस मंत्र से स्पष्ट हो जाती है–''गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।'' गुरु भी अपने शिष्य को पुत्रवत् मानते थे और उसे सभी विद्याएँ प्रदान करने के साथ-साथ जीवन का आचार-व्यवहार भी सिखाते थे। उस समय शिक्षा व्यापार नहीं थी। उसकी प्राप्ति के आधार केवल गुरु के प्रति श्रद्धाभाव ही था। वर्तमान समय में गुरु-शिष्य का वह प्राचीन संबंध समाप्त हो गया है। आज गुरु शिक्षा का विक्रेता और शिष्य उसका खरीदार बन गया है। शिक्षा का कार्य व्यवसाय बन चुका है। शिक्षा का भारी-भरकम शुल्क लिया जाता है। आज न शिष्य के मन में गुरु के प्रति श्रद्धा है और न गुरु के मन में शिष्य के प्रति स्नेह। तुलसीदास जी ने आज के गुरु-शिष्य संबंध का अनुमान करके इस विषय में बहुत सटीक टिप्पणी की थी–''सिख-गुरु बधिर अंध का लेखा। एक न सुनहिं एक नहिं देखा।'' गुरु-शिष्य परंपरा हमारी भारतीय संस्कृति की एक अनमोल निधि है। हमारा कर्तव्य है कि हम इस पवित्र संबंध को पूर्ववत् बनाए रखें। इस पवित्र संबंध में ही हमारी शिक्षा की गुणवत्ता और उपादेयता निहित है।

22. कृत्रिम बुद्धिमत्ता (ए०आई०)

संकेत-बिंदु– • कृत्रिम बुद्धिमत्ता क्या है? • कृत्रिम बुद्धिमत्ता के प्रकार • अनुप्रयोग • लाभ-हानि • सकारात्मक उपयोग।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का अर्थ है–बनावटी तरीके से विकसित की गई बौद्धिक क्षमता। मशीनें हमारे कार्य को सरल बनाती हैं, लेकिन जब मशीनों में समस्याओं को सुलझाने और परिणाम देने की मनुष्य जैसी क्षमता विकसित कर दी जाती है तो यह कार्य 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता' कहलाता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता के जनक जॉन मैकार्थी के अनुसार यह बुद्धिमान मशीनों को बनाने का विज्ञान और अभियांत्रिकी है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता कंप्यूटर विज्ञान की उन्नत शाखाओं में से एक है। एयर कंडीशनर, कंप्यूटर, मोबाइल, बायोसेंसर, वीडियो गेम, रोबोट आदि उपकरण इसके उदाहरण हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता का विभाजन दो श्रेणियों में किया जाता है। प्रथम श्रेणी के अनुसार कृत्रिम बुद्धिमत्ता के तीन प्रकार हैं–संकुचित कृत्रिम बुद्धिमत्ता, सामान्य कृत्रिम बुद्धिमत्ता और उत्तम कृत्रिम बुद्धिमत्ता। द्वितीय श्रेणी के अनुसार कृत्रिम बुद्धिमत्ता के चार प्रकार हैं–पूर्णतः प्रतिक्रियात्मक, सीमित स्मृति, मस्तिष्क सिद्धांत और आत्मचेतन। कृत्रिम बुद्धिमत्ता के मुख्यतः पाँच अनुप्रयोग हैं–'ज्ञान' अर्थात् दुनिया के बारे में जानकारी प्रस्तुत करना, 'विचार' अर्थात् तार्किक कसौटी के माध्यम से समस्याओं को हल करना, 'संचार' अर्थात् मौखिक और लिखित भाषा को समझना, 'योजना' अर्थात् लक्ष्य निर्धारित करना और उसे प्राप्त करना, 'अनुभूति' अर्थात् ध्वनियों, चित्रों और अन्य संवेदी माध्यमों से अनुमान लगाना। कृत्रिम बुद्धिमत्ता के अनेक लाभ हैं; जैसे–कार्य को सरल बनाना, सीखने की प्रक्रिया को तीव्र करना, चिकित्सा, दैनिक गतिविधियों, अनुसंधान और विकास कार्यों में सहायक होना आदि। लाभ के साथ-साथ इसकी कुछ हानियाँ भी हैं; जैसे–मशीनों पर अत्यधिक निर्भरता, आलस्य में वृद्धि, कार्यक्षमता में कमी, अधिक खर्च, संवेदनहीनता, बेरोजगारी आदि। कृत्रिम बुद्धिमत्ता मानव जाति के विकास में अत्यंत सहायक है, लेकिन यह तभी कल्याणकारी है, जब इसका उचित और सकारात्मक उपयोग किया जाए।

23. वनों का महत्त्व/वन्य संपदा

संकेत-बिंदु– • वनों की उपयोगिता एवं लाभ • वनों का दोहन • वन-संरक्षण के उपाय। *(CBSE 2016)*

वन मनुष्य को प्रकृति की अनुपम भेंट हैं। ये धरती के जीवनरक्षक हैं। मनुष्य आदिकाल से ही अपने जीवन और जीविका के लिए वनों पर आश्रित रहा है। वनों के अभाव में मनुष्य जीवन का अस्तित्व संभव नहीं है। वन रहेंगे तो मनुष्य रहेगा। वनों या वृक्षों से ही मनुष्य को प्राणवायु ऑक्सीजन प्राप्त होती है। वन भूमिक्षरण तथा बाढ़ को रोकते हैं। वन वर्षा कराने में भी सहायक होते हैं, जो धरती को हरा-भरा रखती है। वन किसी देश की सुंदरता में वृद्धि करते हैं। इनकी हरीतिमा मनोहारी दृश्य उपस्थित करती है। वनों से अनेक प्रकार की औषधियाँ प्राप्त होती हैं। वनों की अधिकता या कमी किसी देश की अर्थव्यवस्था को बड़ी सीमा तक प्रभावित करती है। किसी देश की सुरक्षा व समृद्धि के लिए वनों का बहुत महत्त्व है। वन-पर्यावरण को संतुलित करने, देश के उद्योगों के लिए मूल्यवान् सामग्री प्रदान करने, लाखों लोगों को रोज़गार प्रदान करने का कार्य करते हैं। वन व्यापारिक, घरेलू और औद्योगिक वस्तुएँ तैयार करने के लिए आवश्यक लकड़ी और अन्य कच्चा माल प्रदान करते हैं। वन प्राकृतिक सुषमा के आगार तो हैं ही, ये वन्य जीवों को आवास और सुरक्षा भी प्रदान करते हैं। यही कारण है कि हमारी संस्कृति में वृक्षों को लगाने और उनकी पूजा करने पर विशेष बल दिया गया है। पुराणों के अनुसार एक वृक्ष लगाने का पुण्य उतना ही है, जितना दस गुणवान् पुत्रों का यश। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को कम-से-कम एक वृक्ष अवश्य लगाना चाहिए। सरकार को यह नियम बनाकर उसे सख्ती से लागू करना चाहिए कि जो भी व्यक्ति एक पेड़ काटेगा, वह उससे पहले दो पेड़ लगाएगा और कम-से-कम पाँच वर्ष तक उनकी देख-रेख भी करेगा।

24. हम सब भारतीय हैं

संकेत-बिंदु– • तात्पर्य • एकता के लाभ • भविष्य। *(CBSE 2017)*

हमारा देश भारत विभिन्न धर्म, जाति, भाषा और वेशभूषाओं वाला देश है। इतनी विविधताओं के रहते भी हम भारत के सवा सौ करोड़ देशवासी एकता के सूत्र में बँधे हैं। हम हिंदू-मुस्लिम-सिख-ईसाई बाद में हैं, पहले भारतीय हैं। व्यक्तिगत मत-मतांतरों से देश को ऊपर रखने की जो भावना हमारे भीतर विद्यमान है, उसी को भारतीयता के नाम से जाना जाता है। हम सबकी एक ही माता है–भारतमाता और हम सब उसके पुत्र हैं। इसलिए हम सब भारतीय हैं। स्वयं के भारतीयता के सूत्र में बँधे होने पर गर्व व्यक्त करते हुए प्रसिद्ध शायर इकबाल ने कहा था-

सारे जहाँ से अच्छा, हिंदोस्ताँ हमारा।
हम बुलबुले हैं इसकी, यह गुलिस्तां हमारा।।
मज़हब नहीं सिखाता, आपस में वैर रखना।
हिंदी हैं हम वतन है, हिंदोस्ताँ हमारा।।

भारतीयता के इस एकता के सूत्र में बँधे होने का यह लाभ हुआ है कि आज तक विश्व की कोई भी शक्ति हमारे अस्तित्व को मिटा नहीं सकी है। जिस किसी ने भी हमें मिटाने का प्रयास किया, वह स्वयं मिट गया। विश्व के अनेक देश हम भारतीयों में फूट डालकर हमें विभाजित करने के कुचक्र सदैव से रचते रहे हैं, मगर इसमें उन्हें तनिक भी सफलता नहीं मिली है और न ही भविष्य में मिलने वाली है। हम सब भारतीय मिलकर अपने देश को एक बार फिर से विश्वगुरु बनाने के लिए प्रयासरत हैं और हम इसमें एक-न-एक दिन सफल अवश्य होंगे–

हम होंगे कामयाब, हम होंगे कामयाब एक दिन
मन में है विश्वास, पूरा है विश्वास।

25. स्वच्छ भारत अभियान *अथवा* स्वच्छता आंदोलन

संकेत-बिंदु– • क्यों • स्वच्छ भारत की संकल्पना • स्वच्छ भारत अभियान की शुरूआत • हमारा उत्तरदायित्व • स्वच्छ भारत अभियान का स्वरूप • बदलाव। *(CBSE 2018)*

गंदगी में दारिद्रय (गरीबी) निवास करता है; क्योंकि गंदगी से नकारात्मक ऊर्जा पैदा होती है। नकारात्मक ऊर्जा व्यक्ति को आलसी और निकम्मा बनाती है। यही गरीबी का सबसे मुख्य कारण है। इसलिए व्यक्ति, समाज और देश को सुखी तथा संपन्न बनाने के लिए ज़रूरी है कि हमारा देश स्वच्छ रहे। इसीलिए स्वतंत्रता से पूर्व महात्मा गांधी ने स्वच्छ भारत का स्वप्न देखा था। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने गांधी जी की स्वच्छ भारत की संकल्पना को साकार करने के लिए 'स्वच्छ भारत अभियान' (स्वच्छता आंदोलन) का बिगुल फूँका है। स्वच्छ भारत अभियान की संकल्पना यह है कि देश के प्रत्येक शहरी और ग्रामीण परिवार में एक स्वच्छ शौचालय हो, जिन घर-परिवारों में स्थानाभाव के कारण शौचालय बनाया जाना संभव न हो, वहाँ पर सुलभ सार्वजनिक शौचालयों का निर्माण किया जाए। देश के प्राथमिक से लेकर उच्चशिक्षा तक के प्रत्येक विद्यालय में छात्र-छात्राओं के लिए स्वच्छ और पृथक्-पृथक् शौचालय हों। उनकी इस संकल्पना से जहाँ सिर पर मैला ढोने की अमानवीय प्रथा समाप्त होगी, वहीं देश की उन करोड़ों महिलाओं को सम्मानजनक जीवन जीने का अवसर प्राप्त होगा, जिनको खुले में शौच के लिए जाना पड़ता है। उन बालिकाओं के विद्यालय जाने का मार्ग प्रशस्त होगा, जो विद्यालयों में अलग शौचालय की व्यवस्था न होने के कारण विद्यालय नहीं जा पातीं। मोदी जी की स्वच्छ भारत अभियान की संकल्पना केवल शौचालयों के निर्माण तक ही सीमित नहीं है। उनका प्रयास है कि देश का प्रत्येक कोना स्वच्छ हो। इसके लिए देश के प्रत्येक नागरिक को यह संकल्प लेना होगा कि वह न स्वयं गंदगी फैलाएगा और न दूसरों को फैलाने देगा। यदि प्रत्येक नागरिक अपनी इस ज़िम्मेदारी को समझे तो देश स्वतः ही स्वच्छ हो जाएगा। अपने ड्रीम प्रोजेक्ट स्वच्छ भारत अभियान की शुरूआत मोदीजी ने महात्मा गांधीजी की जयंती पर 2 अक्टूबर, 2014 ई० को राजपथ से लोगों को स्वच्छता की शपथ दिलाकर की। निर्मल भारत अभियान भारत सरकार द्वारा चलाया जा रहा ग्रामीण क्षेत्र के लोगों के लिए माँग आधारित एवं जनकेंद्रित अभियान है, जिसमें लोगों की स्वच्छता संबंधी आदतों को बेहतर बनाना, स्वसुविधाओं की माँग उत्पन्न करना और स्वच्छता सुविधाओं को उपलब्ध कराना शामिल है, जिससे ग्रामीणों के जीवन स्तर को बेहतर बनाया जा सके। अभियान का उद्देश्य पाँच वर्षों में भारत को खुला शौच से मुक्त देश बनाना है। स्वच्छता आंदोलन के कारण अब देश में सब जगह बदलाव नज़र आने लगा है। देश के अनेक जिले खुले में शौच से मुक्त हो चुके हैं। प्रत्येक गाँव, नगर में जगह-जगह कूड़ेदान दिखने लगे हैं।

26. मन के हारे हार है, मन के जीते जीत

संकेत-बिंदु– • मन को बाँधना ही मन को जीतना है • निराशा अभिशाप • मन चंगा तो कठौती में गंगा • मन के सशक्त होने से व्यक्ति का सशक्त होना • दृष्टिकोण परिवर्तन • सकारात्मक सोच • मन की दृढ़ता ही सफलता का साधन। *(CBSE 2018)*

मानव का मन उसके जीवन का सूत्रधार और संचालक है। मनुष्य का मन अपने आपमें एक ब्रह्मांड है। जो कुछ बाहरी विश्व में घटित होता है, वही उसके मन के भीतर भी होता है। मन की शक्ति अपार है। मन बड़ा चंचल होता है। मन को बाँधना ही मन को जीतना है। इसे जीत लेने में ही विश्वविजय निहित है। निराशा व्यक्ति के लिए अभिशाप है और आशा तथा उत्साह वरदान। आप कितने भी असमर्थ हों, यदि मन में उमंग और उत्साह है तो सारी असमर्थता समर्थता में बदल जाएगी। राम, कृष्ण, ईसा, बुद्ध, नानक, कबीर सभी ने अपने मन को जीता और जग को जीत लिया। अर्थात् सारे संसार के प्रिय हो गए। मन की जीत के लिए मन का पवित्र होना आवश्यक है। यदि मन पवित्र है तो कोई भी जप-तप करने की आवश्यकता नहीं है, इसीलिए कहा गया है–मन चंगा तो कठौती में गंगा। दूसरी ओर जिनका मन हार जाता है, जिनके विचार

दृढ़ नहीं रह पाते, जो अपने संकल्प पर स्थिर नहीं होते, जो तनिक से दुख से दुखी और सुख से सुखी हो जाया करते हैं, वे संसार-सागर की लहरों में तिनके के समान विलीन हो जाते हैं। जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को अपने भाग्यवादी दृष्टिकोण में परिवर्तन करके यह सकारात्मक सोच स्वयं में उत्पन्न करनी होगी कि मन के सशक्त होने पर ही सारा शरीर सशक्त हो सकता है। मन कमज़ोर तो शरीर भी कमज़ोर और निष्क्रिय हो जाता है। मन हमारा मित्र और शत्रु दोनों है। मन के धनी व्यक्ति ही सागर से मोती निकाल लाते हैं, हिमशिखरों पर चढ़कर अपनी बहादुरी का झंडा गाड़ते हैं। मन के हार जाने पर साहस टूट जाता है और मनुष्य को विफलता का मुँह देखना पड़ता है; अतः यह सत्य है कि 'मन के हारे हार है, मन के जीते जीत'।

27. भारतीय किसान के कष्ट

संकेत-बिंदु– • अन्नदाता की कठिनाइयाँ • कठोर दिनचर्या • सुधार के उपाय।

(CBSE 2018)

भारत एक कृषिप्रधान देश है। इसकी 69 प्रतिशत जनसंख्या गाँवों में रहती है। गाँवों में कृषि का काम किसान ही करता है। किसान कठोर परिश्रम करके सारे देश के लिए अन्न उगाते हैं, मगर दुर्भाग्य की बात है कि भारतीय किसान को दिन-रात मेहनत करने के बाद भी दो वक्त का खाना नहीं मिलता, इसलिए उसे ज़मींदारों और साहूकारों की गुलामी करनी पड़ती है। वह सदैव अभावों और निर्धनता में अपना जीवन व्यतीत करता है। स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद किसानों की स्थिति में काफ़ी सुधार हुआ है। आज उनको ट्रैक्टर तथा अन्य मशीनें उपलब्ध हो गई हैं, जिनसे खेती के उत्पादन में भी काफ़ी वृद्धि हुई है लेकिन बिचौलियों के कारण उन्हें अपनी फसल का उचित मूल्य नहीं मिल पाता, जिस कारण उन्हें खेती में निरंतर घाटा हो रहा है। बिचौलियों और साहूकारों के इसी शोषण के कारण किसान आत्महत्या कर रहे हैं। अतः हम कह सकते हैं कि सरकार द्वारा सुविधाएँ मिलने के बावजूद अभी बहुत कुछ करना शेष है। सरकार की ओर से गाँव-गाँव तक बिजली, पानी तथा आधारभूत शिक्षा उपलब्ध कराने के लिए अनेक कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। सरकारी समितियों तथा बैंकों के माध्यम से उन्हें कम ब्याज पर ऋण उपलब्ध कराया जा रहा है। सरकार की ओर से उचित मूल्य पर उनकी फसल खरीदने की व्यवस्था की गई है। बड़े-बड़े किसान तो सरकारी सुविधाओं का लाभ उठा रहे हैं, किंतु छोटे किसानों की स्थिति में सुधार नहीं हो पाया। बाज़ार की जानकारी और खेती की उन्नत तकनीक के ज्ञान का अभाव इसका सबसे मुख्य कारण है। इसके लिए बाज़ार और तकनीक के प्रचार-प्रसार की महती आवश्यकता है; क्योंकि जब तक किसान की हालत नहीं सुधरती, तब तक देश की हालत भी नहीं सुधर सकेगी। इस ओर गंभीरतापूर्वक ध्यान देने की आवश्यकता है।

28. साइबर अपराध

संकेत-बिंदु– • साइबर अपराध क्या है? • साइबर अपराध के विभिन्न प्रकार • साइबर अपराध के प्रति जागरूकता • साइबर सुरक्षा • सुरक्षित रहने का उपाय।

साइबर अपराध से आशय उन अपराधों से है, जो इंटरनेट, कंप्यूटर और प्रौद्योगिकी से संबंधित होते हैं। सामान्यतः कोई भी ऐसा काम, जिससे कंप्यूटर प्रतिकूल रूप से प्रभावित होता है, साइबर अपराध की सीमा में आता है। साइबर अपराध के अनेक प्रकार हैं; जैसे–व्यक्तिगत जानकारी चुराना (हैंकिंग), फर्जी ई-मेल भेजकर ठगना (फिशिंग), वायरस फैलाना, नकली सॉफ्टवेयर बनाना, सोशल नेटवर्किंग पर अशोभनीय व्यवहार करना (साइबर बुलिंग), साइबर वसूली, नकली पहचान बनाकर धोखाधड़ी करना (स्पूफिंग), आभासी दुनिया में किसी व्यक्ति की निजता का अतिक्रमण करना (साइबर स्टाकिंग) साइबर वारफेयर, स्पैनिंग, पहचान या पासवर्ड चोरी आदि। साइबर अपराधों पर नियंत्रण रख पाना बहुत कठिन है। जागरूकता ही इन अपराधों से बचने का उपाय है। पासवर्ड जटिल होना चाहिए, जिसका अनुमान न लगाया जा सके। एंटीवायरस सॉफ्टवेयर का उपयोग करना चाहिए। अपने सिस्टम को अपडेट करते रहना चाहिए। सोशल मीडिया पर गोपनीयता को बनाए रखना चाहिए। सदैव सतर्क रहना चाहिए। अपने क्रेडिट कार्ड, आधार कार्ड आदि की जानकारी किसी को नहीं देनी चाहिए। साइबर सुरक्षा वह उपाय है, जिसके द्वारा डेटा तक साइबर अपराधियों की अवैध पहुँच को रोका जा सकता है। यह हमारे सिस्टम, नेटवर्क, उपकरणों आदि को नकली सॉफ्टवेयर के हमले से बचाती है। साइबर अपराध दिनोंदिन बढ़ते जा रहे हैं। साइबर सुरक्षा ही इन अपराधों से बचने का उपाय है। इसके लिए हमें हमेशा जागरूक रहना चाहिए, क्योंकि 'सावधानी उपचार से बेहतर है'।

29. फिट इंडिया अभियान

संकेत-बिंदु– • अभियान का शुभारंभ • अभियान के चार चरण • आवश्यकता • सफलता का सूत्र।

देश को विकास के शिखर पर ले जाने के लिए प्रयासरत प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अनेक अभियान प्रारंभ किए हैं। इनमें एक महत्त्वपूर्ण अभियान है–'फिट इंडिया अभियान'। इस अभियान का शुभारंभ प्रधानमंत्री जी ने 9 सितंबर, 2019 ई० को खेल दिवस के अवसर पर किया। चार वर्षों तक चलने वाले इस अभियान में प्रत्येक वर्ष अलग-अलग तरह की फिटनेस के प्रति जागरूकता उत्पन्न की जाएगी। पहले वर्ष (2019-20) में फिजिकल फिटनेस, दूसरे वर्ष (2020-21) में खान-पान की आदतों, तीसरे वर्ष (2021-22) में पर्यावरण के अनुकूल जीवन-शैली और दीर्घकालिक जीवन तथा चौथे वर्ष (2022-23) में स्वास्थ्य के अनुकूल सेवाओं और चीजों को अपनाने तथा रोगों को दूर करने के उपायों के प्रति नागरिकों को जागरूक किया जाएगा। इस कार्यक्रम की आवश्यकता इसलिए महसूस हुई, क्योंकि भारत के लोगों ने स्वास्थ्य को प्राथमिकता की दृष्टि से देखना बंद कर दिया है। देश के करोड़ों नागरिक, हृदयरोग, डायबिटीज, उच्च रक्तचाप और मोटापे के शिकार हैं। प्रधानमंत्री का विचार है कि यदि देश के नागरिक स्वस्थ होंगे तो देश प्रगति के पथ पर तेजी से आगे बढ़ेगा। उन्होंने सूत्र दिया है–''मैं फिट तो इंडिया फिट'' और ''बॉडी फिट तो माइंड फिट''। इस सूत्र को अपनाकर ही हम इस महान अभियान को सफल बना सकते हैं।

30. जैसी संगति बैठिए, तैसोई फल दीन

संकेत-बिंदु– • संगति का महत्त्व • सत्संगति से निर्मल चरित्र का निर्माण • ऐतिहासिक उदाहरण • कुसंगति का प्रभाव।

यह शाश्वत सत्य है कि संगति अपना असर अवश्य दिखाती है। सत्संगति यानी श्रेष्ठ पुरुषों की संगति से मनुष्य में अपने आप अच्छे गुणों का उदय और विकास होता है। उसके दुर्गुण नष्ट हो जाते हैं। जिस प्रकार पारस के स्पर्श से लोहा भी सोना बन जाता है, उसी प्रकार सत्संगति के प्रभाव से मनुष्य महानता के उच्च-आसन पर आसीन हो जाता है। उसका चरित्र निर्मल और पवित्र हो जाता है। सभी जानते हैं कि बुद्ध की संगति से अंगुलिमाल मानवता की राह पर आ गया। गुरु रामदास की संगति से ही शिवाजी के चरित्र का निर्माण हुआ। सत्संगति से मनुष्य में धैर्य, साहस, उदारता और सहिष्णुता का संचार होता है। सत्संगति कठिन परिस्थितियों में भी मनुष्य में आशा का संचार करती है। दूसरी ओर कुसंगति मनुष्य को पतन की ओर धकेलती है। कुसंगति ऐसा ज़हर है, जो श्रेष्ठ व्यक्ति को भी क्षुद्र बना देती है। काजल की कोठरी में जाने पर काला धब्बा तो लगेगा ही। कुसंगति से मनुष्य में दुराचार, स्वार्थ और दूसरी बुरी आदतें पैदा होती हैं। यह संगति का ही प्रभाव है कि स्वाति नक्षत्र की जो बूँद केले के पत्ते पर पड़ने से कपूर बनती है, वही साँप के मुख में पड़कर विष बन जाती है। इसीलिए कहा गया है–

कदली सीप भुजंग मुख, स्वाति एक गुन तीन।
जैसी संगति बैठिए, तैसोई फल दीन।।

31. ऊर्जा-संरक्षण

संकेत-बिंदु– • ऊर्जा-संरक्षण की आवश्यकता • आत्मनिर्भरता का उपाय • हमारी भूमिका • संरक्षण का उपाय।

किसी भी राष्ट्र के आर्थिक विकास के लिए यह परमावश्यक है कि उसके यहाँ ऊर्जा का अधिकाधिक उत्पादन किया जाए; क्योंकि ऊर्जा ही देश के विकास को गति प्रदान करती है। ऊर्जा उत्पादन से भी अधिक आवश्यक है–उपलब्ध ऊर्जा का समुचित सरंक्षण। उद्योगों को चलाने के लिए ऊर्जा दो प्रकार के प्राकृतिक संसाधनों से प्राप्त होती है–नवीकरणीय तथा परंपरागत। दोनों ही संसाधनों से ऊर्जा प्राप्त करने की प्रक्रिया अत्यंत लंबी तथा खर्चीली होती है। इसलिए ऊर्जा का हमें आवश्यकतानुसार ही प्रयोग करना चाहिए। आज जो देश आर्थिक विकास के शिखर पर हैं, उनका सर्वप्रमुख कारण ऊर्जा के क्षेत्र में उनकी आत्मनिर्भरता है। ऊर्जा की बचत करके ही हम लंबे समय तक अधिकाधिक कल-कारखाने चला सकते हैं, जिससे उत्पादन में उत्तरोत्तर वृद्धि हो सकेगी। औद्योगिक-उत्पादन की मात्रा पर ही किसी देश की प्रगति निर्भर करती है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि ऊर्जा की बचत का दायित्व हम सभी का है। यदि हम छोटी-छोटी सावधानियाँ बरतें तो ऊर्जा-संरक्षण का महान उद्देश्य पूरा किया जा सकता है। ऊर्जा-संरक्षण अथवा ऊर्जा की बचत के लिए अपनाए जाने वाले कुछ उपाय इस प्रकार हैं–बिजली का आवश्यकतानुसार प्रयोग, ऐसी तकनीक वाले उपकरणों का प्रयोग, जो कम ऊर्जा खपत करते हों, निजी वाहनों के स्थान पर सार्वजनिक वाहनों का अधिक-से-अधिक प्रयोग आदि। वस्तुतः ऊर्जा की बचत एवं संरक्षण में ही हमारा भविष्य उज्ज्वल, सुरक्षित एवं संरक्षित है।

32. आज का युग सूचना-प्रौद्योगिकी (IT) का युग

संकेत-बिंदु– • सूचना-प्रौद्योगिकी का युग • प्रौद्योगिकी के साधन • प्रौद्योगिकी का क्षेत्र • जीवन में महत्त्व।

आज सूचना-प्रौद्योगिकी अर्थात् 'Information Technology' का युग है; क्योंकि आधुनिक विकास सूचनाओं के आदान-प्रदान पर निर्भर है। आज संपूर्ण विश्व में सूचना और प्रौद्योगिकी की क्रांति चल रही है। पिछले दो दशकों में तो खासतौर पर इस क्षेत्र में युगांतकारी परिवर्तन हुए हैं। सूचना-प्रौद्योगिकी के कारण दूरसंचार उपग्रह और कंप्यूटर विज्ञान के क्षेत्र में अत्यधिक प्रगति हुई है। 'इंटरनेट' दूरसंचार और उपग्रह-प्रौद्योगिकी की मदद से संचालित लाखों कंप्यूटरों का ऐसा सूचना-तंत्र है, जिसमें पुस्तकालयों, रेडियो, टेलीविज़न, समाचार-पत्र, पत्रिकाओं के अलावा लगभग हर विषय से संबंधित विस्तृत जानकारी उपलब्ध है। सूचना-प्रौद्योगिकी के कारण ही अब हम पलभर में दुनिया के किसी भी कोने की खबर प्राप्त कर सकते हैं। निःसंदेह सूचना-क्रांति मानव सभ्यता की सबसे बड़ी और महत्त्वपूर्ण क्रांति है। इस सूचना के युग में सूचना ही शक्तिशाली है। यही कारण है कि यह क्रांति अपने मूलस्वभाव में सबसे अधिक चर्चित यांत्रिक क्रांति है; क्योंकि इसने विश्व के किसी भी तंत्र को नष्ट करने के बजाय सबको मज़बूती ही प्रदान की है। आज यह सूचना-प्रौद्योगिकी का ही कमाल है कि हम अपने सभी कार्य-व्यापार अपने स्थान पर बैठे ही संपादित कर लेते हैं। हमें चाहे खरीदारी करनी हो या अपना माल बेचना हो, पैसों का लेन-देन करना हो या वर-वधू की तलाश करनी हो, अपना भविष्य जानना हो या डॉक्टर की सलाह लेनी हो; कंप्यूटर का एक बटन दबाते ही हमारे ये सब काम घर बैठे हो जाते हैं। इसलिए आगे आने वाला युग केवल इसी पर टिका होगा।

33. मेक इन इंडिया

संकेत-बिंदु– • योजना का उद्देश्य • योजना का शुभारंभ • योजना की परिकल्पना • योजना का परिणाम।

एक समय था जब भारत 'सोने की चिड़िया' कहलाता था, परंतु विदेशी आक्रमणकारियों ने भारत को लूटकर उसके आर्थिक विकास को अवरुद्ध कर दिया। भारत को आर्थिक रूप से सुदृढ़कर उसे वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाना ही इस योजना का परमोद्देश्य है। इसकी पहल 25 सितंबर, सन् 2014 ई० को भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने की। भारत में राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर निवेश को बढ़ावा देने तथा अपने देश में उद्योगों की स्थापना करके रोज़गार के अवसरों में वृद्धि करने की दिशा में यह एक स्वर्णिम पहल है। इस योजना की संकल्पना का उद्देश्य भारत को एक विश्वस्तरीय व्यापारिक केंद्र के रूप में स्थापित करने का है। इस योजना के सफलतापूर्वक लागू होने से भारत में 100 स्मार्ट शहर बनाने और सभी लोगों के लिए घर बनाने में भी मदद मिलेगी। देशी-विदेशी निवेशकों को भारत में पूँजी निवेश करने के समुचित अवसर प्रदानकर देश की आर्थिक-वृद्धि को तेज़गति प्रदानकर रोज़गार के अधिकाधिक अवसर उपलब्ध कराना इस योजना का मुख्य लक्ष्य है। आज मेक इन इंडिया अभियान अनेक व्यापारिक प्रतिष्ठानों और उद्योगों की स्थापना हेतु विश्व के सभी प्रमुख ब्रांडों तथा उद्योगपतियों का ध्यान भारत की ओर खींचने में सफल रहा है। आने वाले समय में यह 1 करोड़ से ज्यादा रोज़गार के अवसर प्रदान करेगा। इससे वैश्विक परिदृश्य में भारत की छवि एक बाज़ार के स्थान पर एक उत्पादक राष्ट्र के रूप में उभरेगी। हम एक उपभोक्ता-राष्ट्र न कहलाकर एक 'उत्पादक-राष्ट्र' कहलाएँगे। इस योजना की सफलता के लिए आज आवश्यकता है देश के साहसिक व्यापारिक युवाओं के आगे आने की।

34. पढ़ें बेटियाँ, बढ़ें बेटियाँ
अथवा
बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ

संकेत-बिंदु– • योजना के उद्देश्य • 'बढ़ें बेटियाँ' से आशय • बेटियों को बढ़ाने के उपाय। ***(CBSE 2023)***

कहते हैं कि सुघड़, सुशील और सुशिक्षित स्त्री दो कुलों का उद्धार करती है। विवाहपर्यंत वह अपने मातृकुल को सुधारती है और विवाहोपरांत अपने पतिकुल को। उसके इस महत्त्व को प्रत्येक देश-काल में स्वीकार किया जाता रहा है, किंतु यह विडंबना ही है कि उसके अस्तित्व और शिक्षा पर सदैव से संकट छाया रहा है। विगत कुछ दशकों में यह संकट और अधिक गहरा हुआ है, जिसका परिणाम यह हुआ कि देश में बालक-बालिका लिंगानुपात सदैव ही गड़बड़ाया रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने इस तथ्य के मर्म को जाना-समझा और सरकारी स्तर पर एक योजना चलाने की रूपरेखा तैयार की। इसके लिए उन्होंने 22 जनवरी, 2015 ई० को हरियाणा राज्य से 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' योजना की शुरुआत की। 'बेटी बचाओ' योजना के रूप में इसका सबसे बड़ा उद्देश्य बालिकाओं के लिंगानुपात को बालकों के बराबर लाना है। इसलिए बेटियों को बचाकर उनकी संख्या में वृद्धि करने के साथ-साथ यह भी आवश्यक है कि वे निरंतर आगे बढ़ें। उनकी प्रगति के मार्ग की प्रत्येक बाधा को दूर करके उन्हें उन्नति के उच्चतम शिखर तक पहुँचाने का मार्ग प्रशस्त करें। 'बढ़ें बेटियाँ' नारे का उद्देश्य और आशय भी यही है। बेटियाँ पढ़-लिखकर आत्मनिर्भर बनें और देश के विकास में अपना योगदान दें, इसके लिए सबसे आवश्यक यह है कि हम समाज में ऐसे वातावरण का निर्माण करें, जिससे घर से बाहर निकलने वाली प्रत्येक बेटी और उसके माता-पिता का मन उनकी सुरक्षा को लेकर सशंकित न हो। आज बेटियाँ घर से बाहर जाकर सुरक्षित रहें और शाम को बिना किसी भय अथवा तनाव के घर वापस लौटें, यही सबसे बड़ी आवश्यकता है। इसलिए हमें बेटियों को आगे बढ़ाने के लिए उन्हें सामाजिक सुरक्षा की गारंटी देनी होगी। बेटियाँ पढ़ें और आगे बढ़ें, इसका दायित्व केवल सरकार पर नहीं है। समाज के प्रत्येक व्यक्ति पर इस बात का दायित्व है कि वह अपने स्तर पर वह हरसंभव प्रयास करे, जिससे बेटियों को पढ़ने और आगे बढ़ने का प्रोत्साहन मिले। हम यह सुनिश्चित करें कि जब हम घर से बाहर हों तो किसी भी बेटी की सुरक्षा पर हमारे रहते कोई आँच नहीं आनी चाहिए।

35. देश की भलाई : गंगा की सफ़ाई

संकेत-बिंदु– • गंगा की उपयोगिता • गंगा नदी के प्रदूषण के कारण • गंगा की शुद्धि के उपाय।

गंगा का जल वर्षों तक बोतलों, डिब्बों में बंद रहने के बाद भी खराब नहीं होता है, लेकिन भारत की मातृवत् पूज्या गंगा आज पर्याप्त सीमा तक प्रदूषित हो

चुकी है। अनेक स्थानों पर तो इसका जल अब स्नान करने योग्य भी नहीं रह गया है। इसलिए आज हम सबका कर्तव्य है कि गंगा नदी की अविरलता और पवित्रता बनाए रखें; क्योंकि गंगा की सफ़ाई और उसके अस्तित्व में ही देश की भलाई निहित है। पतित पावनी गंगा नदी के प्रदूषित होने के मुख्य कारणों में उसकी धारा के प्रवाह को अवरुद्ध करना है। टिहरी बाँध बनाकर गंगा के अविरल जल-प्रवाह को अत्यंत धीमा कर दिया गया है। गरमियों में तो उसमें जल का प्रवाह इतना कम हो जाता है कि उसे देखकर लगता है कि यह कोई नदी नहीं, वरन् नाला है। प्राचीनकाल में इसका तीव्र-प्रवाह इसकी अशुद्धियों को अपने साथ बहा ले जाता था और इसकी पवित्रता बनी रहती थी। अत्यधिक प्रदूषण के कारण गंगा नदी के जल से ऑक्सीजन की मात्रा लगातार कम होती जा रही है। गंगा के किनारे स्थित नगरों में आबादी का दबाव पर्याप्त सीमा तक बढ़ता जा रहा है। वहाँ का मल-मूत्र और गंदा पानी नालों के माध्यम से गंगा में डाल दिया गया है; फलतः कभी खराब न होने वाला गंगा-जल आज बहुत बुरी तरह से प्रदूषित हो गया है। औद्योगिकीकरण की बढ़ती प्रवृत्ति भी गंगा नदी को प्रदूषित करने का बड़ा कारण बनी है। कारखानों से निकलने वाला रसायन प्रदूषित पानी, कचरा आदि गंदे नालों तथा अन्य माध्यमों से होता हुआ गंगा में मिल जाता है, जिससे गंगा-जल अत्यधिक विषैला हो गया है। सदियों से आध्यात्मिक एवं धार्मिक मान्यताओं से अनुप्राणित होकर गंगा की निर्मलधारा में मृतकों की अस्थियाँ, अवशिष्ट राख तथा अनेक लावारिस शव बहा दिए जाते हैं। बड़ी मात्रा में किए जाने वाले मूर्ति-विसर्जन एवं पूजा-सामग्री के विसर्जन ने भी गंगा के जल को अत्यधिक प्रदूषित किया है। इन समस्याओं से निपटने और गंगा को प्रदूषण से बचाने के लिए अनेक महत्त्वपूर्ण उपाय अपनाए जा सकते हैं; जैसे–जल-प्रवाह का अविरल संतुलन बनाए रखना चाहिए, जिससे गंगा में मिलने वाली गंदगी एक स्थान पर रुककर उसके जल को प्रदूषित न करे। उद्योगों द्वारा उत्सर्जित अपशिष्ट पदार्थों के गंगा में गिराए जाने पर रोक लगनी चाहिए। गंगा-संरक्षण की आवश्यकता को समझते हुए आमराय बनाकर इस योजना को एक परिणाम तक पहुँचाने के लिए विभिन्न मंत्रालयों द्वारा एक साथ मिलकर इस उद्देश्य को पूरा करने का कार्य किया जा रहा है। आज केंद्र सरकार गंगा की सफ़ाई के प्रति सजग, सक्रिय और दृढ़-प्रतिज्ञ है। हमें भी अपने तन-मन-धन द्वारा इस अमूल्य राष्ट्रीय संपदा के संरक्षण के लिए आगे आना चाहिए। अपने सांस्कृतिक अस्तित्व और देश की भलाई के लिए हमें गंगा को स्वच्छ बनाना ही होगा।

36. नैतिक शिक्षा की आवश्यकता

संकेत-बिंदु– • मानवीय मूल्यों का सम्मान आवश्यक • वर्तमान शिक्षा-प्रणाली में नैतिकता का अभाव • चरित्र-निर्माण के लिए आवश्यक • नैतिक शिक्षा का परिणाम।

नैतिकता का अर्थ है–'मानवीय मूल्यों का सम्मान'। जब तक मानवीय मूल्यों की अवहेलना की जाती रहेगी, तब तक एक स्वस्थ समाज का गठन संभव नहीं है; अतः विद्यालयों में शिक्षा के साथ-साथ नैतिक शिक्षा भी छात्रों को दी जानी चाहिए। नैतिक शिक्षा के बिना व्यक्ति का सर्वांगीण विकास संभव नहीं है। वास्तव में हमारी संपूर्ण शैक्षणिक व्यवस्था नैतिक मूल्यों पर ही आधारित होनी चाहिए, किंतु हमारी वर्तमान शिक्षा-प्रणाली में सबसे बड़ी कमी यही है कि इसमें नैतिकता का अभाव है। व्यक्ति चरित्र तथा राष्ट्रीय चरित्र-निर्माण करने के लिए नैतिक शिक्षा प्राथमिक स्तर से ही अनिवार्य होनी चाहिए। विद्यालयों में नैतिक शिक्षा का उद्देश्य अन्य पाठ्यक्रमों के समान छात्रों को विषय का केवल पुस्तकीय ज्ञान प्राप्त कराने या उपदेश देने मात्र से पूर्ण नहीं हो सकता। यह शिक्षा तभी प्रभावशाली होगी, जब यह शिक्षा 'शिक्षक' के चरित्र में प्रत्यक्ष रूप से चरितार्थ होती दिखाई देगी। जब शिक्षक अपने जीवन में नैतिक गुणों को धारण करेंगे तो उसका छात्रों पर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है। आज के दौर में जब हमारे परंपरागत मानवीय जीवन-मूल्यों का ह्रास हो रहा है तथा उनके स्थान पर भौतिकवादी मूल्यों की स्थापना हो रही है, तब केवल नैतिक शिक्षा ही विद्यार्थियों को सन्मार्ग पर चलने तथा अच्छे-बुरे को पहचानने का विवेक दे सकती है। नैतिकता से विमुख होकर कोई सभ्यता स्थायी नहीं रह सकती। उसके स्थायित्व के लिए नैतिकता अनिवार्य शर्त है।

37. पृथ्वी दिवस (अर्थ डे)

संकेत-बिंदु– • ब्रह्मांड में पृथ्वी ही जीवन के लिए उपयुक्त • पृथ्वी पर प्राकृतिक असंतुलन • पृथ्वी डे की संकल्पना • पृथ्वी दिवस मनाने का उद्देश्य।

इस संपूर्ण ब्रह्मांड में शायद पृथ्वी ही वह ग्रह है, जहाँ जीवन है। किसी भी स्थान पर जीवन होने के लिए यह आवश्यक है कि वहाँ पर जीवन के अनिवार्य तत्त्व-स्वच्छ प्राणवायु, जल और भरण-पोषण के लिए पर्याप्त खाद्य सामग्री उपलब्ध हो। पृथ्वी पर ये तीनों ही चीज़ें सर्वत्र सरलता से उपलब्ध हैं। इसलिए इसके प्रत्येक भाग में जीवन किसी-न-किसी रूप में उपस्थित है। मगर मनुष्य ने अपनी स्वार्थी प्रवृत्ति के कारण इन संसाधनों का अंधाधुंध दोहन करने के साथ-साथ इनका दुरुपयोग करके पृथ्वी पर न केवल इनके संतुलन को बिगाड़ दिया है, बल्कि इन्हें दूषित करके अपने अस्तित्व के लिए भी अनेक चुनौतियाँ उत्पन्न कर दी हैं। पृथ्वी पर जीवन सुचारु रूप से चलता रहे, इसके लिए यह आवश्यक है कि सभी लोग मिलकर जल, वायु, वनस्पति आदि प्राकृतिक-संसाधनों का सीमित मात्रा में उपयोग करें। इनको दूषित होने से बचाएँ और सदैव के लिए पृथ्वी पर इनकी उपलब्धता को सुनिश्चित करने के प्रयास करते रहें। लोगों को इसी बात के लिए प्रेरित करने हेतु अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पृथ्वी दिवस (अर्थ डे) की संकल्पना प्रस्तुत की गई है। यह सबसे पहले 22 अप्रैल, सन् 1970 ई० को पूरे अमेरिका में मनाया गया। फिर पूरे विश्व में 22 अप्रैल को 'अर्थ डे' के रूप में मनाया जाने लगा। पहले संपूर्ण विश्व में दो दिन 21 मार्च तथा 22 अप्रैल को पृथ्वी दिवस मनाया जाता था, परंतु सन् 1970 ई० के बाद 22 अप्रैल को पृथ्वी दिवस मनाने की औपचारिक घोषणा की गई। अब इसे 192 से अधिक देशों में प्रतिवर्ष मनाया जाता है। कहा जाता है कि पृथ्वी दिवस की धारणा को अमेरिकी सीनेटर जेराल्ड नेल्सन ने प्रतिपादित किया था। कई देश पृथ्वी दिवस को पृथ्वी सप्ताह के रूप में पूरे सप्ताह के लिए मनाते हैं। ऐसे देशों में पृथ्वी सप्ताह प्रायः 16 अप्रैल से प्रारंभ होकर 22 अप्रैल को पृथ्वी दिवस पर संपन्न होता है। पृथ्वी दिवस की संकल्पना में एक ऐसी पृथ्वी की कल्पना निहित है, जो प्रदूषण, रोग, युद्ध, भुखमरी और गरीबी-मुक्त हो, जहाँ चारों ओर हरियाली तथा खुशहाली हो।

38. वृक्षारोपण का महत्त्व

संकेत-बिंदु – • वृक्षारोपण का अर्थ • वृक्षारोपण क्यों? • हमारा दायित्व।

(CBSE 2019)

वृक्षारोपण का अर्थ है–छायादार और फलदार वृक्षों के पौधे लगाना या उगाना। वृक्षारोपण का अत्यधिक महत्त्व है। वृक्ष प्रकृति की अमूल्य संपदा हैं। वृक्षारोपण का महत्त्व इस बात से स्पष्ट हो जाता है कि हमारे शास्त्रों में एक वृक्ष उगाना एक पुत्र उत्पन्न करने के समान माना गया है। वृक्षारोपण इसलिए आवश्यक है, क्योंकि ये सभी प्रकार के प्रदूषणों को समाप्त करके पर्यावरण को शुद्ध करते हैं। वृक्ष कार्बन डाइऑक्साइड को जीवनदायिनी ऑक्सीजन में परिवर्तित कर देते हैं। इस प्रकार ये सभी प्राणियों के लिए जीवनदायी हैं। वृक्ष, बाढ़, तूफ़ान, आँधी आदि प्राकृतिक आपदाओं को भी नियंत्रित करते हैं। ये वर्षा कराने और पर्यावरण संतुलन में भी सहायक हैं। इनसे हमें फल, औषधि, लकड़ी आदि जीवनोपयोगी वस्तुएँ प्राप्त होती हैं। हमारा दायित्व है कि वृक्षों के महत्त्व को समझते हुए हम उनकी कटाई न करें, बल्कि अधिक-से-अधिक वृक्ष लगाएँ और उनका पोषण तथा रक्षण करें।

39. इंटरनेट की दुनिया

संकेत-बिंदु– • इंटरनेट का तात्पर्य • सूचना का मुख्य साधन • लाभ तथा हानि। ***(CBSE 2019)***

इंटरनेट कंप्यूटरों के विश्वव्यापी जाल को कहते हैं। सभी कंप्यूटरों की सारी जानकारी को जोड़ने पर इंटरनेट बनता है। अतः इंटरनेट का आशय है–विश्व-भर की सारी जानकारी का एक जगह इकट्ठा होना। यह सचमुच बहुत बड़ी उपलब्धि है। आप घर बैठे पूरे विश्व का हाल जान सकते हैं, सभी अखबार पढ़ सकते हैं, सभी फिल्में देख सकते हैं। चाहें तो यातायात के लिए टिकटें, होटल की बुकिंग, अपने बिजली-फोन के बिल तथा ज़रूरी सामान बाज़ार से खरीद सकते हैं। इसकी सुविधाएँ अनंत हैं। इंटरनेट संपर्क का साधन तो है ही, मनोरंजन का भी साधन है। संसार-भर के गीत, सीरियल, चलचित्र इस पर उपलब्ध हैं। जहाँ आप विश्व-भर की चीज़ें देख सकते हैं, वहीं अपनी प्रतिभा और माल दूसरों को दिखा भी सकते हैं। इस प्रकार आप घर बैठे-बैठे संसार भर में प्रसिद्ध हो सकते हैं। आपका संदेश पलक झपकते ही ट्विटर या फेसबुक जैसी सोशल-साइट्स के जरिए दूर-दूर तक फैल सकता है। हर वैज्ञानिक उपकरण के समान इंटरनेट की हानियाँ भी हैं। इसके प्रयोग ने सामाजिक मनुष्य को बिलकुल अपने कमरे में कैद कर दिया है। उसका बाहरी संपर्क भी वैचारिक और काल्पनिक रह गया है। इंटरनेट के माध्यम से ढेर सारी अश्लील और आपत्तिजनक सामग्री आपके घर तक आ जाती है। यह एक प्रकार से सांस्कृतिक आक्रमण है, जिससे बचना बहुत कठिन हो गया है। हमारा कर्तव्य है कि हम इंटरनेट का प्रयोग विवेक से करें।

40. आधुनिक जीवन

संकेत-बिंदु– • आवश्यकताओं में वृद्धि • अशांति • क्या करें?

(CBSE 2019)

आज उपभोक्तावाद का युग है। उपभोक्तावाद ने मनुष्य की जीवनशैली को पूर्णरूप से बदल दिया है। मनुष्य का उद्देश्य केवल अधिक-से-अधिक धन कमाना और सुख साधन जुटाना है। पहले मानव की केवल तीन मूलभूत आवश्यकताएँ थीं–रोटी, कपड़ा और मकान। लेकिन आज उसकी आवश्यकताएँ अनंत हो गई हैं। उन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए वह अधिकाधिक धन कमाने के लिए सुबह से शाम तक दौड़ता रहता है। धन कमाने की इस प्रतिस्पर्धा में हर कोई एक-दूसरे से आगे निकल जाना चाहता है। धनार्जन की इस तृष्णा ने मनुष्य के जीवन की शांति को समाप्त कर दिया है। आज मनुष्य न चैन से खाता है और न सोता है। उसके पास परिवार और समाज तो क्या, अपने लिए भी समय नहीं है। जीवन का रस और मधुर भावनाएँ लुप्त हो गई हैं। आधुनिक मानव मशीनी मानव बन गया है। वह तनाव और अवसाद से ग्रसित होता जा रहा है। इसका दुष्परिणाम दिनोंदिन बढ़ रही आत्महत्या की घटनाओं के रूप में सामने आ रहा है। जीवन की इस अशांति से बचने के लिए हमें अपनी इच्छाओं को सीमित करना चाहिए, अपनी संस्कृति और जीवन-मूल्यों को अपनाना चाहिए। 'साईं इतना दीजिए जामे कुटुम समाय। मैं भी भूखा न रहूँ साधु न भूखा जाय।।' के सिद्धांत को अपनाकर ही हम इस अशांति से छुटकारा पा सकते हैं।

41. सत्यमेव जयते

संकेत-बिंदु– • भाव • झूठ के पाँव नहीं होते • सत्य ही परम् धर्म।

(CBSE 2020)

'सत्यमेव जयते' का अर्थ है–सत्य की ही विजय होती है। यह हमारे देश का आदर्श वाक्य है। यह एक सत्य सिद्ध कथन है। असत्य चाहे कितना भी सबल हो, लेकिन वह सत्य को पराजित नहीं कर सकता। सत्य के बल से श्रीराम ने बलवान रावण को परास्त किया तथा पांडवों ने कौरवों को पराजित किया। गांधी जी ने सत्य-अहिंसा के द्वारा ही शक्तिशाली अंग्रेजों को भारत से भगा दिया। असत्य के पाँव नहीं होते अर्थात् झूठ का कोई आधार नहीं होता। वह सत्य के सामने कभी नहीं टिक सकता। संसार में सत्य ही धारण करने योग्य है; अतः सत्य सबसे बड़ा धर्म है। सत्यवादी में सभी सद्गुण स्वयं ही आ जाते हैं। मनुष्य के लिए सत्य से बढ़कर कल्याणकारी और कुछ भी नहीं है। इसलिए सत्य का पालन प्राण देकर भी करना चाहिए।

42. लड़का-लड़की एक समान

संकेत-बिंदु– • ईश्वर की देन • भेदभाव के कारण • दृष्टिकोण कैसे बदले?

(CBSE 2020-23)

लड़का या लड़की होना अपने वश में नहीं है। यह ईश्वर की देन है। ईश्वर की दृष्टि में लड़का-लड़की दोनों एक समान हैं। हमारा समाज लड़के और लड़की में भेदभाव करता है। वह लड़के के जन्म पर उत्सव मनाता है और लड़की के जन्म पर मातम मनाता है। इस भेदभाव के कई कारण हैं। पहला कारण यह है कि हमारा समाज लड़के को वंश वृद्धि का कारण मानता है और लड़की को पराया धन समझता है। दूसरा कारण यह है कि लोग लड़के को अपने बुढ़ापे का सहारा समझते हैं। तीसरा महत्त्वपूर्ण कारण है दहेज प्रथा। लड़की के विवाह में माता-पिता को बहुत सारा दहेज देना पड़ता है, जबकि लड़के के विवाह में ऐसा नहीं करना पड़ता। पुत्र की महिमा का गान करने वाले हमारे शास्त्र भी इसका एक कारण है। आज यह दृष्टिकोण बदलना चाहिए। वर्तमान समय में लड़कियाँ किसी भी क्षेत्र में लड़कों से पीछे नहीं हैं। वे राजनीति, चिकित्सा, विज्ञान, प्रशासन, सेना आदि सभी क्षेत्रों में अपनी क्षमता और योग्यता का प्रदर्शन कर रही हैं। उनके कारण माता-पिता का नाम रोशन हो रहा है। अतः आज हमारे समाज में यह धारणा दृढ़ हो रही है कि 'लड़का-लड़की एक समान है।' यही सत्य है, क्योंकि–'दोनों ईश्वर की संतान, लड़का-लड़की एक समान।'

43. मित्रता

संकेत-बिंदु – • आवश्यकता • कौन हो सकता है मित्र? • लाभ।

(CBSE SQP 2021)

मनुष्य स्वयं में अधूरा है। उसे अपने सुख-दुख बाँटने के लिए तथा अपने मन की बात कहने के लिए भागीदार की आवश्यकता पड़ती है। सच्चा मित्र ही इस कार्य को कर सकता है। पंचतंत्र में कहा गया है–"जो व्यक्ति न्यायालय, श्मशान और विपत्ति के समय साथ देता है उसको सच्चा मित्र समझना चाहिए।" मित्र का चुनाव बाहरी चमक-दमक, चटक-मटक या वाक्पटुता देखकर नहीं करना चाहिए। मित्रता समानता के आधार पर होनी चाहिए दोनों के आर्थिक स्तर में अधिक अंतर नहीं होना चाहिए। मित्र अपने से बहुत अधिक शक्तिशाली भी नहीं होना चाहिए। वह सच्चरित्र, परदुखकातर तथा विनम्र होना चाहिए। विश्वासपात्र मित्र को पा लेना बहुत बड़ी उपलब्धि है। सच्चा मित्र जीवन की अनुपम निधि है। वह हमें संमार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है, दोषों से हमारी रक्षा करता है, निराश होने पर उत्साह देता है, महान कार्यों में सहायता देता है। मित्रता कवच के समान हमारी रक्षा करती है। सच्चा मित्र जीवन में सफलता की कुंजी है। मित्रता वास्तव में एक नई शक्ति की योजना है। मित्र के सुख और सौभाग्य की चिंता करने वाला सच्चा मित्र बड़े भाग्य से मिलता है। किसी ने ठीक ही कहा है–

'सच्चा प्रेम दुर्लभ है, सच्ची मित्रता उससे भी दुर्लभ।'

44. देश पर पड़ता विदेशी प्रभाव

संकेत-बिंदु – • हमारा देश और संस्कृति • विदेशी प्रभाव • परिणाम और सुझाव। ***(CBSE SQP 2021)***

हमारा देश संसार का प्राचीनतम देश है। आर्यावर्त, ब्रह्मावर्त, जम्बूद्वीप, भारतवर्ष, हिंदुस्तान, इंडिया आदि इसके अनेक नाम हैं। प्राचीनकाल में वर्तमान पाकिस्तान, अफगानिस्तान, नेपाल, भूटान, बांग्लादेश सब इसी के अंग थे। अपने ज्ञान-विज्ञान और समृद्धि के कारण यह संसार में 'जगद्गुरु' और 'सोने की चिड़िया' के नाम से प्रसिद्ध था। 'अनेकता में

एकता' की विशेषता वाली इसकी संस्कृति नैतिक मूल्यों का आगार है। यहाँ श्रीराम और श्रवण कुमार जैसे मातृ-पितृभक्त, भरत जैसे भ्रातृभक्त, सीता-सावित्री जैसे पतिव्रता, हरिश्चंद्र जैसे सत्यवादी, कर्ण-शिवि जैसे दानी, महावीर-गौतम जैसे परोपकारी हुए हैं। 'अतिथि देवो भव' और 'वसुधैव कुटुंबकम्' हमारी संस्कृति का आदर्श है। यहाँ नदियों और वृक्षों को भी पूजा जाता है। लेकिन आज विदेशी प्रभाव के कारण हम अपनी संस्कृति को भूलते जा रहे हैं। उपभोक्तावादी विदेशी संस्कृति को हमने अपना लिया है और नैतिक मूल्यों को तिलांजलि दे दी है। हम अपनी सभी परंपराओं को भूल गए हैं। मर्यादाओं को तोड़ दिया है और पैसा कमाने की अंधी दौड़ में शामिल हो गए हैं। हमने स्वदेशी खान-पान, वेशभूषा, शिष्टाचार आदि को छोड़कर विदेशी खान-पान, वेशभूषा और आचार-व्यवहार अपना लिया है। अपनी संस्कृति से दूर होने के कारण हमारे जीवन की सुख-शांति समाप्त हो गई है और हम तनावग्रस्त जीवन जी रहे हैं। ईर्ष्या-द्वेष, स्वार्थ और भ्रष्टाचार के कारण हमारे समाज की दुर्गति हो रही है। हमें विदेशी प्रभाव से मुक्त होना होगा और मैथिलीशरण गुप्त जी की इन पंक्तियों पर ध्यान देना होगा–

हम कौन थे क्या हो गए और क्या होंगे अभी।
आओ विचारें आज मिलकर ये समस्याएँ सभी।।

45. जब हम चार रनों से पिछड़ रहे थे

संकेत-बिंदु–• खिलाड़ियों की मनोदशा • दर्शकों की मनोदशा • प्रयास और परिणाम। ***(CBSE SQP 2021)***

खेल के किसी मैच के अंतिम क्षण बहुत उत्तेजनापूर्ण होते हैं। यह उत्तेजना उस समय चरम पर पहुँच जाती है, जब हार-जीत का अंतर बहुत कम रह जाता है। अंतर विद्‌यालय क्रिकेट प्रतियोगिता के फाइनल में हमारी टीम का मुकाबला डी०ए०वी० की टीम से था। प्रतिद्‌वंद्वी टीम ने हमारी टीम के सामने 200 रनों का लक्ष्य रखा था। हमारे खिलाड़ी बहुत अच्छा खेले। अंतिम ओवर तक पहुँचते-पहुँचते हमारी टीम चार रन से पिछड़ रही थी। पूरा वातावरण उत्तेजनापूर्ण हो गया था। दोनों टीमों के खिलाड़ियों के लिए 'करो या मरो' की स्थिति थी। स्टेडियम में चारों ओर शांति छा गई थी। दर्शकों की साँसे मानो थम-सी गई थीं। मैच का परिणाम किसी भी टीम के पक्ष में जा सकता था। डी०ए०वी० टीम के कैप्टन ने फील्डिंग को पूरी तरह कस दिया और अपने सबसे अच्छे तेज गेंदबाज़ को गेंदबाजी पर लगाया। हमारी टीम के दोनों बल्लेबाजों में एक खिलाड़ी गेंदबाज था। उस पर अधिक भरोसा नहीं था। दूसरा खिलाड़ी हमारी टीम का कैप्टन था, जो बहुत अच्छा बल्लेबाज़ था। दोनों खिलाड़ियों ने परस्पर कुछ सलाह की और अपने-अपने स्थान पर चले गए। ओवर की पहली गेंद हमारी टीम के कमजोर बल्लेबाज को खेलनी थी। उसने पहली गेंद पर एक रन लिया और दूसरे छोर पर पहुँच गया। अब सामने हमारी टीम का कैप्टन था। विरोधी टीम का गेंदबाज इतना सधा हुआ खिलाड़ी था कि उसने अगली चार गेंदों पर कोई रन नहीं दिया। अब एक गेंद और तीन रन की स्थिति थी। खिलाड़ियों और दर्शकों की धड़कनें बढ़ गई थीं। गेंदबाज ने अंतिम गेंद फेंकी और हमारे खिलाड़ी ने उस पर जोरदार छक्का जड़कर मैच जीत लिया। हम सब मैदान में दौड़ पड़े और खिलाड़ियों को जीत की बधाई दी।

46. जानलेवा प्लास्टिक

संकेत-बिंदु–• सस्ता और सुलभता के कारण लोकप्रिय • दूषित रसायनों की खान • प्रतिबंध की आवश्यकता। ***(CBSE 2022, Term-2)***

प्लास्टिक विज्ञान द्‌वारा निर्मित एक कृत्रिम पदार्थ है। इसका निर्माण पेट्रोकेमिकल से किया जाता है। यह तापरोधक और विद्‌युत का कुचालक होता है। इसे सरलतापूर्वक कोई भी आकार दिया जा सकता है। यह सरलता से पिघलने योग्य पदार्थ है। इसे रँगने में आसानी है; इसलिए इसे बहुत आकर्षक बनाया जा सकता है। यह एक प्रकार का बहुरूपिया पदार्थ है। इसे पत्थर-सा कठोर, स्टील-सा मजबूत और रबड़-सा लचकदार बनाया जा सकता है। अपने अनेक गुणों के कारण ही आज यह विज्ञान द्‌वारा निर्मित सबसे उपयोगी पदार्थ है। इसके दो गुण बहुत ही महत्त्वपूर्ण हैं–एक तो यह सर्वसुलभ है और दूसरा सस्ता है। प्लास्टिक उपयोगी तो है, लेकिन यह दूषित रसायनों की खान है। इसके बहुत नुकसान हैं। आज यह पर्यावरण के लिए सबसे ख़तरनाक वस्तु है। इसे नष्ट करने का कोई उपाय नहीं है। यह पानी में गलता नहीं है। यदि इसे जलाया जाए तो भी यह बहुत हानि पहुँचाता है। इसका धुआँ स्वास्थ्य के लिए बहुत हानिकारक होता है। प्लास्टिक की थैलियाँ नालियों और सीवरों को रोककर जलभराव और प्रदूषण की समस्या को बढ़ाती है। इसके प्रयोग पर प्रतिबंध की आवश्यकता है। इसका विकल्प ढूँढ़ना आवश्यक है। कपड़ा, लकड़ी, मिट्टी, कागज और जूट इसके अच्छे विकल्प हैं प्लास्टिक की जगह इनका प्रयोग करने से इन चीज़ों के व्यवसाय को बढ़ावा मिलेगा, जिससे लोगों को रोज़गार भी मिलेगा।

47. आज़ादी का अमृत महोत्सव

संकेत-बिंदु–• आज़ादी की 75वीं वर्षगाँठ • विभिन्न गतिविधियों का संगम • स्वतंत्रता सेनानियों का परिचय एवं स्मरण। ***(CBSE 2022 Term-2)***

देश की स्वतंत्रता के 75 वर्ष पूर्ण होने पर 75 सप्ताह पूर्व राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी की डांडी यात्रा की वर्षगाँठ के अवसर पर 12 मार्च 2021 को देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने साबरमती आश्रम से पदयात्रा को हरी झंडी दिखाकर 'आजादी के अमृत महोत्सव' का श्री गणेश किया। यह विभिन्न गतिविधियों का संगम है। इसमें देश की अदम्य भावना के उत्सव व सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाएँगे। देश की 75वीं वर्षगाँठ का मतलब है–75 वर्षों पर विचार, 75 वर्ष की उपलब्धियाँ, 75 वर्ष में किए गए एक्शन, 75 वर्ष पर संकल्प आदि, जो स्वतंत्र भारत के सपनों को साकार करने के लिए आगे बढ़ने की प्रेरणा प्रदान करते हैं। 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' का उद्‌देश्य स्वाधीनता आंदोलन के विषय में प्रचलित सहजबोध को परिवर्तित करना, अलक्षित नायक, अलक्षित आंदोलन, अलक्षित संगठनों और अलक्षित स्थलों को केंद्र में लाना, स्वातंत्र्योत्तर उपलब्धियों का मूल्यांकन और स्वतंत्रता सेनानियों का परिचय तथा स्मरण करना है।

48. मेरे सपनों का भारत

संकेत-बिंदु–• कैसा है? • क्या अपेक्षा है • आपका कर्तव्य। ***(CBSE 2022 Term-2)***

मैं भारत को विश्व का शक्तिशाली देश देखना चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि मेरा देश विज्ञान, तकनीक और परमाणु शक्ति से संपन्न हो; आने वाले समय में भारत कंप्यूटर सॉफ्टवेयर की तरह नए-नए उपयोगी आविष्कारों का जन्मदाता बने। खेल के क्षेत्र में सचिन, राहुल, लिएंडर पेस आदि ने जो सम्मान अर्जित किया है, वह और आगे बढ़े। मैं ऐसे भारत का सपना लेता हूँ, जो भ्रष्टाचार मुक्त हो, शोषण मुक्त हो और हिंसा से मुक्त हो। मैं चाहता हूँ कि भारत का नेतृत्व भ्रष्टाचार और लालसा से मुक्त हो। मेरे सपनों का भारत सुशिक्षित भारत है। उसमें अनपढ़ता, निरक्षरता, बेरोजगारी का कोई स्थान नहीं है। मैं चाहता हूँ कि हमारे देश के नियोजक कल की आवश्यकता के अनुसार ऐसी शिक्षा लागू करें जिसके बाद व्यवसाय या नौकरियाँ सुरक्षित हों। कोई भी व्यक्ति अशिक्षित न हो और कोई भी शिक्षित बेरोजगार न हो। मैं सब भारतवासियों को सुखी और समृद्‌ध देखना चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि भारत सांप्रदायिक झगड़ों से दूर रहे। सबमें आपसी भाईचारा हो। पूरा देश अखंड बने। राष्ट्रीय एकता का संचार हो। भारत एक बार पुनः 'सोने की चिड़िया' और 'जगत गुरु' का सम्मान प्राप्त करे। हम सबका कर्तव्य है कि हम अपने भारत को वैसा ही बनाने का प्रयास करें, जैसा मेरे सपनों का भारत है।

पत्र-लेखन

पत्र-लेखन

यद्यपि आज दूरसंचार के साधनों के क्षेत्र में ज़बरदस्त क्रांति आई है और दूरभाष, फ़ैक्स, मोबाइल, इंटरनेट आदि साधनों का उपयोग हो रहा है, तथापि सर्वधारण के लिए पत्रों की महत्ता को नकारा नहीं जा सकता। आज भी समाज के विभिन्न वर्ग अपने प्रियजनों, माता-पिता तथा सगे-संबंधियों से संपर्क करने के लिए पत्रों का ही सहारा लेते हैं। इसी के साथ विभिन्न कार्यालयों, संस्थाओं आदि में कार्यालयीय कार्यवाही पत्रों के माध्यम से ही संचालित होती है। इस प्रकार पत्र-लेखन की उपयोगिता और आवश्यकता सर्वमान्य है।

श्रेष्ठ पत्र की विशेषताएँ

- **सरल और स्पष्ट**–पत्र की भाषा सरल, सुबोध और सुग्राह्य होनी चाहिए। भाषा में सहजता और स्पष्टता होना आवश्यक है। अस्पष्ट और जटिल भाषा पत्र को नीरस और प्रभावहीन बना देती है।
- **संक्षिप्त और उद्देश्यपूर्ण**–पत्र संक्षिप्त और उद्देश्यपूर्ण होना चाहिए। लंबे पत्र उबाऊ और प्रभावहीन होते हैं। पत्र-लेखक को गागर में सागर भरने का प्रयास करना चाहिए। यदि कई बातें लिखनी हों तो छोटे-छोटे अनुच्छेद बनाकर उन्हें संक्षेप में ही लिखना चाहिए।
- **आकर्षक और प्रभावशील**–पत्र सुंदर तथा आकर्षक होना चाहिए। उसमें अनावश्यक काट-छाँट नहीं होनी चाहिए। भद्दा और अस्पष्ट लेख पत्र को प्रभावहीन बना देता है। पत्र लिखते समय विराम-चिह्नों और स्वच्छता का विशेष ध्यान रखना चाहिए।
- **पूर्ण और मौलिक**–पत्र सदैव पूर्ण होना चाहिए। उसमें कोई बात अधूरी नहीं होनी चाहिए। पत्र की भाषा और शैली मौलिक होनी चाहिए। उसे पढ़कर ऐसा नहीं लगना चाहिए कि जैसे उसे कहीं से देखकर लिखा गया है।
- **शिष्ट**–पत्र-लेखन में शिष्टाचार का पालन करते हुए बड़ों को संबोधन और अभिवादन आदरपूर्वक, मित्रों को सौहार्दपूर्वक और छोटों को स्नेहपूर्वक लिखना चाहिए। किसी विषय पर असहमति होने पर भी लेखक को शिष्ट भाषा में ही अपना विरोध प्रकट करने की कला आनी चाहिए।

औपचारिक पत्र (सामाजिक पत्र)

कार्यालयों, संस्थाओं, अधिकारियों, संपादकों आदि को लिखे जाने वाले पत्र–

- प्रार्थना-पत्र
- आवेदन-पत्र
- शिकायती-पत्र आदि

औपचारिक पत्र की विशेषताएँ

- इन पत्रों में आत्मीयता, स्नेह आदि का स्थान नहीं होता बल्कि नियमानुसार पद आदि का उल्लेख करते हुए सामान्य शिष्टाचार का पालन होता है। शिष्टाचार में श्रीमान्, पद-नाम के अंत में जी, महोदय आदि लिखा जाता है।
- शिष्टाचार के पश्चात् विषय लिखा जाता है।
- भाषा सरल, स्पष्ट एवं शिष्ट होती है।
- ये पत्र संक्षिप्त एवं पूर्ण होने चाहिए।
- समापन 'धन्यवाद' के पश्चात् प्रार्थी, भवदीय आदि लिखकर अपना नाम हस्ताक्षर सहित दिया जाता है।

निर्देश–*निम्नलिखित में से किसी एक औपचारिक विषय पर पत्र-लेखन कीजिए–*

1. **आपको विद्यालय जाने के लिए आने-जाने की सीधी बस-सेवा उपलब्ध नहीं है। अपने क्षेत्र के परिवहन अधिकारी को एक नई बस-सेवा चालू करने के लिए प्रार्थना-पत्र लिखिए।**

गाँव-जतनपुर,
मेरठ।] प्रेषक का पता

दिनांक : 15 सितंबर, 20XX] दिनांक

सेवा में,
परिवहन अधिकारी,
मेरठ क्षेत्र,
मेरठ।] प्राप्तकर्ता या प्रेषिती का पद व पता

विषय–नई बस-सेवा चालू करने के लिए पत्र।] विषय

महोदय,] संबोधन

मैं मेरठ के एक प्रसिद्ध विद्यालय का छात्र हूँ। हमारा गाँव मेरठ-करनाल मुख्य मार्ग से 10 किलोमीटर दूर है। यहाँ से शहर के लिए दिनभर में केवल दो बसें चलती हैं, जिनका समय विद्यालय के समय से बिलकुल अलग है। विद्यालय आने के लिए हमें मुख्य मार्ग पर आकर बस पकड़नी पड़ती है। हमारे गाँव से मुख्य मार्ग तक के रास्ते में दो गाँव और भी पड़ते हैं। तीनों गाँवों से सैकड़ों छात्र-छात्राएँ प्रतिदिन पढ़ने के लिए शहर आते हैं।
विद्यालय समय पर सीधी बस-सेवा उपलब्ध न होने के कारण सभी को बहुत परेशानी उठानी पड़ती है।] विषयवस्तु

आपसे अनुरोध है कि सुबह विद्यालय के समय पर हमारे गाँव से मेरठ तक और फिर छुट्टी के समय मेरठ से गाँव तक जाने के लिए एक नई बस-सेवा चालू कराने का कष्ट करें। इससे छात्रों के साथ-साथ अन्य ग्रामीणों को भी आने-जाने में सुविधा होगी। आशा है आप मेरी प्रार्थना अवश्य स्वीकार करेंगे।
धन्यवाद।] समापन

भवदीय
दीपांशु] स्वनिर्देश

2. विद्यालय की विज्ञान प्रयोगशाला में छात्रों के अनुपात में उपकरणों की कमी के कारण, उन्हें प्रयोग करने में कठिनाई का सामना करना पड़ता है। इस समस्या से अवगत कराते हुए तथा नए उपकरण मँगवाने का निवेदन करते हुए प्रधानाचार्य को लगभग 100 शब्दों में पत्र लिखिए। ***(CBSE 2023)***

परीक्षा भवन,
क०ख०ग० विद्यालय,
नई दिल्ली।
दिनांक : 29 अगस्त, 20XX
सेवा में,
प्रधानाचार्य,
बाल भारती विद्यालय
प्रीतमपुरा, नई दिल्ली।
विषय–प्रयोगशाला में उपकरणों की उपलब्धता कराने हेतु।
महोदय,
मैं आपके विद्यालय की कक्षा 10 'ब' का छात्र हूँ। हमारे विद्यालय की विज्ञान-प्रयोगशाला में छात्रों के अनुपात में उपकरणों की संख्या बहुत कम है। इस कारण कुछ छात्र विज्ञान के प्रयोग नहीं कर पाते। आपसे प्रार्थना है कि प्रयोगशाला में पर्याप्त संख्या में उपकरणों की उपलब्धता कराने की कृपा करें।
धन्यवाद।
आपका आज्ञाकारी शिष्य
अ०ब०स०
दसवीं-'ब'

3. आप अर्णव/अरनी हैं और क०ख०ग० नगर के/की निवासी हैं। आपके क्षेत्र के बाज़ारों में प्रतिबंधित होने के बावजूद प्लास्टिक थैलियों का उपयोग धड़ल्ले से हो रहा है। इस समस्या की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए नगर निगम अधिकारी को लगभग 100 शब्दों में एक पत्र लिखिए। ***(CBSE 2023)***

बी-78,
क०ख०ग० नगर,
सहारनपुर।
दिनांक : 15 जून, 20XX
सेवा में,
मुख्य अधिकारी,
नगर निगम,
सहारनपुर।
विषय–प्लास्टिक थैलियों के उपयोग के विषय में।
महोदय,
हमारे क्षेत्र के बाज़ारों में प्लास्टिक की थैलियों के उपयोग पर प्रतिबंध है, लेकिन रेहड़ी पर फल-सब्जियाँ बेचने वाले धड़ल्ले से इनका उपयोग कर रहे हैं। निगम का कोई भी कर्मचारी इस ओर ध्यान नहीं दे रहा है। आपसे प्रार्थना है कि इस समस्या के समाधान हेतु तुरंत उचित कार्यवाही करें, ताकि प्रदूषण पर नियंत्रण किया जा सके।
धन्यवाद।
भवदीय
अर्णव

4. आपके पिताजी ने आपको एक हज़ार रुपये का मनीआर्डर भेजा है और जो अभी तक आपको नहीं मिला है। डाक अधीक्षक को पत्र लिखकर इसकी शिकायत कीजिए।

परीक्षा भवन,
क०ख०ग० विद्यालय,
यमुनानगर।
दिनांक : 4 मार्च, 20XX
सेवा में,
डाक अधीक्षक,
मुख्य डाकघर,
यमुनानगर।
विषय–मनीआर्डर मिलने में हो रहे विलंब के विषय में।
महोदय,
विगत 2 फरवरी, 20XX को मेरे पिताजी ने मेरे लिए एक हज़ार रुपये का मनीआर्डर पानीपत के मुख्य डाकघर से भेजा था, जो आज तक मुझे नहीं मिला है। इसके कारण मैं अपना परीक्षा शुल्क भी जमा नहीं कर पाया हूँ। मनीआर्डर को भेजे हुए एक महीना बीत चुका है।
आपसे अनुरोध है कि मनीआर्डर में हुए विलंब की जाँच कराकर मेरा मनीआर्डर शीघ्र भिजवाने का कष्ट करें और लापरवाही करने वाले कर्मचारियों के खिलाफ़ उचित कार्रवाई करें, जिससे मेरी तरह अन्य लोगों को कोई परेशानी न हो।
धन्यवाद।
भवदीय
अ०ब०स०

5. 'सर्वशिक्षा अभियान' के अंतर्गत चल रहे रात्रिकालीन शिक्षण केंद्रों में प्रौढ़ों को पढ़ाने के लिए अंशकालिक शिक्षकों की आवश्यकता है, जो कम-से-कम सैकेंडरी तक पढ़े हों। इस कार्य के लिए निदेशक, प्रौढ़-शिक्षा, जयपुर, राजस्थान को आवेदन-पत्र लिखिए।

ए-15, सुनहरीनगर,
जयपुर,
राजस्थान।
दिनांक : 17 अप्रैल, 20XX
सेवा में,
निदेशक,
प्रौढ़ शिक्षा,
जयपुर,
राजस्थान।
विषय–अंशकालिक शिक्षक-पद हेतु आवेदन-पत्र।
महोदय,
दैनिक जागरण के 1 अप्रैल, 20XX के अंक में प्रकाशित विज्ञापन द्वारा मुझे ज्ञात हुआ है कि सर्वशिक्षा अभियान के तहत प्रौढ़-शिक्षा केंद्रों पर पढ़ाने के लिए कुछ अंशकालिक शिक्षकों की आवश्यकता है। मैं इस पद हेतु अपनी सेवाएँ अर्पित करना चाहता हूँ।
मेरा व्यक्तिगत एवं शैक्षणिक परिचय इस प्रकार है–

नाम	: वीरेंद्र सिंह मीणा
पिता का नाम	: सूरजभान सिंह मीणा
पता	: ए-15, सुनहरीनगर, जयपुर
जन्मतिथि	: 2.10.1993
शिक्षा	: सी०बी०एस०ई० से विज्ञान विषयसहित सीनियर सैकेंडरी स्कूल परीक्षा उत्तीर्ण
अनुभव	: कामकाजी महिलाओं की सायंकालीन कक्षा में अध्यापन का दो वर्ष का अनुभव
अन्य	: स्कूल में समाज-सेवा कार्यक्रम में भागीदारी

आवेदन-पत्र के साथ शैक्षिक योग्यता के प्रमाण-पत्र, अनुभव प्रमाण-पत्र तथा चरित्र प्रमाण-पत्र की प्रतिलिपि संलग्न हैं।
आशा है कि आप मुझे सेवा का अवसर अवश्य प्रदान करेंगे।
सधन्यवाद।
भवदीय
वीरेंद्र सिंह मीणा

6. **आप क०ख०ग० नगर निवासी मोहन रैना/मोहिनी रैना हैं। अपने क्षेत्र में जल-भराव से उत्पन्न समस्या की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए लगभग 100 शब्दों में नगर निगम अधिकारी को पत्र लिखिए।** ***(CBSE 2023)***

सी-27,
क०ख०ग० नगर,
काशीपुर (उत्तराखंड)।
दिनांक : 22 अगस्त, 20XX
सेवा में,
मुख्य नगर अधिकारी,
नगर निगम,
काशीपुर।
विषय–बरसात में जलभराव की समस्या के निदान हेतु।
महोदय,
मैं क०ख०ग० का निवासी हूँ। हमारे क्षेत्र में जल-निकासी की व्यवस्था ठीक नहीं है। नाले गंदगी से अटे रहते हैं, जिस कारण बिना बारिश के ही सड़कें तालाब बनी रहती हैं। बरसात के दिनों में तो सारा क्षेत्र ही जलमग्न हो जाता है और शहर में बाढ़ जैसी स्थिति उत्पन्न हो जाती है। जलभराव के कारण मुहल्ले में मक्खी-मच्छरों का प्रकोप अत्यधिक बढ़ गया है। लोगों में मलेरिया और हैजा जैसी बीमारियों के फैलने का खतरा बढ़ गया है। सड़कों पर पानी भरा रहने के कारण वे बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई हैं, जिससे लोगों का घर से निकलना भी मुश्किल हो गया है।
आपसे अनुरोध है कि क्षेत्र के नालों की सफ़ाई और जल-निकासी की उचित व्यवस्था कराने का कष्ट करें, ताकि क्षेत्रवासियों को इस परेशानी से छुटकारा मिल सके।
धन्यवाद।
भवदीय
मोहन रैना

7. **हिंदी दिवस पर विद्यालय में आयोजित गोष्ठी का विवरण देते हुए किसी प्रतिष्ठित दैनिक पत्र के संपादक को प्रकाशनार्थ पत्र लिखिए।**

परीक्षा भवन,
क०ख०ग० विद्यालय,
भोपाल।
दिनांक : 15 सितंबर, 20XX
सेवा में,
प्रधान संपादक,
दैनिक भास्कर,
ग्वालियर।
विषय–हिंदी दिवस पर आयोजित गोष्ठी के विवरण के प्रकाशनार्थ।
महोदय,
14 सितंबर को हिंदी दिवस के अवसर पर हमारे विद्यालय में एक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री कमलकांत शर्मा ने की। इस गोष्ठी में सभी शिक्षकों एवं छात्रों ने भाग लिया। गोष्ठी में हिंदी की वर्तमान स्थिति और प्रचार-प्रसार हेतु संभावित प्रयासों पर विचार-विमर्श किया गया। वक्ताओं ने हिंदी की महिमा से संबंधित कविताएँ, गीत और भाषण के माध्यम से अपने विचार प्रस्तुत किए। अध्यक्ष महोदय ने राष्ट्रभाषा के महत्त्व पर प्रकाश डाला और वहाँ उपस्थित सभी लोगों को धन्यवाद दिया।
आपसे निवेदन है कि विद्यालय में आयोजित इस गोष्ठी का विवरण अपने प्रतिष्ठित समाचार-पत्र में छापने का कष्ट करें। इसके लिए हम सदैव आपके आभारी रहेंगे।
धन्यवाद।
भवदीय
अ०ब०स०

8. **आप शौर्य/शारवी शर्मा हैं। नवभारत टाइम्स के संपादक को पत्र लिखिए जिसमें सड़क दुर्घटनाओं को रोकने के सुझाव हों।** ***(CBSE SQP 2023-24)***

परीक्षा भवन,
क०ख०ग० विद्यालय,
भोपाल।
दिनांक : 7 जून, 20XX
सेवा में,
संपादक,
नवभारत टाइम्स,
बहादुरशाह ज़फ़र मार्ग,
नई दिल्ली।
विषय–सड़क दुर्घटना रोकने के सुझाव।
महोदय,
आजकल सड़क दुर्घटनाओं में बहुत वृद्धि हो रही है। इसका कारण लोगों को यातायात के नियमों की जानकारी न होना है। मेरा सुझाव है कि यातायात पुलिस द्वारा महीने में एक बार 'सड़क सुरक्षा सप्ताह' जैसे कार्यक्रमों का आयोजन किया जाना चाहिए। समाचार-पत्र में भी यातायात-नियमों की जानकारी में संबंधित एक स्तंभ प्रकाशित किया जाए। ऐसा करने से लोगों में सड़क-सुरक्षा के प्रति जागरूकता उत्पन्न होगी और दुर्घटनाओं में कमी आएगी। आशा है आप मेरे सुझाव पर विचार करेंगे।
धन्यवाद।
भवदीय
शौर्य शर्मा

9. **दूरदर्शन-निदेशालय को पत्र लिखकर अनुरोध कीजिए कि किशोरों के लिए अधिकाधिक मानवीय संस्कार/देशभक्ति की प्रेरणा देने वाले कार्यक्रमों की बहुलता पर ध्यान दिया जाए।** ***(CBSE 2020)***

परीक्षा भवन,
क०ख०ग० विद्यालय,
जयपुर।
दिनांक: 16 जनवरी, 20XX
सेवा में,
निदेशक,
दूरदर्शन-निदेशालय,
नई दिल्ली।
विषय–किशोरों के लिए जीवन-मूल्यपरक कार्यक्रम बढ़ाने हेतु।
महोदय,
दूरदर्शन संचार का सबसे प्रभावशाली माध्यम है। इसके द्वारा समाज में बहुत परिवर्तन लाया जा सकता है। आज देश के किशोरों में

जीवन-मूल्यों का ह्रास होता जा रहा है। किशोरों की दूरदर्शन में अत्यधिक रुचि है। उनके संवेदनशील मन पर इसका अत्यधिक प्रभाव पड़ता है; अतः आपसे अनुरोध है कि आप किशोरों में संस्कारपरक और देशप्रेम की भावना जगाने वाले कार्यक्रमों को अधिकाधिक प्रस्तुत करें, जिससे हमारे देश के किशोर संस्कारवान् बनें।

आशा है आप इस ओर अवश्य ध्यान देंगे।

धन्यवाद।

भवदीय

अ०ब०स०

10. आप अ०ब०स० नगर निवासी अदम्य विश्वकर्मा/आद्या विश्वकर्मा हैं। आपके क्षेत्र के पार्क को अब तक कूड़ेदान की तरह इस्तेमाल किया जा रहा था। नगर निगम की पहल और सहयोग से वह पुनः सुंदर पार्क बन गया है। इसके लिए नगर निगम आयुक्त को धन्यवाद ज्ञापन करते हुए लगभग 100 शब्दों में एक पत्र लिखिए। ***(CBSE 2023)***

सी०-312,
अ०ब०स० नगर,
कानपुर।
दिनांक : 12 अप्रैल, 20XX
सेवा में,
आयुक्त,
नगर निगम,
कानपुर।
विषय–धन्यवाद ज्ञापन।
महोदय,
मैं कानपुर के अ०ब०स० नगर का निवासी हूँ। हमारे क्षेत्र के पार्क को लोगों ने कूड़ादान बना दिया था। आस-पास के लोग पार्क में कूड़ा फेंकते थे। सारे पार्क में गंदगी फैली थी। पार्क के पेड़-पौधे भी नष्ट कर दिए थे। नगर निगम के सहयोग से पार्क अब सुंदर बन गया है। बच्चों के लिए झूले लगा दिए गए हैं। पार्क हरा-भरा हो गया है। आपके इस प्रयास और सहयोग के लिए आपको क्षेत्रवासियों की ओर से हार्दिक धन्यवाद।
भवदीय
अदम्य विश्वकर्मा

11. विश्व पुस्तक मेले में 'गांधी दर्शन' से संबंधित स्टाल में गांधी-साहित्य के प्रचार के लिए कुछ युवक-युवतियों की आवश्यकता है। आप अपनी योग्यताओं और रुचियों का विवरण देते हुए 'गांधी-स्मृति' संस्था के अध्यक्ष को आवेदन-पत्र लिखिए। ***(CBSE 2015)***

144, बृज बिहार,
गाजियाबाद।
दिनांक : 24 नवंबर, 20XX
सेवा में,
अध्यक्ष,
गांधी-स्मृति संस्था,
नई दिल्ली।
विषय–गांधी-साहित्य के प्रचारक-पद पर नियुक्ति हेतु आवेदन-पत्र।
महोदय,
मुझे विश्वस्त सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि विश्व पुस्तक मेले में 'गांधी दर्शन' से संबंधित आपके स्टाल पर गांधी-साहित्य के प्रचार के लिए कुछ युवक-युवतियों की आवश्यकता है। मैं इसके लिए अपना आवेदन आपकी सेवा में प्रस्तुत कर रहा हूँ। मुझे ऋषिकेश में गीता प्रेस गोरखपुर से प्रकाशित धार्मिक साहित्य के प्रचार का पाँच वर्ष का अनुभव है। मेरा संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है–

नाम	: आलोक कुमार
पिता का नाम	: श्रीदेवराज नारंग
जन्मतिथि	: 4 जनवरी, 1990
पता	: 144, बृज बिहार, गाजियाबाद यू०पी०।
शैक्षिक योग्यता	: इंटरमीडिएट
अनुभव	: धार्मिक साहित्य के प्रचार का पाँच वर्ष का अनुभव

प्रार्थी

आलोक कुमार

12. अपनी कक्षा को आदर्श कक्षा का रूप देने के लिए अपने सुझाव देते हुए प्रधानाचार्य महोदय को एक प्रार्थना-पत्र लिखिए। ***(CBSE 2015)***

परीक्षा भवन,
नई दिल्ली।
दिनांक : 15 जुलाई, 20XX
सेवा में,
प्रधानाचार्य,
सुभारती पब्लिक स्कूल,
सरोजनी नगर, नई दिल्ली।
विषय–आदर्श कक्षा बनाने के सुझाव।
महोदय,
मैं आपके विद्यालय की दसवीं कक्षा का छात्र हूँ। मैं अपनी कक्षा को एक आदर्श कक्षा के रूप में देखना चाहता हूँ। इसके लिए मैं आपके सम्मुख कुछ सुझाव प्रस्तुत करना चाहता हूँ। आदर्श कक्षा आदर्श विद्यार्थियों से बनती है; अतः ज्ञान को प्राप्त करके ही विद्यार्थी आदर्श विद्यार्थी बन सकता है।

यह विद्या ही है, जो मनुष्य को नम्र, सहनशील और गुणवान् बनाती है। यदि अध्यापक प्रत्येक छात्र को पढ़ाई हेतु प्रेरित करें तथा उनके लिए उचित समय सारणी तैयार करें तो भविष्य में प्रत्येक छात्र उन्नति कर सकेगा। पढ़ाई के साथ उन्हें नैतिक शिक्षा भी प्रदान की जाए, जिससे वे अच्छाई और बुराई के बीच अंतर कर सकें। जो छात्र पढ़ाई में अच्छा प्रदर्शन करे एवं आदर्श विद्यार्थी बनकर दिखाएँ, उन्हें पुरस्कृत किया जाना चाहिए, ताकि कक्षा के अन्य विद्यार्थी भी उनसे प्रेरणा लेकर अपने जीवन को सफलता की ओर अग्रसर कर पाएँ। विद्यार्थियों को अनुशासित किया जाए, कक्षा में साफ़-सफ़ाई के लिए प्रेरित किया जाए और समय के महत्त्व के विषय में जानकारी दी जाए। इस प्रकार की पहल और प्रयास द्वारा हमारी कक्षा एक आदर्श कक्षा बन जाएगी।

अतः आपसे विनम्र निवेदन है कि आप मेरे सुझावों पर अवश्य विचार करें।

सधन्यवाद!

आपका आज्ञाकारी शिष्य

क०ख०ग०

कक्षा दसवीं 'ब'

13. बस में यात्रा करते हुए आपका एक बैग छूट गया था, जिसमें ज़रूरी कागज़ और रुपये थे। उसे बस कंडक्टर ने आपके घर आकर लौटा दिया। उसकी प्रशंसा करते हुए परिवहन निगम के अध्यक्ष को पत्र लिखिए। ***(CBSE 2016)***

सी०-71,
नालंदा कॉलोनी,
रुड़की।
दिनांक : 22 जून, 20XX

सेवा में,
अध्यक्ष,
परिवहन निगम,
उत्तर प्रदेश।
विषय–बस कंडक्टर की ईमानदारी के विषय में।
महोदय,
निवेदन यह है कि 21 जून, 20XX को मैं उत्तर प्रदेश परिवहन निगम की बस संख्या यू०पी० 15 ए० 6780 में सवार होकर मेरठ से रुड़की आया था। रुड़की बस अड्डे पर उतरते समय जल्दबाजी में मैं अपना एक बैग बस में ही भूल गया। घर जाकर जब मुझे शाम के समय बैग का ध्यान आया तो मेरे होश उड़ गए; क्योंकि बैग में मेरे बहुत ही आवश्यक और महत्त्वपूर्ण कागज़ात थे। उसमें दस हज़ार रुपये भी थे। इस बात को जानकर सारा परिवार बहुत परेशान हो गया। उसी समय किसी ने हमारा मुख्य दरवाज़ा खटखटाया। मैंने जैसे ही दरवाज़ा खोला, सामने मेरा बैग लिए बस कंडक्टर खड़ा था। मेरे बैग पर लिखे मेरे पते को पढ़कर वह हमारे घर तक आ गया था। मेरी खुशी का ठिकाना न रहा। कंडक्टर ने बैग मुझे सौंप दिया। मैंने उससे अंदर आने के लिए बहुत प्रार्थना की, लेकिन उसे वापस जाने की बहुत जल्दी थी; क्योंकि बस ड्राइवर उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। उस कंडक्टर का नाम सोहन वीर सिंह है।
आपसे अनुरोध है कि उस ईमानदार और कर्तव्यनिष्ठ कर्मचारी को पुरस्कृत करें, ताकि अन्य लोग प्रेरणा ले सकें।
धन्यवाद।
भवदीय
अखिलेश त्यागी।

14. रेल द्वारा बुक कराकर भेजा गया घरेलू सामान आपके निवास के निकटस्थ स्टेशन तक नहीं पहुँचा है। इसकी शिकायत करते हुए रेल-प्रबंधक को एक पत्र लिखिए। *(CBSE 2016)*

273, इंदिरानगर,
सहारनपुर।
दिनांक : 17 मई, 20XX
सेवा में,
रेल-प्रबंधक,
उत्तर रेलवे,
नई दिल्ली।
विषय–बुक कराया सामान न पहुँचने के विषय में पत्र।
महोदय,
निवेदन यह है कि मैंने दिनांक 10 मई, 20XX को अपना कुछ घरेलू, सामान नई दिल्ली रेल स्टेशन से सहारनपुर के लिए बुक कराया था। बुकिंग नंबर डी०एल०/5/2018/1775 है। यह सामान आज तक सहारनपुर रेल स्टेशन पर नहीं पहुँचा। मैंने निकटस्थ स्टेशन पर विलंब का कारण पूछा तो कोई संतोषजनक उत्तर नहीं मिला। मुझे इस सामान की बहुत आवश्यकता है।
आपसे अनुरोध है कि इस विषय में उचित कार्रवाई करें, ताकि मेरा सामान मुझे जल्दी-से-जल्दी प्राप्त हो सके।
धन्यवाद।
भवदीय
कपिल भाटिया
सहारनपुर

15. विद्यालय के गेट पर मध्यावकाश के समय ठेले और रेहड़ी वालों द्वारा जंक फूड बेचे जाने की शिकायत करते हुए प्रधानाचार्य को पत्र लिखकर उन्हें रोकने का अनुरोध कीजिए। *(CBSE 2017)*

परीक्षा भवन,
क०ख०ग० विद्यालय,
नोएडा।
दिनांक : 10 मई, 20XX
सेवा में,
प्रधानाचार्य,
पी० आई० एम० टी० पब्लिक स्कूल,
नोएडा।
विषय–विद्यालय गेट पर ठेले-रेहड़ी वालों द्वारा जंक फूड बेचे जाने के संदर्भ में।
महोदय,
निवेदन इस प्रकार है कि विद्यालय के गेट पर मध्यावकाश में अनेक ठेले-रेहड़ी वाले विद्यालय के छात्रों को जंक फूड बेचते हैं, जबकि विद्यालय की कैंटीन के साथ-साथ विद्यालय के आस-पास भी जंक फूड बेचा जाना प्रतिबंधित है। गंदगी के बीच बनाए और बेचे जा रहे इन जंक फूड का छात्रों के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है। कल भी हमारी कक्षा के चार छात्र इन ठेले-रेहड़ी वालों के यहाँ के मुमोज खाकर फूड प्वाइजनिंग का शिकार हो गए। वे चारों अभी अस्पताल में भर्ती हैं।
आपसे अनुरोध है कि विद्यालय के गेट पर जंक फूड बेचने से इन ठेले-रेहड़ी वालों को रोका जाए। यदि ये लोग रोकने के बाद भी न मानें तो इनके खिलाफ़ थाने में रिपोर्ट लिखाकर विधिक कार्यवाही अमल में लाई जाए, जिससे छात्रों के स्वास्थ्य की रक्षा की जा सके।
धन्यवाद।
आपका आज्ञाकारी शिष्य
अ०ब०स०

16. माननीय प्रधानमंत्री जी को पत्र लिखकर अपने मन के किसी महत्त्वपूर्ण विचार का उल्लेख करते हुए उस पर 'मन की बात' के आगामी प्रसारण में चर्चा करने का निवेदन कीजिए। *(CBSE 2017)*

परीक्षा भवन,
क०ख०ग० विद्यालय,
मेरठ।
दिनांक : 5 मई, 20XX
सेवा में
माननीय प्रधानमंत्री जी
भारत सरकार
नई दिल्ली।
विषय–जैविक खेती से किसानों की आय दोगुनी होने के विषय पर 'मन की बात' कार्यक्रम में चर्चा करने हेतु।
मान्यवर,
मैं मेरठ जिले के छोटे-से गाँव पूठ का रहने वाला हूँ और रेडियो पर प्रसारित होने वाले आपके लोकप्रिय कार्यक्रम 'मन की बात' का नियमित श्रोता हूँ। लगभग सालभर पूर्व आपने अपने एक कार्यक्रम में देश के किसानों का आह्वान किया था कि वे परंपरागत खेती को छोड़कर आधुनिक तरीकों से खेती करें। इससे उनकी आय निश्चय ही दोगुनी हो जाएगी। इसके लिए जिस भी सरकारी मदद की ज़रूरत हो, सरकार उसे देने को तैयार है। आपने अपने इस विषय में जैविक खेती का भी उल्लेख किया था। आपके आह्वान पर हमारे गाँव के किसानों ने परंपरागत खेती छोड़कर जैविक खेती करने का संकल्प

लिया। इसके लिए पहले गाँव के किसानों ने गन्ने की पत्ती, पुआल आदि से वर्मी कंपोस्ट (केंचुए से खाद) बनाने की विधि सीखी। इसके बाद किसानों ने गेहूँ की जैविक खेती की। खेतों में अच्छी पैदावार हुई और खेतों में उत्पन्न फसल तीन गुने दामों पर खेतों में ही हाथोहाथ बिक गई। मेरे गाँव के किसान आज बड़े प्रसन्न और खुशहाल हैं। वे अब केवल जैविक खेती करते हैं। इसी के साथ उन्होंने औषधीय पौधों की खेती शुरू की है। आज उनकी आय दोगुनी के बजाय चार गुनी हो गई है।

मेरा आपसे अनुरोध है कि 'मन की बात' के आगामी कार्यक्रम में मेरे गाँव के किसानों का उदाहरण प्रस्तुत करके उन्हें अपनी आय तिगुनी-चार गुनी करने के लिए प्रेरित करें।

इससे जहाँ एक ओर सरकार का किसानों की आय दोगुनी करने का संकल्प पूरा होगा, वहीं देश में भी सब ओर खुशहाली का वातावरण होगा।

धन्यवादसहित।

भवदीय

अ०ब०स०

17. बस में छूट गए सामान को आपके घर तक सुरक्षित रूप से पहुँचाने वाले बस कंडक्टर की प्रशंसा करते हुए उसे पुरस्कृत करने के लिए परिवहन अध्यक्ष को एक पत्र लगभग 100 शब्दों में लिखिए। ***(CBSE 2018)***

परीक्षा भवन,
क०ख०ग० विद्यालय,
झाँसी।
दिनांक : 15 फरवरी, 20XX

सेवा में,
अध्यक्ष,
परिवहन विभाग,
उत्तर प्रदेश।

विषय–बस कंडक्टर की कर्तव्यनिष्ठा की सराहना में पत्र।

महोदय,

दिनांक 5 फरवरी, 20XX को मैं झाँसी डिपो की रोडवेज़ बस संख्या-यू०पी० 93-72XX से झाँसी से आगरा गया था। आगरा बस अड्डे पर जाकर बस खाली हो गई। मेरे पास दो बैग और एक सूटकेस था। मैं अपना सूटकेस बस में ही भूल गया। घर जाकर मुझे उसकी याद आई तो मेरे होश उड़ गए; क्योंकि उसमें एक लाख रुपये, सोने की चेन और मेरे बहुत ज़रूरी कागज़ थे।

मैं दौड़ा-दौड़ा बस अड्डे गया और बस में देखा, लेकिन वहाँ कुछ नहीं था। मेरी स्थिति पागलों जैसी हो गई। मैं थक-हारकर घर लौटा ही था कि उसी समय बस का कंडक्टर हाथ में सूटकेस लिए मेरे पास पहुँचा और मुसकराकर सूटकेस मेरे हाथ में थमा दिया। खुशी और कृतज्ञता से मेरे आँसू निकल आए। मैंने उसे 500 रुपये पुरस्कार के रूप में देने चाहे, लेकिन उसने यह कहकर मना कर दिया कि यह तो मेरा कर्तव्य था। उस कंडक्टर का नाम सुमेरचंद है।

आपसे निवेदन है कि ऐसे कर्तव्यनिष्ठ कर्मचारी को पुरस्कृत और प्रोन्नत किया जाए, ताकि अन्य लोगों को भी प्रेरणा मिले।

धन्यवाद।

भवदीय

अ०ब०स०

18. अपने बैंक के प्रबंधक को पत्र लिखकर अपने आधार कार्ड को बैंक खाते से जोड़ने का अनुरोध कीजिए। ***(CBSE 2018)***

सी०-275
नालंदा कॉलोनी, रुड़की
दिनांक : 10 अगस्त, 20XX

सेवा में,
शाखा प्रबंधक,
पंजाब नेशनल बैंक,
रुड़की।

विषय–आधार कार्ड को बैंक खाते से जोड़ने हेतु।

महोदय,

निवेदन यह है कि आपकी बैंक शाखा में मेरा बचत खाता संख्या XXXXXXXXXXXXX997 है। मैं अपने आधार कार्ड को बचत खाते से जोड़ना चाहता हूँ। कृपया मेरी आधार कार्ड संख्या खाते से जोड़ने का कष्ट करें। आधार कार्ड की फोटो प्रतिलिपि आवेदन-पत्र के साथ संलग्न है।

धन्यवाद।

भवदीय

क०ख०ग०

रुड़की।

19. आप विद्यालय के हिंदी संघ के सचिव रजत चट्टोपाध्याय और श्वेता चट्टोपध्याय हैं। अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य को पत्र लिखिए जिसमें पुस्तकालय में हिंदी की अच्छी पुस्तकें व पत्रिकाएँ मँगवाने के लिए निवेदन किया गया हो। ***(CBSE SQP 2023-24)***

परीक्षा भवन,
इंदौर।
दिनांक : 20 अप्रैल, 20XX

सेवा में,
प्रधानाचार्य जी,
क०ख०ग० विद्यालय,
इंदौर।

विषय–पुस्तकालय में हिंदी पत्र-पत्रिकाओं की उपलब्धता हेतु पत्र।

महोदय,

मैं आपके विद्यालय की कक्षा 10 'ब' का छात्र एवं हिंदी संघ का सचिव हूँ। वैसे तो हमारे विद्यालय का पुस्तकालय बहुत समृद्ध है, उसमें सभी प्रकार की पुस्तकें उपलब्ध हैं। लेकिन हिंदी की पत्र-पत्रिकाएँ वहाँ नहीं आती हैं। उच्चकोटि के साहित्य का भी अभाव है। हिंदी हमारी मातृ-भाषा है। मेरा आपसे अनुरोध है कि विद्यालय के पुस्तकालय में हिंदी की पत्र-पत्रिकाओं के साथ-साथ उच्चकोटि के साहित्य को मँगवाने की भी व्यवस्था करें, ताकि छात्र उन्हें पढ़ें और मातृ-भाषा के प्रति उनके मन में रुचि उत्पन्न हो। आशा है आप मेरी प्रार्थना अवश्य स्वीकार करेंगे।

धन्यवाद।

आपका आज्ञाकारी शिष्य
रजत चट्टोपाध्याय
कक्षा-10 'ब'

20. चौराहों पर भीख माँगते बच्चों के विषय में अपनी अनुभूति और समस्या के समाधान हेतु अपने विचार व्यक्त करते हुए समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए। *(CBSE 2019)*

परीक्षा भवन,
क०ख०ग० विद्यालय,
नई दिल्ली।

दिनांक : 7 जून, 20XX

सेवा में,
संपादक,
नवभारत टाइम्स,
बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली।

विषय–चौराहों पर भीख माँगते बच्चों के विषय में।

महोदय,

किसी शहर के चौराहे पर जब मैं बच्चों को भीख माँगते देखता हूँ तो मेरा हृदय टुकड़े-टुकड़े हो जाता है। जिनके नन्हें हाथों में कॉपी, किताब और खिलौने होने चाहिए, जिनके कंधों पर बस्ते होने चाहिए, उनके हाथों में भीख के कटोरे और कंधों पर झोली देखकर मैं सोचता हूँ कि क्या यही है मेरे देश का भविष्य? क्या यही है देश के भावी नागरिक? इन बाल-भिखारियों की संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है, क्योंकि कुछ लोगों ने बच्चों से भीख मँगवाने को कारोबार बना लिया है।

बच्चों का भीख माँगना देश और समाज के माथे पर कलंक है। सरकार को इस भीषण समस्या के समाधान हेतु बालश्रम से भी कठोर कानून बनाने चाहिए। सामाजिक संस्थाओं को इन बच्चों के कल्याण हेतु अधिक प्रयासरत होना चाहिए। नागरिकों को भी इस विषय में जागरूक होना चाहिए।

आपसे अनुरोध है कि आप मेरे ये विचार अपने समाचार-पत्र में छापें, ताकि लोगों में बाल-भिखारियों के उद्धार की भावना जाग्रत हो सके।

धन्यवाद
भवदीय
सौरभ शुक्ला

21. 'स्वच्छ भारत-स्वस्थ भारत' अभियान का आपके आस-पड़ौस में क्या प्रभाव दिखाई देता है? उसकी अच्छाइयों और सीमाओं की चर्चा करते हुए किसी समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए। *(CBSE 2019)*

सी-12, गंगानगर,
मेरठ।

दिनांक : 22 सितंबर, 20XX

सेवा में,
मुख्य संपादक,
दैनिक जागरण,
दिल्ली रोड मेरठ।

विषय–'स्वच्छ भारत-स्वस्थ भारत' अभियान के विषय में।

महोदय,

अपने इस पत्र के माध्यम से मैं 'स्वच्छ भारत-स्वस्थ भारत' अभियान के प्रभाव के विषय में बताना चाहता हूँ। इस अभियान से लोगों में स्वच्छता के विषय में बहुत जागृति आई है। हमारी कॉलोनी में पहले लोग घर का कूड़ा-कचरा सड़क पर फेंक देते थे, जिससे सड़क पर कूड़े के ढेर लगे होते थे, लेकिन अब सबने अपने घरों में कूड़ेदान रख लिया है। सफ़ाई कर्मचारी नियमित रूप से नालियों की सफ़ाई करते हैं। पहले मोहल्ले का पार्क गंदगी से भरा रहता था, लेकिन अब लोग सप्ताह में 'सामूहिक स्वच्छता अभियान' चलाकर पार्क की नियमित सफ़ाई करते रहते हैं। आज हमारी कॉलोनी गंदगी से पूर्ण रूप से मुक्त हो चुकी है। यह सब इस महान अभियान का ही परिणाम है। यदि देश के हर नगर, गाँव और मोहल्ले के लोग इस अभियान में सक्रिय भाग लें तो 'स्वच्छ भारत-स्वस्थ भारत' का स्वप्न शीघ्र ही साकार हो जाएगा।

आपसे प्रार्थना है कि मेरा यह पत्र अपने समाचार-पत्र में प्रकाशित करें ताकि अन्य लोग भी इस महान अभियान में अपना योगदान देने के लिए प्रेरित हों।

धन्यवाद
भवदीय
क०ख०ग०

22. आपकी बस्ती के पार्क में कई अनधिकृत खोमचे वालों ने डेरा डाल दिया है, उन्हें हटाने के लिए नगर निगम अधिकारी को लगभग 80-100 शब्दों में पत्र लिखिए। *(CBSE 2020)*

बी०-31, देवनगर,
लखनऊ।

दिनांक : 22 मार्च, 20XX

सेवा में,
मुख्य अधिकारी,
नगर निगम, लखनऊ।

विषय-पार्क से खोमचे वालों को हटाने के लिए पत्र।

महोदय,

मैं देवनगर कॉलोनी का निवासी हूँ। हमारी कॉलोनी के पार्क में कुछ खोमचे वालों ने अनधिकृत रूप से डेरा जमा लिया है। वे खाने-पीने का सामान बेचते हैं। बच्चे उनसे सामान खरीदते हैं और खाली पैकेट इधर-उधर फेंक देते हैं। इससे पार्क में गंदगी फैल गई है। बच्चों का खेलना तथा वृद्धों का घूमना भी बंद हो गया है। पार्क की सुंदरता भी नष्ट हो रही है।

आपसे अनुरोध है कि इन अनधिकृत खोमचे वालों को पार्क से हटाने के लिए उचित कार्रवाई करें।

धन्यवाद।
भवदीय
क०ख०ग०

23. अस्पताल कर्मचारियों के सद्व्यवहार की प्रशंसा करते हुए मुख्य चिकित्सा अधिकारी को लगभग 80-100 शब्दों में पत्र लिखिए। *(CBSE 2020)*

म०नं०-317,
पीर मौहल्ला,
गढ़ी पुख्ता।

दिनांक : 10 जून, 20XX

सेवा में,
मुख्य चिकित्सा अधिकारी,
शामली।

विषय–अस्पताल कर्मचारियों के सद्व्यवहार की प्रशंसा।

महोदय,

मैं गढ़ी पुख्ता कस्बे का निवासी हूँ। हमारे कस्बे में एक सरकारी अस्पताल है। मैंने सुना था कि अस्पताल के कर्मचारियों का व्यवहार अच्छा नहीं है, लेकिन कल मैं अपने बीमार पिताजी को लेकर जब वहाँ गया तो मेरा यह भ्रम टूट गया। जाते ही हमारी परची बना दी गई और चिकित्सक के पास भेज दिया। चिकित्सक ने बहुत अच्छी प्रकार पिताजी का परीक्षण किया। उनके खून की जाँच भी की गई। फिर दवाइयाँ दी गईं। जाँच और दवाइयों का कोई पैसा नहीं लिया गया। सभी कर्मचारियों का व्यवहार बहुत विनम्र और शिष्टतापूर्ण था। मेरे पिताजी अब पूर्णतः स्वस्थ हैं। इसके लिए सभी अस्पताल कर्मचारी धन्यवाद के पात्र हैं।

आपसे अनुरोध है कि सभी अस्पतालों के कर्मचारियों को ऐसा ही सद्व्यवहार करने के लिए प्रेरित करें, क्योंकि यह रोगियों के लिए संजीवनी के समान है।

धन्यवाद।

भवदीय

क०ख०ग०

24. आप विद्यालय की छात्र-परिषद् के सचिव हैं। स्कूल के बाद विद्यार्थियों को नाटक का अभ्यास करवाने के लिए अनुमति माँगते हुए प्रधानाचार्य को लगभग 80-100 शब्दों में पत्र लिखिए।

(CBSE 2020)

परीक्षा भवन,

मेरठ।

दिनांक : 10 नवंबर, 20XX

सेवा में,

प्रधानाचार्य,

प्रताप बाल-विद्यालय

मेरठ।

विषय–नाटक का अभ्यास करवाने के लिए अनुमति हेतु पत्र।

महोदय,

मैं आपके विद्यालय की कक्षा दसवीं 'ब' का छात्र और विद्यालय की छात्र परिषद् का सचिव हूँ। 14 नवंबर, 20XX को विद्यालय में नाटक प्रतियोगिता का आयोजन किया गया है। इसके लिए विद्यार्थियों को अभ्यास की आवश्यकता है।

आपसे अनुरोध है कि स्कूल के बाद विद्यार्थियों को नाटक का अभ्यास करने की अनुमति प्रदान करें। आपकी अति कृपा होगी।

धन्यवाद।

आपका आज्ञाकारी शिष्य

क०ख०ग०

(सचिव, छात्र परिषद्)

25. आपसे अपने बचत खाते की चैक-बुक खो गई है। इस संबंध में बैंक-प्रबंधक को उचित कार्यवाही करने के लिए पत्र लिखिए।

(CBSE SQP 2021)

325 A, आदर्शनगर,

सोनीपत (हरियाणा)।

दिनांक : 20 जुलाई, 20XX

सेवा में,

पंजाब नेशनल बैंक,

सोनीपत (हरियाणा)।

विषय–चैक-बुक खो जाने के संबंध में प्रार्थना-पत्र।

महोदय,

आपकी शाखा में एक बचत खाता सं० A-5762XX है। असावधानीवश मेरी चैक-बुक मुझसे खो गई है। उसने 104XX से 104XX तक के छह चैक खाली थे। आपसे अनुरोध है कि इन चैकों का भुगतान रोक दिया जाए। साथ ही मुझे एक नई चैक-बुक जारी करने का कष्ट करें। आपकी अति कृपा होगी।

सधन्यवाद।

भवदीया

मालती देवी।

26. नगर निगम को एक पत्र लिखिए जिसमें नालियों की सफ़ाई एवं कीटनाशक दवाओं के छिड़काव का सुझाव हो। ***(CBSE SQP 2021)***

31 B, गली नं० 6,

अंबेडकरनगर,

नई दिल्ली।

दिनांक : 1 जून, 20XX

सेवा में,

स्वास्थ्य अधिकारी,

दिल्ली : नगर निगम

दक्षिण क्षेत्र,

नई दिल्ली।

विषय–क्षेत्र में नालियों की सफ़ाई की समुचित व्यवस्था हेतु पत्र।

मान्यवर,

मैं कैलाश साहू अंबेडकरनगर का निवासी हूँ और इस पत्र के माध्यम से आपका ध्यान अपने क्षेत्र में फैली गंदगी की ओर दिलाना चाहता हूँ। इस क्षेत्र में जगह-जगह गंदगी के ढेर पड़े हैं और दिन-पर-दिन बढ़ते जा रहे हैं; क्योंकि कई दिनों से न तो नगर निगम का कोई सफ़ाई कर्मचारी काम पर आया है और न कूड़ा ले जाने वाला ट्रक। नालियों में कचरा भर जाने से गंदा पानी गलियों की सड़कों पर भर गया है। इससे इतनी दुर्गंध आती है कि इलाके में रहने वालों का जीवन नरक बन गया है।

गंदगी के ढेरों और सड़ते पानी पर मक्खी-मच्छरों ने डेरा जमा रखा है। मच्छरों के प्रकोप से मलेरिया, डेंगू और चिकनगुनिया जैसी भयंकर बीमारियाँ फैलने का खतरा उत्पन्न हो गया है। गंदगी के ढेर पर सूअर आदि पशु घूमते रहते हैं। वर्षा का मौसम सिर पर है। वर्षा में इस क्षेत्र की क्या हालत होगी, आप अनुमान लगा सकते हैं।

आपसे अनुरोध है कि एक बार स्वयं इस क्षेत्र की सफ़ाई व्यवस्था का निरीक्षणकर शीघ्र ही नालियों की सफ़ाई की समुचित व्यवस्था और उनमें कीटनाशक दवाइयों का छिड़काव कराने का कष्ट करें। इस क्षेत्र के निवासी आपके बहुत आभारी रहेंगे।

धन्यवादसहित।

भवदीय।

कैलाश साहू।

27. आप सृष्टि/सार्थक हैं। बेंगलुरु से चेन्नई शताब्दी एक्सप्रेस में यात्रा करते समय आपका कीमती सामान वाला बैग जल्दबाजी में गाड़ी में ही रह गया। आपके द्वारा की गई शिकायत से आपको अपना बैग वापस मिल गया। प्रबंधन की प्रशंसा करते हुए किसी समाचार-पत्र के संपादक को लगभग 120 शब्दों में पत्र लिखिए।

परीक्षा भवन,

क०ख०ग० विद्यालय,

झाँसी।

दिनांक : 15 फरवरी, 20XX

सेवा में,

प्रधान संपादक,

दैनिक भास्कर

ग्वालियर।

विषय–रेलवे प्रबंधन की प्रशंसा के विषय में।

महोदय,

आपके समाचार-पत्र के माध्यम से मैं रेलवे प्रबंधन की प्रशंसा करना चाहता हूँ। 10 फरवरी, 20XX को शताब्दी एक्सप्रेस द्वारा बेंगलुरु से चेन्नई की यात्रा करते समय मेरा कीमती सामान वाला बैग जल्दबाजी में गाड़ी में ही छूट गया। मैंने इसकी शिकायत चेन्नई रेलवे स्टेशन मास्टर से की। रेल प्रबंधन की तत्परता और प्रयास से मेरा बैग मुझे वापस मिल गया। मैं रेल प्रबंधन का हृदय से धन्यवाद करता हूँ और चाहता हूँ कि आप अपने समाचार-पत्र में यह समाचार छापें, ताकि अन्य विभागों के कर्मचारी इससे प्रेरणा ले सकें।

धन्यवाद।

भवदीय

सार्थक।

28. आप हरप्रीत/हरभजन हैं। विद्यालय में टेबिल टेनिस और प्रशिक्षक (कोच) की व्यवस्था करने के लिए प्रधानाचार्य को लगभग 120 शब्दों में निवेदन-पत्र लिखिए। ***(CBSE 2022 Term-2)***

परीक्षा भवन,

क०ख०ग० विद्यालय

कानपुर।

दिनांक : 10 अप्रैल, 20XX

सेवा में

प्रधानाचार्या,

क०ख०ग० विद्यालय,

कानपुर।

विषय–टेबिल टेनिस और प्रशिक्षक की व्यवस्था के विषय में।

महोदया,

मैं आपके विद्यालय की कक्षा 10 'ब' का छात्र हूँ। हमारे विद्यालय में सभी खेलों की व्यवस्था है, लेकिन टेबिल टेनिस की नहीं है। मेरी और अन्य बहुत-से छात्रों की रुचि इस खेल में है। मैं आपसे विनम्र निवेदन करता हूँ कि विद्यालय में टेबिल टेनिस और उसके प्रशिक्षक की व्यवस्था की जाए, ताकि इस खेल में रुचि रखने वाले छात्रों को आगे बढ़ने का अवसर प्राप्त हो सके। आशा है आप मेरी प्रार्थना पर अवश्य ध्यान देंगी।

धन्यवाद।

आपका आज्ञाकारी शिष्य

हरभजन

कक्षा 10 'ब'।

सूचना-लेखन

सूचना-लेखन

किसी महत्त्वपूर्ण जानकारी को उससे संबंधित लोगों तक पहुँचाने के लिए औपचारिक शैली में तथ्यों को लिखना सूचना-लेखन कहलाता है।

सूचना में किसी कार्यक्रम के होने, कार्यक्रम में परिवर्तन, नियुक्ति, परीक्षा, छुट्टी, सांस्कृतिक कार्यक्रम, आमंत्रण, महत्त्वपूर्ण दिवस, जन्म-मरण, सभा, गोष्ठियों, सम्मेलनों के आयोजन, स्थगन, नियम-पालन, समय और स्थान इत्यादि की जानकारी दी जाती है। इस सूचना को उससे संबंधित लोगों तक पहुँचाने के लिए उन्हें सूचनापटों, सार्वजनिक बोर्डों, होर्डिंग पर लगाकर अथवा समाचार-पत्रों में विज्ञापन अथवा समाचार के रूप में प्रचारित किया जाता है।

सूचना-लेखन का उद्देश्य

- सूचना-लेखन का एकमात्र उद्देश्य सूचना को उससे संबंधित लोगों तक पहुँचाना होता है, जिससे समय रहते लोग उसका पालन कर सकें।
- सूचना-लेखन का उद्देश्य लोगों को उनके अधिकार और कर्तव्यों के प्रति सचेत करना भी है, जिससे उन्हें कोई हानि न पहुँचे और वे किसी उचित लाभ से वंचित न हो सकें।

सूचना के प्रकार

- किसी सरकारी अथवा गैरसरकारी संस्थान, समूह, कार्यालय, विद्यालय आदि द्वारा जारी सूचना।
- किसी सांस्कृतिक कार्यक्रम, परीक्षा, सार्वजनिक-अवकाश, सामूहिक-सभा, खेल-दिवस, शैक्षणिक-भ्रमण, मेले आदि के आयोजनार्थ सूचना।
- प्राकृतिक आपदा, त्रासदी से जूझ रहे लोगों के सहायतार्थ जनहित में जारी सूचना।
- किसी की नियुक्ति, सेवानिवृत्ति, बरखास्तगी, आदेश, घोषणा, निष्कासन, मृत्यु आदि से संबंधित अवगतार्थ सूचना।
- किसी नवीन सिद्धांत, नियम आदि को लागू करने की सूचना।
- निविदा-सूचना।
- खोया-पाया, क्रय-विक्रय, नीलामी आदि से संबंधित सूचना।

सूचना-लेखन से संबंधित कुछ महत्त्वपूर्ण बातें

- सूचना सदैव औपचारिक शैली में लिखी जाती है।
- सूचना संक्षिप्त, सरल, सटीक होनी चाहिए।
- सूचना का प्रारूप औपचारिक-पत्र की तरह होता है, परंतु इसका आकार अपेक्षाकृत कम होता है।
- पाठ्यक्रम में सूचना-लेखन की शब्द-सीमा 30-40 शब्द तक रखी गई है; अतः उसका विशेष ध्यान रखना चाहिए।
- अनावश्यक तथ्यों का सूचना में कोई स्थान नहीं होता।
- सूचना में विषय से संबंधित संपूर्ण विवरण; यथा–दिनांक, समय, स्थान, उद्देश्य, अवधि, पात्रता आदि का यथोचित उल्लेख होना चाहिए।

- सटीक अर्थ प्रेषित करने हेतु कार्यालयीय, प्रशासनिक व पारिभाषिक शब्दावली का ही प्रयोग किया जाना चाहिए।
- सूचना सदैव अन्य पुरुष में लिखी जानी चाहिए।
- सूचना बिना किसी संबोधन अथवा अभिवादन के लिखी जाती है।
- सूचना केवल एक अनुच्छेद में लिखी जानी चाहिए।
- कार्यालयीय अथवा संस्थागत सूचना-लेखन संस्था के मुख्य अधिकारी के आधिकारिक-पत्र पर किया जाता है।

सूचना-लेखन के आवश्यक अंग

1. **संस्था अथवा कार्यालय का नाम एवं पता**–सूचना यदि किसी संस्था अथवा कार्यालय की ओर से जारी की जा रही है तो सबसे पहले मोटे अक्षरों में उस संस्था का नाम एवं पता लिखना चाहिए।
2. **शीर्षक**– सूचना में संस्था के नाम आदि के नीचे थोड़ा स्थान छोड़कर सूचना का शीर्षक लिखा जाता है। ये शीर्षक सूचना के भेद के अनुसार अलग-अलग होते हैं; जैसे–सूचना, आवश्यक सूचना, गुमशुदा, खोया-पाया, आम सूचना, जनसाधारण के लिए सूचना, दाखिला सूचना, निःशुल्क शिविर, अपील, आमंत्रण आदि।
3. **दिनांक**– शीर्षक के नीचे दिनांक का उल्लेख किया जाता है। जो सूचनाएँ संस्था अथवा कार्यालय के लैटर हैड पर जारी होती हैं, उनमें दिनांक का स्थान पहले से निर्धारित होता है।
4. **विषय**–दिनांक के नीचे, लेकिन कागज के मध्य में सूचना का विषय लिखा जाता है; जैसे–अंतरविद्यालयीय प्रतियोगिता, समय-परिवर्तन संबंधी सूचना, संस्था के चुनाव की घोषणा आदि।
5. **विषयवस्तु**–विषय के नीचे जो सूचना देनी होती है, उसको संक्षिप्त और सारगर्भित रूप में लिखा जाता है।
6. **हस्ताक्षर (नाम) एवं पद नाम**–सूचना की समाप्ति पर बाईं अथवा दाईं ओर सूचना को जारी करने वाला व्यक्ति अपने हस्ताक्षर करता है। हस्ताक्षरों के साथ उनके नीचे जारीकर्ता का नाम और पद-नाम लिखा जाता है।

निर्देश–*निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर 20-30 शब्दों में सूचना-लेखन कीजिए।*

प्रश्न 1 : रामजस पब्लिक स्कूल दिनांक 12 फरवरी, 20XX को महाशिवरात्रि के उपलक्ष्य में बंद रहेगा। इस आशय की सूचना जारी करें।

उत्तर :

रामजस पब्लिक स्कूल, नई दिल्ली

सूचना

दिनांक : 11 फरवरी, 20XX

विषय–महाशिवरात्रि के उपलक्ष्य में।

सभी विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि महाशिवरात्रि के उपलक्ष्य में विद्यालय कल दिनांक 12 फरवरी, 20XX को बंद रहेगा। विद्यालय दिनांक 13 फरवरी, 20XX को अपने पूर्व निर्धारित समय पर खुलेगा।

....

हस्ताक्षर

प्रधानाचार्य

प्रश्न 2 : समाचार-पत्र के संपादक की ओर से किसी उत्पाद की गुणवत्ता के लिए समाचार-पत्र समूह के ज़िम्मेदार नहीं होने की सूचना देते हुए एक वैधानिक सूचना लिखें।

उत्तर :

वैधानिक सूचना

इस समाचार-पत्र के सभी पाठकों को सलाह दी जाती है कि किसी विज्ञापन पर प्रतिक्रिया से पहले विज्ञापन में प्रकाशित किसी उत्पाद या सेवा के बारे में पूरी तरह उपयुक्त जाँच-पड़ताल कर लें। यह समाचार-पत्र विज्ञापन में प्रकाशित उत्पाद या सेवा की गुणवत्ता आदि के विवरण के बारे में विज्ञापनदाता द्वारा किए गए किसी भी दावे या उल्लेख की पुष्टि या समर्थन नहीं करता। अतः समाचार-पत्र विज्ञापनों से कारित किसी भी क्षति या हानि के प्रति उत्तरदायी नहीं होगा।

प्रश्न 3 : विद्यालय द्वारा चिकित्सा जाँच शिविर का आयोजन किया जा रहा है। स्वास्थ्य संगठन के सचिव होने के नाते कक्षा छठी से बारहवीं तक के सभी विद्यार्थियों को कार्यक्रम के विवरण सहित इसकी सूचना प्रदान कीजिए। ***(CBSE SQP 2023-24)***

उत्तर :

अ०ब०स० विद्यालय, रुड़की

सूचना

दिनांक : 5 फरवरी, 20XX

विषय—चिकित्सा जाँच शिविर।

कक्षा छठी से बारहवीं तक के सभी छात्रों को सूचित किया जाता है कि दिनांक 10 फरवरी, 20XX को विद्यालय में चिकित्सा जाँच शिविर का आयोजन किया जा रहा है। इसमें विशेषज्ञों द्वारा स्वास्थ्य की जाँच की जाएगी। जाँच कराने का समय प्रातः 10:00 बजे से शाम 04:00 बजे तक है। इच्छुक छात्र अपने स्वास्थ्य की जाँच करा सकते हैं।

....

हस्ताक्षर

स्वास्थ्य संगठन सचिव

प्रश्न 4 : संस्कृति क्लब की ओर से 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' कार्यक्रम को बढ़ावा देने के लिए सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। इसकी जानकारी देते हुए तथा सहभागिता के लिए प्रेरित करते हुए अध्यक्ष की ओर से सूचना लिखिए।

(CBSE SQP 2023-24)

उत्तर :

संस्कृति क्लब, अ०ब०स० सोसायटी

सूचना

दिनांक : 5 नवंबर, 20XX

विषय—सांस्कृतिक कार्यक्रम।

सभी सोसायटी-वासियों को सूचित किया जाता है कि 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' कार्यक्रम को बढ़ावा देने के लिए दिनांक 10 नवंबर, 20XX को सोसायटी के सामुदायिक केंद्र पर एक सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। इसमें सभी की सहभागिता अपेक्षित है।

....

हस्ताक्षर

अध्यक्ष

प्रश्न 5 : आप किसी विद्यालय की हैडगर्ल हैं। पचास शब्दों में प्रकाशन हेतु एक सूचना तैयार कीजिए, जिसमें हाउस कैप्टनों और वाइस कैप्टनों को उस मीटिंग में भाग लेने का निर्देश दीजिए। इस मीटिंग में प्रधानाचार्य और सदन-इंचार्ज यूनिफॉर्म जाँचने तथा देरी से आने वाले छात्र-छात्राओं को जाँचने की ड्यूटी लगाएँगे।

उत्तर :

नेहरू पब्लिक स्कूल, द्वारका, दिल्ली

सूचना

दिनांक : 17 अप्रैल, 20XX

विषय—हाउस कौंसिल मीटिंग।

सभी हाउस कैप्टनों तथा वाइस कैप्टनों को सूचित किया जाता है कि वे 20 अप्रैल, 20XX को अपराह्न 2:00 बजे होने वाली मीटिंग में अवश्य भाग लें। इसे प्रधानाचार्य और सदन इंचार्ज संबोधित करेंगे। इस मीटिंग में यूनिफॉर्म जाँचने तथा विलंब से आने वाले छात्र-छात्राओं की जाँच के कार्य का उत्तरदायित्व सौंपा जाएगा। विद्यालय के सभागार में अपनी उपस्थिति सुनिश्चित करें।

....

हस्ताक्षर

श्वेता पुंढीर (हेडगर्ल)

प्रश्न 6 : दादरी औद्योगिक विकास प्राधिकरण ने अपनी विभिन्न आवासीय योजनाओं का ड्रॉ निकालने की तिथि तथा स्थान निश्चित कर दिया है। इस आशय की जानकारी देते हुए एक सार्वजनिक सूचना लिखिए।

उत्तर :

दादरी औद्योगिक विकास प्राधिकरण

सार्वजनिक सूचना

दिनांक : 20 नवंबर, 20XX

विषय—आवासीय योजनाओं का ड्रॉ।

प्राधिकरण द्वारा सर्वसाधारण को यह सूचित किया जाता है कि प्राधिकरण की योजना कोड सं० 5025 एम (01) में सेक्टर-1 से 20 तक स्थित ई०डब्ल्यू०एस०/एल०आई०जी०/एम०आई०जी० आवासीय भवन (फ्लैट) की विशिष्ट योजनाओं का आवंटन ड्रॉ द्वारा दिनांक 29-11-20XX (शनिवार) को प्रातः 10 बजे नेहरू पार्क में किया जाएगा।

....

हस्ताक्षर

मुख्य कार्यपालक अधिकारी

प्रश्न 7 : आप श्री नवीन कुमार हैं। आप अपने पुत्र के अनैतिक कार्यों से बहुत परेशान हैं। उसकी कारगुज़ारियों से बचने के लिए एक सार्वजनिक वैधानिक सूचना जारी करें।

उत्तर :

सार्वजनिक सूचना

दिनांक : 15 मार्च, 20XX

विषय—संपत्ति से बेदखली।

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मेरा पुत्र विभोर अनैतिक कार्यों में लिप्त है। वह मेरे नियंत्रण से बाहर है। मैं उसके अनैतिक आचरण से बहुत परेशान हूँ और उससे अपने सभी संबंध समाप्त करता हूँ। मैं उसे अपनी चल-अचल संपत्ति से भी बेदखल करता हूँ। उसके किसी भी कार्य के लिए मैं या मेरा परिवार किसी भी प्रकार से उत्तरदायी न होगा।

नवीन कुमार

17/2, क०ख०ग० कॉलोनी

हरिद्वार

प्रश्न 8 : आप अभय सिंह/अभया सिंह हैं और 'समर्पण' नामक गैर-सरकारी संगठन के अध्यक्ष/की अध्यक्षता हैं। आपका संगठन प्रौढ़ों के लिए निःशुल्क सायंकालीन कक्षाएँ प्रारंभ करने जा रहा है। इन कक्षाओं में भाग लेने के इच्छुक लोगों के लिए एक सूचना तैयार कीजिए। *(CBSE 2023)*

उत्तर :

'समर्पण'

सूचना

दिनांक : 15 मार्च, 20XX

विषय—प्रौढ़ों के लिए कक्षाएँ।

सभी प्रौढ़ों को सूचित किया जाता है कि हमारे संगठन 'समर्पण' द्वारा दिनांक 20 मार्च, 20XX से निःशुल्क सायंकालीन कक्षाएँ प्रारंभ की जा रही हैं। कक्षाओं में भाग लेने के इच्छुक प्रौढ़ अध्यक्ष को अपना नामांकन करा दें।

पुस्तकें और कॉपियाँ निःशुल्क प्रदान की जाएँगी।

....

हस्ताक्षर

अभयसिंह (अध्यक्ष)

प्रश्न 9 : आप हर्ष चतुर्वेदी/हर्षा चतुर्वेदी हैं और विकास माध्यमिक विद्यालय के छात्र परिषद् के अध्यक्ष/की अध्यक्षा हैं। विद्यालय में आयोजित होने वाली 'कैरियर परामर्श कार्यशाला' की जानकारी देते हुए एक सूचना तैयार कीजिए। *(CBSE 2023)*

उत्तर :

छात्र परिषद्, विकास माध्यमिक विद्यालय

सूचना

दिनांक : 6 अक्टूबर, 20XX

विषय—कैरियर परामर्श कार्यशाला।

कक्षा दसवीं से बारहवीं तक के सभी विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि दिनांक 10 अक्टूबर, 20XX को विद्यालय के सभागार में 'कैरियर परामर्श कार्यशाला' का आयोजन किया जा रहा है। इसमें श्री पी०के० तनेजा कैरियर परामर्शदाता होंगे। सभी विद्यार्थियों की उपस्थिति अनिवार्य है।

....

हस्ताक्षर

हर्ष चतुर्वेदी (अध्यक्ष)

प्रश्न 10 : दिल्ली पब्लिक स्कूल दिनांक 1 मई से 30 जून तक ग्रीष्मावकाश के लिए बंद रहेगा। इस आशय की सूचना जारी करें।

उत्तर :

दिल्ली पब्लिक स्कूल, आर०के०पुरम्, नई दिल्ली

सूचना

दिनांक : 30 अप्रैल, 20XX

विषय—ग्रीष्मावकाश।

सभी विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि ग्रीष्मावकाश के कारण विद्यालय दिनांक 1 मई, 20XX से 30 जून, 20XX तक बंद रहेगा। विद्यालय 1 जुलाई, 20XX को समयानुसार खुलेगा।

....

हस्ताक्षर

प्रधानाचार्य

प्रश्न 11 : आप केंद्रीय विद्यालय में शारीरिक शिक्षा के अध्यापक/अध्यापिका हैं। आज़ादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में आपने आगामी सप्ताह खेल-कूद संबंधी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया है। इस संबंध में जानकारी देते हुए लगभग 80 शब्दों में एक सूचना तैयार कीजिए। *(CBSE 2023)*

उत्तर :

केंद्रीय विद्यालय, झाँसी

सूचना

दिनांक : 10 अक्टूबर, 20XX

विषय—खेल-कूद प्रतियोगिता।

सभी विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' के उपलक्ष्य में आगामी सप्ताह दिनांक 18 अक्टूबर, 20XX और 19 अक्टूबर, 20XX को विद्यालय में खेल-कूद संबंधी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जा रहा है। इनमें भाग लेने के इच्छुक विद्यार्थी शारीरिक शिक्षा अध्यापक को अपना नामांकन करा दें।

....

हस्ताक्षर

शारीरिक शिक्षा अध्यापक

प्रश्न 12 : आपके विद्यालय ने कक्षा 11-12 के विद्यार्थियों को दशहरा अवकाश में ऐतिहासिक अध्ययन हेतु एक सप्ताह के लिए राजस्थान ले जाने की योजना बनाई है। इच्छुक विद्यार्थी किसे और कब संपर्क करें, यह सूचना सूचना-पट के लिए लिखिए।

उत्तर :

क० ख० ग० विद्यालय, फरीदाबाद

सूचना

दिनांक : 5 अक्टूबर, 20XX

विषय—ऐतिहासिक भ्रमण।

कक्षा 11 और 12 के सभी विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि विद्यालय ने दशहरा अवकाश में विद्यार्थियों को ऐतिहासिक अध्ययन हेतु एक सप्ताह के लिए राजस्थान भ्रमण की योजना बनाई गई है। इसके लिए 15 अक्टूबर से 22 अक्टूबर तक का समय निर्धारित किया गया है। इच्छुक विद्यार्थी 10 अक्टूबर तक अपने-अपने कक्षाध्यापक को सूचित कर दें तथा उनसे फॉर्म लेकर उसे भरकर स्कूल कार्यालय के फीस-काउंटर पर ₹ 2,500 के साथ जमा करवा दें।

10 अक्टूबर के पश्चात् कोई भी फॉर्म स्वीकार नहीं किया जाएगा।

....

हस्ताक्षर

प्रधानाचार्य

प्रश्न 13 : आपने अपना नाम अभिलाषा से बदलकर प्रांजल कर लिया है। अपने विद्यालय के सभी विद्यार्थियों को 20-30 शब्दों में इसकी सूचना दीजिए। ***(CBSE 2016)***

उत्तर :

केंद्रीय विद्यालय, द्वारका, नई दिल्ली

सूचना

दिनांक : 17 सितंबर, 20XX

विषय—नाम परिवर्तन की सूचना।

सभी विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि मैंने अर्थात् कक्षा दसवीं की छात्रा कु० अभिलाषा सुपुत्री श्रीमान चंचल कपूर, निवासी-B ब्लॉक, सेक्टर-8, द्वारका, नई दिल्ली ने अपना नाम अभिलाषा से बदलकर 'प्रांजल' रख लिया है। भविष्य में मुझे इसी नाम से जाना जाए और यही नाम प्रयोग हेतु भी मान्य होगा।

प्रांजल

कक्षा-दसवीं 'ब'

प्रश्न 14 : विद्यालय में वृक्षारोपण समारोह के आयोजन के लिए आपको संयोजक बनाया गया है। पूरे विद्यालय की सहभागिता के लिए एक सूचना लगभग 30 शब्दों में तैयार कीजिए। ***(CBSE 2015)***

उत्तर :

अ०ब०स० विद्यालय, कानपुर

सूचना

दिनांक : 18 जुलाई, 20XX

विषय—वृक्षारोपण समारोह।

सभी विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि दिनांक 20 जुलाई, 20XX को प्रातः 10:00 बजे हमारे विद्यालय में वृक्षारोपण समारोह का आयोजन किया जाएगा। इस समारोह में सभी विद्यार्थियों की सहभागिता आवश्यक है। वृक्षारोपण के लिए पौधे विद्यालय में ही उपलब्ध होंगे; अतः आप सभी से विनम्र निवेदन है कि वृक्षारोपण के इस शुभ कार्य में सहयोग दें।

रजत वर्मा

(छात्र संयोजक)

प्रश्न 15 : विद्यालय परिसर के बाहर अनधिकृत व्यक्तियों द्वारा स्वास्थ्य की दृष्टि से हानिकारक खाद्य वस्तुएँ बेची जाती हैं और विद्यार्थी उस ओर आकृष्ट होकर उन वस्तुओं को खरीदते हैं। विद्यालय के छात्रों को प्रमुख रूप से इन चीज़ों से दूर रहने की सलाह देते हुए एक सूचना लगभग 30 शब्दों में लिखिए। ***(CBSE 2015)***

उत्तर :

सेंट थॉमस पब्लिक स्कूल, भोपाल

सूचना

दिनांक : 15 जुलाई, 20XX

विषय—हानिकारक खाद्य वस्तुओं के संबंध में।

सभी विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि विद्यालय परिसर के बाहर अनधिकृत व्यक्तियों द्वारा स्वास्थ्य की दृष्टि से हानिकारक खाद्य वस्तुएँ बेची जा रही हैं, जिन्हें आप बहुत ही शौक से खाते हैं, परंतु आप यह नहीं जानते कि ऐसी वस्तुएँ आपके स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं।

अतः विद्यालय के सभी विद्यार्थियों को यह सलाह दी जाती है कि विद्यालय परिसर के बाहर बेची जाने वाली हानिकारक वस्तुओं से दूर रहें और अपने स्वास्थ्य की रक्षा करें।

राज शर्मा

(छात्र प्रमुख)

प्रश्न 16 : 'शिक्षक दिवस' के अवसर पर कार्यक्रम आयोजन करने के लिए आपको संयोजक बनाया गया है। कार्यक्रम के बारे में विद्यार्थियों की सभा के लिए एक सूचना लगभग 30 शब्दों में प्रस्तुत कीजिए। ***(CBSE 2015)***

उत्तर :

पाइन वुड पब्लिक स्कूल, नागपुर

सूचना

दिनांक : 30 अगस्त, 20XX

विषय—शिक्षक दिवस पर कार्यक्रम के आयोजन हेतु विचार-विमर्श।

सभी विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि विद्यालय में 'शिक्षक दिवस' के अवसर पर 5 सितंबर को आयोजित होने वाले कार्यक्रम पर विचार-विमर्श करने हेतु आज 1 बजे बारहवीं कक्षा के छात्र-सांस्कृतिक हॉल में उपस्थित हों। सभी की उपस्थिति अनिवार्य है। कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए सभी अपने-अपने सुझाव देने के लिए स्वतंत्र हैं।

साहिल मेहता

(छात्र संयोजक)

प्रश्न 17 : आपके विद्यालय में एक सप्ताह के लिए 'नेत्र चिकित्सा शिविर' लगाया जा रहा है, जिसमें निःशुल्क नेत्र परीक्षण किया जाएगा। स्थानीय जनता की सूचना के लिए 30 शब्दों में एक सूचना-पत्र लिखिए। *(CBSE 2015)*

उत्तर :

क॰ख॰ग॰ विद्यालय, हिसार

सूचना

दिनांक : 5 जनवरी, 20XX

विषय—नेत्र चिकित्सा शिविर।

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि विद्यालय द्वारा एक सात दिवसीय 'नेत्र चिकित्सा शिविर' का आयोजन किया जा रहा है। यह शिविर दिनांक 10 जनवरी, 20XX से 16 जनवरी, 20XX तक चलेगा। इसमें विशेषज्ञों द्वारा निःशुल्क नेत्र परीक्षण एवं उपचार किया जाएगा। स्थानीय लोग अधिकाधिक संख्या में शिविर का लाभ उठाएँ।

....

हस्ताक्षर

प्रधानाचार्य

प्रश्न 18 : विद्यालय के सूचना-पट के लिए 20-30 शब्दों में सूचना तैयार कीजिए कि शरदकालीन अवकाश के बाद 20 अक्टूबर को विद्यालय में हिंदी निबंध-लेखन प्रतियोगिता होगी। प्रतियोगिता की तैयारी के लिए हिंदी विभागाध्यक्षा डॉ० नीलम से संपर्क करें। *(CBSE 2015)*

उत्तर :

क॰ख॰ग॰ विद्यालय, हापुड़

सूचना

दिनांक : 5 अक्टूबर, 20XX

विषय—निबंध-लेखन प्रतियोगिता।

सभी विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि हमारे विद्यालय में एक निबंध-लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। यह प्रतियोगिता शरदकालीन अवकाश के बाद 20 अक्टूबर, 20XX को प्रातः 10 बजे से 12 बजे तक स्कूल के सभागार में आयोजित की जाएगी। प्रतियोगिता में भाग लेने के इच्छुक विद्यार्थी तैयारी के लिए हिंदी विभागाध्यक्षा डॉ॰ नीलम से संपर्क करें।

....

हस्ताक्षर

प्रधानाचार्य

प्रश्न 19 : आप जिस सोसाइटी में रहते हैं, वहाँ रहने वाले बच्चों से 26 जनवरी 'गणतंत्र दिवस' पर किसी सांस्कृतिक गतिविधि में भाग लेने के लिए आग्रह करते हुए सांस्कृतिक अधिकारी की ओर से 20-30 शब्दों में सूचना लिखिए। *(CBSE 2015)*

उत्तर :

अ॰ब॰स॰ सोसायटी, गाज़ियाबाद

सूचना

दिनांक : 10 जनवरी, 20XX

विषय—गणतंत्र दिवस समारोह पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन।

सोसाइटी में रहने वाले सभी बच्चों को सूचित किया जाता है कि 26 जनवरी 'गणतंत्र दिवस' के उपलक्ष्य में हमारी सोसाइटी में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है।

अतः सोसाइटी के सभी बच्चों से नम्र निवेदन है कि वे सांस्कृतिक गतिविधियों में बढ़-चढ़कर भाग लें और देश की संस्कृति को बनाए रखने में सहयोग दें।

....

हस्ताक्षर

सांस्कृतिक अधिकारी

प्रश्न 20 : आप शांति विद्या निकेतन, प्रशांत विहार, दिल्ली की छात्रा खुशी मेहरा हैं। विद्यालय में आपका परीक्षा प्रवेश-पत्र गुम हो गया है। इस विषय पर 20-30 शब्दों में सूचना लिखिए। *(CBSE 2016)*

अथवा

आप साहित्य संघ की सचिव सुपोरना चक्रवर्ती हैं। आपके क॰ख॰ग॰ विद्यालय में वाद-विवाद प्रतियोगिता आयोजित होने वाली है। इसके लिए एक सूचना लगभग 50 शब्दों में तैयार कीजिए। *(CBSE SQP 2021 Term-2)*

उत्तर :

शांति विद्या निकेतन, प्रशांत विहार, दिल्ली

सूचना

दिनांक : 28 जनवरी, 20XX

विषय—परीक्षा प्रवेश-पत्र गुम के संबंध में।

सभी छात्रों को सूचित किया जाता है कि 27 जनवरी, 20XX को विद्यालय के खेल परिसर में मेरा परीक्षा प्रवेश-पत्र कहीं गुम हो गया है। उस पर मेरी फोटो के साथ, मेरा अनुक्रमांक नं॰ 2321087 भी अंकित है। जिस किसी को भी मिले, वह मुझे लौटाने या विद्यालय के कार्यालय में जमा कराने की कृपा करें।

खुशी मेहरा

कक्षा दसवीं 'ब'

प्रश्न 21 : विद्यालय में आयोजित होने वाली वाद-विवाद प्रतियोगिता के लिए एक सूचना लगभग 30 शब्दों में साहित्यिक क्लब के सचिव की ओर से विद्यालय सूचना-पट के लिए लिखिए। *(CBSE 2016)*

अथवा

विद्यालय में आयोजित होने वाली वाद-विवाद प्रतियोगिता के लिए हिंदी विभाग के संयोजक की ओर से 25-30 शब्दों में एक सूचना तैयार कीजिए। *(CBSE 2019)*

अथवा

आप साहित्य संघ की सचिव सुपोरना चक्रवर्ती हैं। आपके क॰ख॰ग॰ विद्यालय में वाद-विवाद प्रतियोगिता आयोजित होने वाली है। इसके लिए एक सूचना लगभग 50 शब्दों में तैयार कीजिए। *(CBSE SQP 2021 Term-2)*

उत्तर :

क॰ख॰ग॰ विद्यालय, रुड़की

सूचना

दिनांक : 12 नवंबर, 20XX

विषय—वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन।

सभी विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि 20 नवंबर, 20XX को विद्यालय में एक वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। यह प्रतियोगिता 10 बजे से 12 बजे तक विद्यालय सभागार में आयोजित की जाएगी। इच्छुक विद्यार्थी हिंदी अध्यापक के पास अपना नामांकन करा दें।

....

हस्ताक्षर

अ॰ब॰स॰

सचिव (साहित्यिक क्लब)

प्रश्न 22 : विद्यालय में छुट्टी के दिनों में भी प्रातःकाल में योग की अभ्यास कक्षाएँ चलने की सूचना देते हुए इच्छुक विद्यार्थियों द्वारा अपना नाम देने हेतु सूचना-पट के लिए एक सूचना लगभग 30 शब्दों में लिखिए। *(CBSE 2017)*

उत्तर :

अ०ब०स० विद्यालय, सहारनपुर

सूचना

दिनांक : 18 मई, 20XX

विषय—प्रातःकालीन योग कक्षाओं का आयोजन।

सभी विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है 20 मई, 20XX से आरंभ होने वाले ग्रीष्मावकाश में विद्यालय के प्रार्थना-स्थल पर प्रतिदिन प्रातःकाल 7:00 बजे से योग की अभ्यास कक्षाएँ चलेंगी। योग कक्षाओं में प्रतिभाग करने के इच्छुक दो दिन के भीतर अपने नाम व्यायाम शिक्षक को अवश्य लिखा दें।

....

हस्ताक्षर

प्रधानाचार्य

प्रश्न 23 : विद्यालय में साहित्यिक क्लब के सचिव के रूप में 'प्राचीर' पत्रिका के लिए लेख, कविता, निबंध आदि विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत करने हेतु सूचना-पट के लिए एक सूचना लगभग 30 शब्दों में लिखिए। ***(CBSE 2017)***

उत्तर :

अ०ब०स० विद्यालय, बिजनौर

सूचना

दिनांक : 17 अगस्त, 20XX

विषय—'प्राचीर' पत्रिका हेतु रचना-आमंत्रण।

सभी विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि इस वर्ष की 'प्राचीर' पत्रिका में प्रकाशन हेतु लेख, निबंध, कविता आदि विधाओं से संबंधित रचनाएँ आमंत्रित की जाती हैं।

इच्छुक विद्यार्थी अपनी रचनाएँ 15 सितंबर, 20XX तक विषय संपादक के पास अवश्य जमा करा दें। रचनाएँ मौलिक होनी चाहिए।

....

हस्ताक्षर

सचिव (साहित्यिक क्लब)

प्रश्न 24 : विद्यालय की सांस्कृतिक संस्था 'रंगमंच' की सचिव लतिका की ओर से 'स्वरपरीक्षा' के लिए इच्छुक विद्यार्थियों को यथासमय उपस्थित रहने की सूचना लगभग 25-30 शब्दों में लिखिए। समय और स्थान का उल्लेख भी कीजिए। ***(CBSE 2018)***

उत्तर :

ए०बी०एस० पब्लिक स्कूल, जयपुर

सूचना

दिनांक : 25 अप्रैल, 20XX

विषय—रंगमंच की स्वरपरीक्षा का आयोजन।

सभी विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि विद्यालय में वर्षभर आयोजित होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रमों का संचालन करने हेतु विद्यालय की सांस्कृतिक संस्था 'रंगमंच' की ओर से 30 अप्रैल, 20XX को विद्यालय के संगीत हॉल में 'स्वरपरीक्षा' का आयोजन किया जा रहा है। स्वरपरीक्षा देने के इच्छुक 9 अप्रैल, 20XX तक संगीत अध्यापिका को अपना नाम अवश्य लिखा दें और नियत दिनांक पर प्रातः 8:00 बजे संगीत हॉल में उपस्थित हों।

....

हस्ताक्षर

लतिका

(सचिव, रंगमंच)

प्रश्न 25 : आप हिंदी छात्र परिषद के सचिव प्रगण्य हैं। आगामी सांस्कृतिक संध्या के बारे में अनुभागीय दीवार पट्टिका के लिए 25-30 शब्दों में सूचना तैयार कीजिए। ***(CBSE 2018)***

उत्तर :

हिंदी छात्र परिषद, क०ख०ग० विद्यालय

सूचना

दिनांक : 12 दिसंबर, 20XX

विषय-सांस्कृतिक संध्या।

सभी विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि दिनांक 25 दिसंबर 20XX को विद्यालय में एक सांस्कृतिक संध्या का आयोजन किया जा रहा है। यह कार्यक्रम शाम 6 : 00 बजे से 8 : 00 बजे तक विद्यालय के सभागार में आयोजित किया जाएगा। इसमें भाग लेने के इच्छुक विद्यार्थी परिषद सचिव को अपना नामांकन करा दें।

....

हस्ताक्षर

प्रगण्य

(सचिव, हिंदी छात्र परिषद)

प्रश्न 26 : आप अपने विद्यालय में सांस्कृतिक सचिव हैं। विद्यालय में होने वाली 'कविता-प्रतियोगिता' में भाग लेने के लिए आमंत्रण हेतु 25-30 शब्दों में एक सूचना तैयार कीजिए। ***(CBSE 2019)***

उत्तर :

क०ख०ग० विद्यालय

सूचना

दिनांक : 10 अक्टूबर, 20XX

विषय—कविता प्रतियोगिता।

सभी विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि दिनांक 22 अक्टूबर, 20XX को विद्यालय में 'हिंदी प्रतियोगिता' का आयोजन किया जा रहा है। इसमें भाग लेने के इच्छुक विद्यार्थी अपना नाम 15 अक्टूबर, 20XX तक हिंदी अध्यापक को अंकित करा दें।

....

हस्ताक्षर

सांस्कृतिक सचिव

प्रश्न 27 : अपनी बस्ती को स्वच्छ रखने हेतु कल्याण समिति के सचिव होने के नाते इससे संबंधित सूचना 40-50 शब्दों में लिखिए। ***(CBSE 2020)***

उत्तर :

कल्याण समिति, चाणक्य पुरी

सूचना

दिनांक : 12 जनवरी, 20XX

विषय—बस्ती की स्वच्छता।

समस्त बस्तीवासियों को सूचित किया जाता है कि आगामी रविवार को प्रातः 10.00 बजे बस्ती की सफ़ाई के लिए सामूहिक स्वच्छता कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। अधिक-से-अधिक संख्या में आकर सहयोग करें और कार्यक्रम को सफल बनाएँ।

रवि गुप्ता (सचिव)

कल्याण समिति

प्रश्न 28 : आप अपने विद्यालय की छात्र संस्था के सचिव हैं तथा विद्यालय में 'चित्रकला प्रतियोगिता' आयोजित करवाना चाहते हैं। इससे संबंधित सूचना 40-50 शब्दों में लिखिए। ***(CBSE 2020)***

उत्तर :

क० ख० ग० विद्यालय, कानपुर

सूचना

दिनांक : सितंबर, 20XX

विषय—चित्रकला प्रतियोगिता।

सभी विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि 30 सितंबर, 20XX को प्रातः 10 बजे विद्यालय के सभागार में चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। इसमें भाग लेने के इच्छुक विद्यार्थी कला अध्यापक को अपना नामांकन करा दें।

राहुल

(सचिव, छात्र संस्था)

प्रश्न 29 : विद्यालय के वार्षिकोत्सव समारोह के आयोजन के लिए आपको संयोजक बनाया गया है। विद्यालय की ओर से सभी विद्यार्थियों के लिए लगभग 30-40 शब्दों में एक सूचना तैयार कीजिए। ***(CBSE SQP 2021)***

उत्तर :

क० ख० ग० विद्यालय, करनाल

सूचना

दिनांक : 20 अक्टूबर, 20XX

विषय—वार्षिकोत्सव का आयोजन

सभी विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि दिनांक 28 अक्टूबर, 20XX को विद्यालय में वार्षिकोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रमों और अन्य प्रतियोगिताओं में भाग लेने के इच्छुक छात्र सांस्कृतिक सचिव को अपना नामांकन 24 अक्टूबर, 20XX तक अवश्य करा दें।

....

हस्ताक्षर

संयोजक

प्रश्न 30 : विद्यालय में छुट्टी के उपरांत फुटबॉल खेलना सीखने की विशेष कक्षाएँ आयोजित की जाएँगी। इच्छुक विद्यार्थियों द्वारा अपना नाम देने हेतु सूचना-पट्ट के लिए लगभग 30-40 शब्दों में एक सूचना तैयार कीजिए। ***(CBSE SQP 2021)***

उत्तर :

अ० ब० स० विद्यालय, पटना

सूचना

दिनांक : 10 अगस्त, 20XX

विषय—फुटबाल प्रशिक्षण

सभी विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि 16 अगस्त, 20XX से विद्यालय में छुट्टी के पश्चात् फुटबाल खेलना सीखने की विशेष कक्षाओं का आयोजन किया जा रहा है। इच्छुक विद्यार्थी खेल शिक्षक को अपना नामांकन करा दें।

....

हस्ताक्षर

प्रधानाचार्य

प्रश्न 31 : आप विनीत/विनीता हैं। आप 'निवासी कल्याण संघ' के सचिव हैं। सोसायटी के निवासियों की सुरक्षा हेतु कैमरे लगवाए गए हैं। इसकी सूचना देते हुए लगभग 50 शब्दों में सूचना लिखिए। ***(CBSE 2022 Term-2)***

उत्तर :

निवासी कल्याण संघ सूचना

दिनांकः 10 मई, 20XX

विषय-सोसायटी में सुरक्षा कैमरों की व्यवस्था।

सोसायटी के सभी निवासियों को सूचित किया जाता है कि आप सभी की सुरक्षा हेतु सोसायटी में कई स्थानों पर सी०सी० टीवी कैमरे लगवाए गए हैं। आप स्वयं भी अपनी सुरक्षा का ध्यान रखें।

हस्ताक्षर,

विनीत

(सचिव, निवासी कल्याण संघ)

प्रश्न 32 : आप जॉनसन/जानकी हैं। विद्यालय की कैंटीन में आपको एक घड़ी मिली है। 'खोया पाया' विभाग को जानकारी देने के लिए सूचना लगभग 50 शब्दों में तैयार कीजिए। ***(CBSE 2022 Term-2)***

उत्तर :

अ०ब०स०विद्यालय

सूचना

दिनांक : 5 अगस्त, 20XX

विषय- खोया-पाया।

सभी विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि मुझे विद्यालय की कैंटीन में एक टाइटन घड़ी पड़ी मिली है। मैंने उसे विद्यालय के 'खोया-पाया' विभाग में जमा करा दिया है। जिस किसी की भी यह घड़ी है, वह पहचान बताकर 'खोया-पाया' विभाग से प्राप्त कर सकता है।

....

हस्ताक्षर

जानकी (छात्रा)

प्रश्न 33 : आप अपने विद्यालय में इको क्लब के अध्यक्ष हैं। पर्यावरण दिवस के लिए आप विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन करना चाहते हैं। इको क्लब के सभी सदस्यों की सभी इसी संदर्भ में आयोजित करने के लिए विद्यालय के सूचनापट्ट के लिए एक सूचना-पत्र लगभग 50 शब्दों में तैयार कीजिए।

उत्तर :

इको क्लब, अ०ब०स० विद्यालय सूचना

दिनांक : 28 मई, 20XX

विषय—पर्यावरण दिवस पर कार्यक्रमों का आयोजन।

सभी विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि विद्यालय का इको क्लब पर्यावरण दिवस पर भाषण, कविता, नाटक आदि। विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन करने जा रहा है। इन कार्यक्रमों में भाग लेने के इच्छुक छात्र क्लब के अध्यक्ष को अपना नामांकन करा दें।

....

हस्ताक्षर,

(अध्यक्ष, इको क्लब)

विज्ञापन-लेखन

विज्ञापन-लेखन

साधारण भाषा में विज्ञापन का आशय वस्तु या उत्पाद के संबंध में विशेष जानकारी प्रदान करने के ढंग से लगाया जाता है, लेकिन यह विचारधारा स्वयं में अपूर्ण है। वर्तमान में विज्ञापन का क्षेत्र काफी व्यापक होता जा रहा है। आजकल विज्ञापन में उन सभी क्रियाओं को शामिल किया जाता है, जिनके द्वारा ग्राहकों को वस्तुओं तथा सेवाओं से संबंधित जानकारी प्रदान करने के साथ-साथ उन्हें क्रय करने हेतु प्रेरित किया जाता है। वास्तव में ''विज्ञापन एक ऐसा साधन है, जिसके द्वारा ग्राहकों को वस्तुओं अथवा सेवाओं के संबंध में जानकारी दी जाती है और उन्हें क्रय करने के लिए प्रेरित एवं आकर्षित किया जाता है।''

विज्ञापन के उद्देश्य

- उत्पादों का परिचय कराना।
- उपभोक्ताओं का ध्यान उत्पाद की ओर आकर्षित करना।
- उत्पादों में रुचि उत्पन्न करना।
- उत्पादों के प्रति विश्वास उत्पन्न करना।
- उपभोक्ताओं को उत्पादों की आवश्यकता का अनुभव कराना।
- उपभोक्ताओं में वस्तुओं की क्रय-इच्छा उत्पन्न करके उन्हें बाज़ार तक खींच लाना।
- उत्पादों के विक्रय में वृद्धि करना।
- उत्पादों का तुलनात्मक विवरण प्रस्तुत करके वस्तुओं के चयन में उपभोक्ताओं की मदद करना।
- उत्पादक तथा उपभोक्ता के मध्य अच्छे संबंध बनाना।
- उत्पादों का व्यापक प्रचार करना।
- उत्पाद एवं उत्पादक की प्रतिष्ठा में वृद्धि करना।
- उत्पादों के प्रति उपभोक्ताओं के मन में वैज्ञानिक और तार्किक दृष्टिकोण विकसित करना।
- उत्पादकों की आकर्षक योजनाओं से उपभोक्ताओं को परिचित कराकर उन्हें उत्पादों के प्रति आकर्षित करना।
- उत्पादकों के लाभ में वृद्धि करना।
- अपनी सेवा, संस्था या उद्योग के लिए उपयुक्त लोगों को खोजना।

विज्ञापन की आवश्यकता

- बाज़ार में लुप्त होने के कगार पर स्थित उपयोगी उत्पादों को पुनर्जीवित करने के लिए।
- नए उत्पादों अथवा विचारों को प्रोन्नत करके उनका बाज़ार विकसित करने के लिए।
- अपनी पुरानी साख को कायम रखने के लिए।
- सीधे उपभोक्ताओं तक अपनी पहुँच बनाने के लिए।
- अपने उत्पादों की विशेषताओं से उपभोक्ताओं को परिचित कराने के लिए।
- अपने उत्पादों के प्रति उपभोक्ताओं का विश्वास कायम करने के लिए।
- अपने प्रतियोगियों के विरोधी तर्कों का स्पष्टीकरण करके स्वयं को स्थापित करने के लिए।
- अपने उत्पादों के संबंध में किए गए दावों की पुष्टि करने और उपभोक्ताओं को उसे परखने हेतु प्रेरित करने के लिए।
- अपने उत्पादों की उच्च गुणवत्ता के प्रति जनमत-निर्माण के लिए।
- बाज़ार पर अपना आधिपत्य स्थापित करने के लिए।
- अपने बाज़ार को विस्तार और स्थायित्व प्रदान करने के लिए।

विज्ञापन में ध्यान रखने योग्य प्रमुख बातें

- विज्ञापन में सादगी होनी चाहिए, भड़काऊपन नहीं। यद्यपि आज के अधिकांश विज्ञापन भड़काऊ ही होते हैं।
- विज्ञापन में वस्तु-विन्यास की मौलिकता और नूतनता होनी चाहिए।
- विज्ञापन के ले-आउट में संतुलन और आकर्षण होना चाहिए।
- विज्ञापन के ले-आउट में प्रदर्शित वस्तुओं अथवा उसमें प्रयुक्त अक्षरों के आकार-प्रकार में एक लय होनी चाहिए। शब्दों का प्रयोग कम-से-कम होना चाहिए।
- लिखित विज्ञापन में बात संक्षिप्त और छोटे-छोटे वाक्यों में होनी चाहिए।
- विज्ञापन में केवल काम की तथ्यात्मक बातें ही लिखी जानी चाहिए।
- विज्ञापन में कोई भी नकारात्मक पक्ष नहीं होना चाहिए।
- विज्ञापन में किसी भी प्रकार की अश्लीलता का प्रदर्शन नहीं होना चाहिए।
- विज्ञापन सूचनाप्रद होना चाहिए।
- विज्ञापन का संदेश या नारा विशेष रूप से रेखांकित होना चाहिए।
- व्यवसाय का नाम या व्यापारिक चिह्न (लोगो) विज्ञापन के आकारानुसार उपयुक्त स्थान पर अंकित होना चाहिए, जिससे वह अपने ब्रांड-नेम को स्थापित कर सके।
- विज्ञापन का लोगो इतना आकर्षक और सरल होना चाहिए कि उपभोक्ताओं के मस्तिष्क में उसकी छवि सरलता से स्थायी रूप से रच-बस जाए।
- विज्ञापन ऐसा हो कि वह उपभोक्ताओं को आकर्षित तथा प्रभावित कर सके।
- विज्ञापन में मूल विषयवस्तु का ही प्रचार-प्रसार होना चाहिए।
- विज्ञापन का संदेश बेहद स्पष्ट होना चाहिए।
- विज्ञापन की भाषा रोचक, संक्षिप्त तथा आकर्षक होनी चाहिए। उसमें तुक का प्रयोग भी किया जा सकता है।

विज्ञापन के प्रकार

जिन आधारों पर विज्ञापनों के भेद किए जाते हैं, उनमें से प्रमुख आधार इस प्रकार हैं–

माध्यम के आधार पर

- प्रिंट मीडिया के विज्ञापन
- डिस्प्ले विज्ञापन
- वर्गीकृत विज्ञापन
- वर्गीकृत डिस्प्ले विज्ञापन
- समाचार विज्ञापन
- इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के विज्ञापन
- प्रायोजित विज्ञापन
- समय विज्ञापन
- चलचित्र विज्ञापन
- अन्य विज्ञापन

प्रस्तुतीकरण के आधार पर

- मौखिक विज्ञापन
- लिखित विज्ञापन

उद्देश्य के आधार पर

- सूचनाप्रद विज्ञापन
- अनुनेय विज्ञापन
- वित्तीय विज्ञापन
- संस्थानिक विज्ञापन
- वर्गीकृत विज्ञापन
- औद्योगिक विज्ञापन
- सरकारी विज्ञापन

निर्देश–निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर 25-50 शब्दों में विज्ञापन तैयार कीजिए।

1. योग को बढ़ावा देते हुए एक आकर्षक विज्ञापन लगभग 40 शब्दों में तैयार कीजिए। *(CBSE SQP 2023-24)*

   उत्तर :

2. अंतरराष्ट्रीय पोषक अनाज वर्ष 2023 के प्रचार-प्रसार के लिए एक आकर्षक विज्ञापन लगभग 40 शब्दों में तैयार कीजिए। *(CBSE SQP 2023-24)*

   उत्तर :

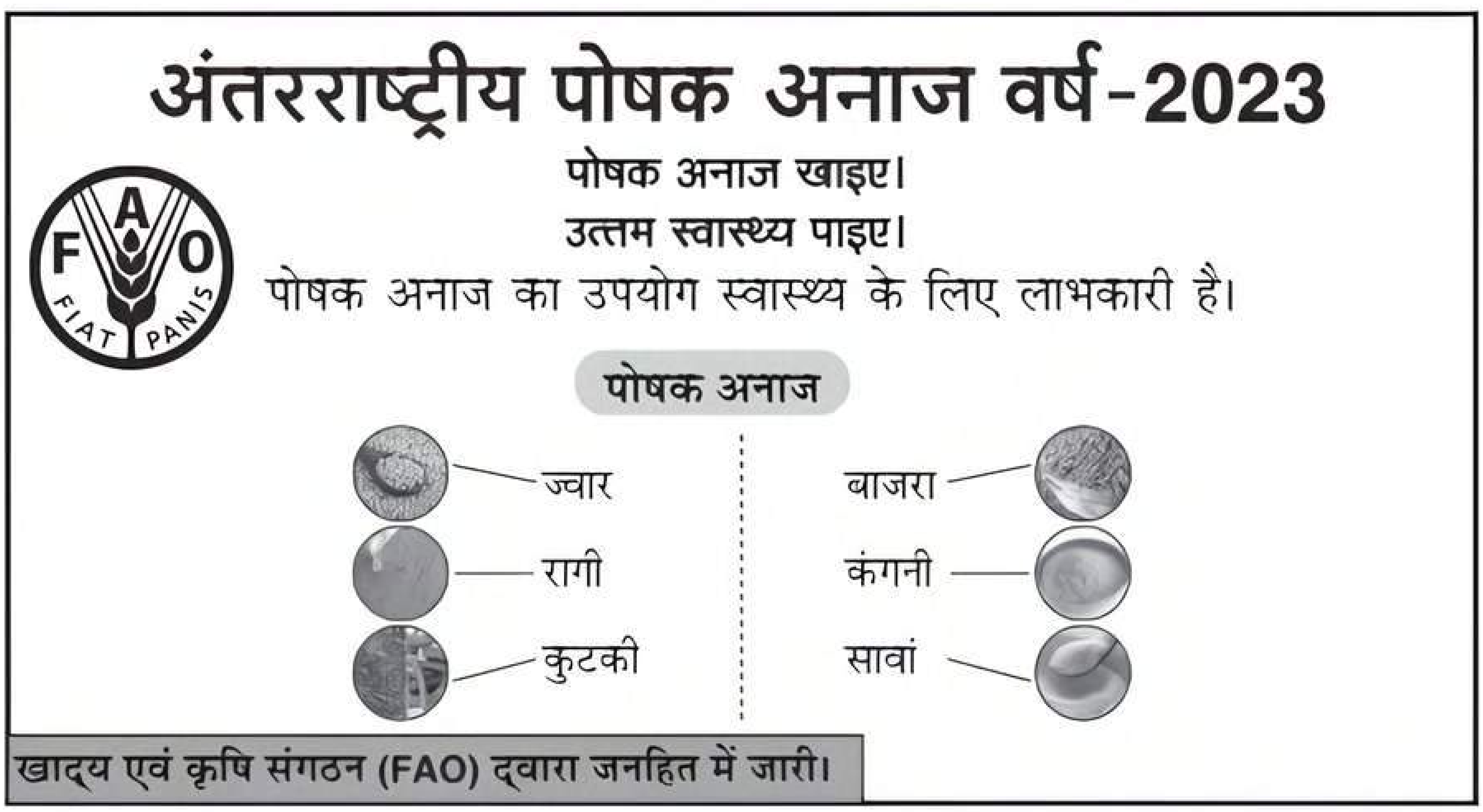

3. गांधी जयंती के अवसर पर खादी वस्त्रों पर 20% की छूट का उल्लेख करते हुए 'अ०ब०स० वस्त्र भंडार' की ओर से लगभग 60 शब्दों में एक आकर्षक विज्ञापन तैयार कीजिए। *(CBSE 2023)*

उत्तर :

4. डेंगू-मलेरिया के प्रकोप से बचाव हेतु लोगों में जागरूकता बढ़ाने के लिए स्वास्थ्य मंत्रालय की ओर से एक आकर्षक विज्ञापन तैयार कीजिए। *(CBSE 2023)*

उत्तर :

5. नगर में होने वाले दशहरा मेला के अवसर पर स्वयंसेवी युवकों की आवश्यकता का एक विज्ञापन लगभग 25 शब्दों में तैयार कीजिए। *(CBSE 2015)*

उत्तर :

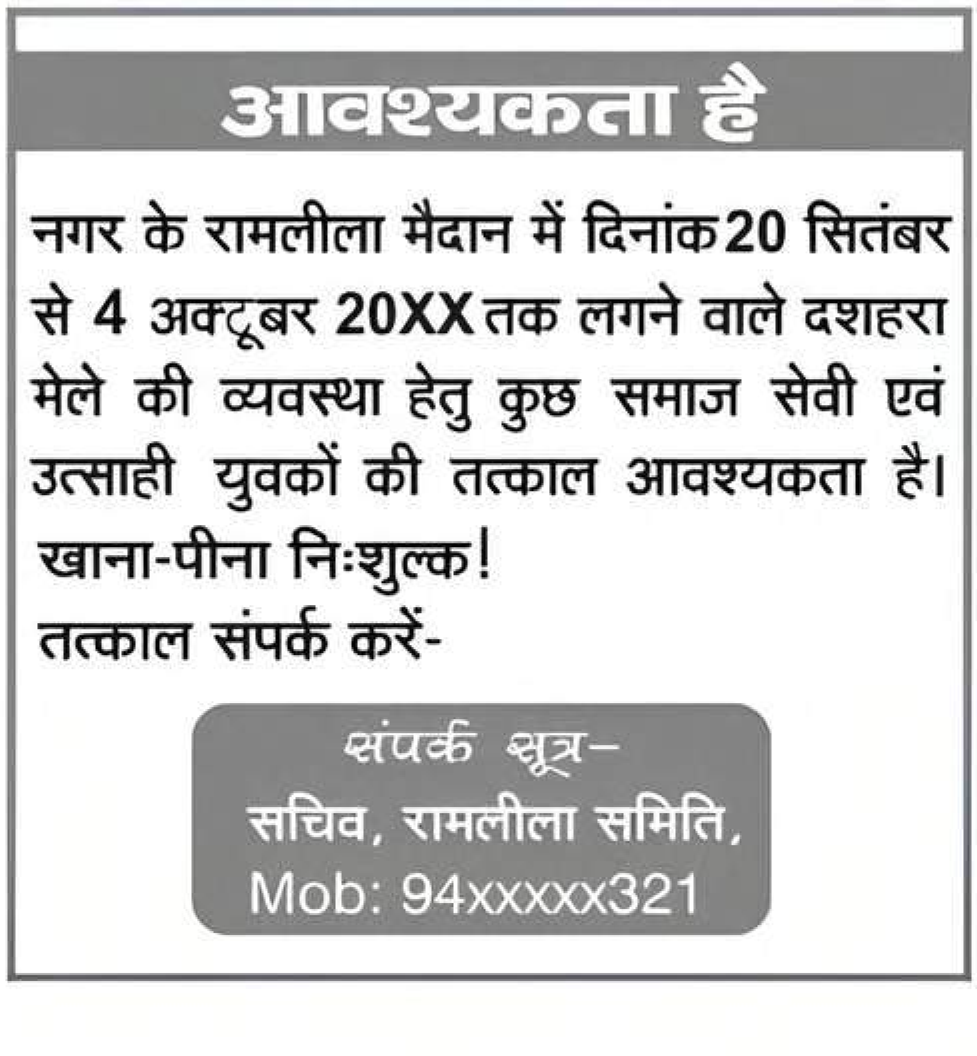

6. हिंदी की पुस्तकों की प्रदर्शनी में आधे मूल्य पर बिक रही महत्त्वपूर्ण पुस्तकों को खरीदकर लाभ उठाने के लिए लगभग 25 शब्दों में एक विज्ञापन लिखिए। *(CBSE 2015)*

उत्तर :

7. जूते बनाने वाली एक अंतरराष्ट्रीय कंपनी के लिए विज्ञापन तैयार कीजिए। *(CBSE 2016)*

उत्तर :

8. सोलर पंखे बनाने वाली संस्था सूर्य-शक्ति के प्रचार-प्रसार के लिए एक आकर्षक विज्ञापन तैयार कीजिए। *(CBSE 2023)*

उत्तर :

9. सड़क पर टहलते हुए आपको एक बैग मिला, जिसमें कुछ रुपये, मोबाइल फ़ोन तथा अन्य कई महत्त्वपूर्ण कागज़ात थे। लगभग 25 शब्दों में एक विज्ञापन तैयार कीजिए कि अधिकारी व्यक्ति संपर्क कर अपना बैग ले जाए। *(CBSE 2017)*

उत्तर :

खोया-पाया

कल सुबह मुझे बिजली बंबा बाईपास पर टहलते हुए चमड़े का एक काला बैग पड़ा हुआ मिला, जिसमें कुछ रुपये, एक मोबाइल फ़ोन तथा बैंक आदि से संबंधित कई महत्त्वपूर्ण कागज़ात हैं। जिस किसी का भी वह बैग है, उसकी पहचान बताकर मुझसे प्राप्त कर ले।

शांतनु कुमार

मो० 90XXXXX321

10. 'क०ख०ग०' कंपनी द्वारा निर्मित जल की विशेषताएँ बताते हुए एक विज्ञापन का आलेख लगभग 25 शब्दों में तैयार कीजिए। *(CBSE 2017)*

उत्तर :

11. अपने विद्यालय की संस्था 'पहरेदार' की ओर से जल का दुरुपयोग रोकने का आग्रह करते हुए लगभग 50 शब्दों में एक विज्ञापन का आलेख तैयार कीजिए। *(CBSE 2018)*

उत्तर :

12. विद्यालय की कलावीथि में कुछ चित्र (पेंटिंग्स) बिक्री के लिए उपलब्ध हैं। इसके लिए एक विज्ञापन लगभग 50 शब्दों में लिखिए। *(CBSE 2018)*

उत्तर :

13. आप एक अच्छे चित्रकार हैं। अपने चित्रों की प्रदर्शनी के लिए लगभग 50 शब्दों में एक विज्ञापन तैयार कीजिए। *(CBSE 2019)*

उत्तर :

14. अपनी पुरानी साइकिल की बिक्री के लिए 50 शब्दों में एक आकर्षक विज्ञापन तैयार कीजिए। *(CBSE 2019)*

उत्तर :

15. अपने विद्यालय में होने वाले निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर के आयोजन से संबंधित विज्ञापन लगभग 25-50 शब्दों में तैयार कीजिए। *(CBSE 2020)*

उत्तर :

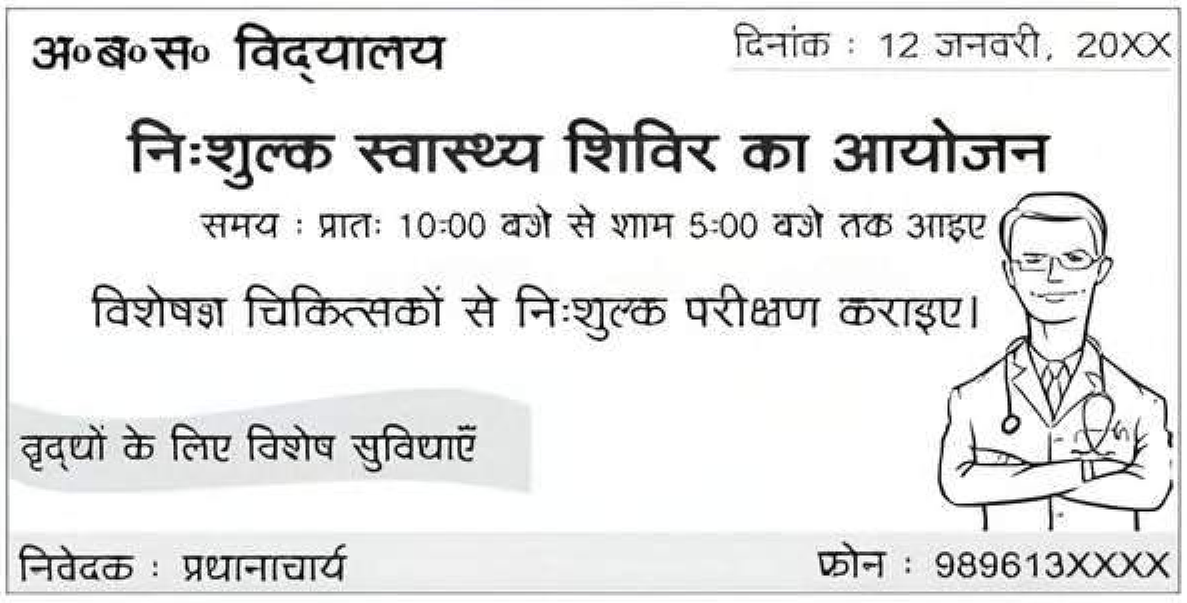

16. आप अपना कंप्यूटर बेचना चाहते हैं। इससे संबंधित विज्ञापन लगभग 25-50 शब्दों में तैयार कीजिए। *(CBSE 2020)*

उत्तर :

17. विद्यालय के 'अहंग समूह' द्वारा प्रस्तुत ताजमहल नाटक के बारे में नाम, पात्र, दिन, समय, टिकट आदि की सूचना देते हुए लगभग 25-50 शब्दों में एक विज्ञापन तैयार कीजिए। *(CBSE SQP 2020)*

उत्तर :

18. अपनी दुकान को किराए पर उठाने के लिए लगभग 25-50 शब्दों में एक विज्ञान तैयार कीजिए। *(CBSE SQP 2020)*

उत्तर :

19. स्वच्छता के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए सरकार की ओर से विज्ञापन लगभग 50 शब्दों में तैयार कीजिए। *(CBSE SQP 2021 Term-2)*

उत्तर :

20. आपकी कक्षा को विद्यालय के मेले के लिए हस्तनिर्मित सामग्री और चित्रों की प्रदर्शनी लगानी है। अपनी प्रदर्शनी के लिए लगभग 50 शब्दों में एक विज्ञापन तैयार कीजिए। *(CBSE SQP 2021 Term-2)*

उत्तर :

21. गर्मी की छुट्टियों में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय द्वारा बच्चों के लिए इक्कीस दिवसीय नाट्य कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है। इसके लिए एक विज्ञापन लगभग 50 शब्दों में तैयार कीजिए। *(CBSE 2022 Term-2)*

उत्तर :

ग्रीष्मावकाश में

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय

द्वारा

इक्कीस दिवसीय कार्यशाला का

आयोजन

विशेषज्ञों द्वारा बच्चों को अभिनय

कला का प्रशिक्षण दिया जाएगा।

आइए!

ग्रीष्मावकाश का लाभ उठाइए।

अभिनय का प्रशिक्षण पाइए।

संपर्क सूत्र- 98971712XX

22. अ०ब०स० कंपनी द्वारा त्योहारों के अवसर पर बिजली के उपकरणों की बिक्री पर 25% तक की छूट दी जा रही है। इसके लिए एक विज्ञापन लगभग 50 शब्दों में तैयार कीजिए। *(CBSE SQP 2022 Term-1)*

उत्तर :

लघुकथा-लेखन

लघुकथा का स्वरूप

लघुकथा शब्द 'लघु' और 'कथा' इन दो शब्दों से मिलकर बना है, जिसका अर्थ है–छोटी कथा। लघुकथा साहित्य की एक नवीन विधा है। यह आकार में लघु अवश्य होती है, लेकिन इसमें कथा–तत्त्व पूर्णतः समाहित रहता है। लघुता ही इसकी मुख्य विशेषता है। लघुकथा के आकार को समझाने के लिए हम कह सकते हैं कि लघुकथा से बड़ी होती है–कहानी, कहानी से बड़ा होता है–उपन्यास और उपन्यास से बड़ा होता है–ग्रंथ। उपन्यास संपूर्ण जीवन की, कहानी, जीवन के किसी खंड का और लघुकथा खंड के किसी विशेष क्षण का चित्र है।

लघुकथा की परिभाषा

अनेक विद्वानों ने अपने-अपने मतानुसार, लघुकथा को परिभाषित किया है। उन सभी परिभाषाओं के समन्वित रूप में लघुकथा की परिभाषा इस प्रकार है– "लघुकथा जीवन के किसी एक खंड, विशेष क्षण, मनःस्थिति या विचार, घटना की वह तीखी अभिव्यक्ति है, जो अपनी प्रखरता और प्रभावोत्पादकता से पाठक की चेतना को उद्दीप्त करके उसे गहन चिंतन के लिए विवश कर देती है।" लघुकथा विसंगतियों की कोख से जन्म लेती है। किसी विशेष परिस्थिति या घटना को जब लेखक अपनी कल्पना का पुट देकर लिपिबद्ध कर देता है, जब लघुकथा का जन्म होता है।

लघुकथा और कहानी में अंतर

लघुकथा और कहानी दोनों ही कथात्मक विधाएँ हैं, लेकिन दोनों में निम्नलिखित तात्विक भेद हैं–

- कहानी में कथानक का आदि, मध्य और अंत होता है, जबकि लघुकथा में कथानक का यह गठन नहीं होता।
- कहानी में घटनाओं की योजना होती है और कथानक का चरम विकास किया जाता है, जबकि लघुकथा में यह अनिवार्य नहीं है।
- कहानी में वातावरण की योजना की जाती है, जबकि लघुकथा में इसका अवकाश ही नहीं होता।
- कहानी में कथोपकथन की अनिवार्यता है, जबकि लघुकथा में इसकी कोई अनिवार्यता नहीं है।
- लघुकथा की महत्त्वपूर्ण शैली संकेतात्मकता है, जबकि कहानी में इसका सामान्यतः अभाव रहता है।

लघुकथा के प्रकार

लघुकथाएँ सामान्यतः दो प्रकार की होती हैं–

1. दृष्टांतमूलक लघुकथा–इन लघुकथाओं में किसी-न-किसी दृष्टांत के द्वारा कथ्य की अभिव्यक्ति की जाती है।

2. अनुभवमूलक लघुकथा–इन लघुकथाओं में बिना किसी दृष्टांत के अनुभव के द्वारा मार्मिक भावों को प्रकट किया जाता है।

लघुकथा की विशेषताएँ

लघुकथा की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं–

(i) लघुता

(ii) कथात्मकता

(iii) व्यंग्यात्मकता/भावात्मकता

(iv) तीक्ष्ण संप्रेषणीयता एवं प्रभावोत्पादकता

(v) यथार्थ-चित्रण एवं मार्मिक चोट करना

(vi) सूक्ष्मतम संवेदना की अभिव्यक्ति

(vii) आधुनिकता-बोध

इन विशेषताओं के आधार पर हम कह सकते हैं कि लघुकथा लाघवयुक्त कथात्मक विधा है, जिसमें यथार्थ अपने संपूर्ण रूप में मार्मिकता के साथ अभिव्यक्त रहता है। इसे व्यंग्य द्वार कटु तीक्त शैली में उभारा जाता है। आधुनिकताबोध लिए इन लघु कथाओं में संवेदना को प्रभावपूर्णता के साथ व्यक्त किया जाता है। तीक्ष्ण संप्रेषणीयता इसकी विशिष्ट पहचान है। इन्हीं विशेषताओं के कारण लघुकथा आज लोकप्रिय विधा बन सकी है।

लघुकथा-लेखन के आवश्यक अंग

लघुकथा-लेखन के महत्त्वपूर्ण अंग निम्नलिखित हैं–

1. **कथानक**–कथानक का तात्पर्य है–'क्या कहना है।' लघुकथा-लेखन में यह एक महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया है। यह रचनाकार के अनुभव, समझ और विश्लेषणात्मक दृष्टि पर निर्भर करती है।

2. **उद्देश्य**–लघुकथाकार को लघुकथा का उद्देश्य निश्चित करना पड़ता है। यह लघुकथा-लेखन की दूसरी महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया है। कुछ लघुकथाओं में उद्देश्य अंत तक स्पष्ट नहीं हो पाता। यह उचित नहीं है।

3. **भाषा**–भाषा लघुकथा-लेखन का तीसरा महत्त्वपूर्ण अंग है। भाषा जितनी सरल होगी तथा शब्दों का चुनाव जितना सटीक होगा, रचना उतनी ही प्रभावशाली होगी। भाषा पात्र और परिस्थिति के अनुकूल होनी चाहिए।

4. **शिल्प**–इसका संबंध रचनाकार की कुशलता से है। एक कुशल रचनाकार, काट-छाँट के द्वारा लघुकथा को प्रभावशाली बना लेता है। भवन निर्माण में जो महत्त्व शिल्पकला का है, लघुकथा लेखन में वही महत्त्व शिल्प का है।

5. **शैली**–यह लघुकथा-लेखन का महत्त्वपूर्ण पहलू है। उत्कृष्ट शब्द-संयोजन एवं उत्तम भाव संप्रेषण लघुकथा शैली की जान है। विद्वानों का मानना है कि सशक्त शैली कथानक, शिल्प और भाषा की कमी को पूरा कर देती है। अतः लघुकथाकार को शैली पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

6. **शीर्षक**–शीर्षक लघुकथा का महत्त्वपूर्ण अंग है, लेकिन दुर्भाग्य से यह उपेक्षित है। यदि शीर्षक का चुनाव गंभीरता से किया जाए तो यह पूरी कहानी को व्यक्त करने में समर्थ होता है। लेखक को शीर्षक का चुनाव बहुत सोच-समझकर करना चाहिए। आकर्षक और सारगर्भित शीर्षक लघुकथा की सुंदरता को चार चाँद लगा देता है।

7. **लघुकथा का अंत**–लघुकथा का समापन करना एक बहुत बड़ा कौशल है। अधिकतर लघुकथाएँ अपने कलात्मक अंत के कारण ही पाठकों को प्रभावित करने में सफल रहती हैं। लघुकथा का अंत ऐसा होना चाहिए, जो पाठकों के सामने इतने प्रश्न चिह्न छोड़ जाए कि वे चिंतन के लिए विवश हो जाएँ।

लघुकथा-लेखन के लिए ध्यान रखने योग्य बातें

लघुकथा-लेखन में निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए–

- लघुकथा में लघुता का विशेष ध्यान रखना चाहिए।
- लघुता के साथ-साथ कथा-तत्त्व का होना भी आवश्यक है।
- अनावश्यक विवरण और विस्तार से बचना चाहिए।
- पात्रों की संख्या पर नियंत्रण रखना चाहिए।
- शीर्षक का चुनाव बहुत सोच-समझकर करना चाहिए।
- लघुकथा-लेखक को भाषण देने से बचना चाहिए तथा जो कहना है वह पात्रों और परिस्थिति के माध्यम से कहना चाहिए।
- लघुकथा को प्रभावशाली और दीर्घजीवी बनाने का प्रयास करना चाहिए।
- व्यंग्य में तीखापन होना चाहिए।
- लघुकथा में नवीनता और स्पष्टता होनी चाहिए।
- लघुकथा का अंत प्रभावशाली होना चाहिए।

निर्देश–निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर 100-120 शब्दों में लघुकथा-लेखन कीजिए।

1. संघर्ष का महत्त्व

मिट्टी ने घट से पूछा–"मैं भी मिट्टी तू भी मिट्टी, लेकिन पानी मुझे बहाकर ले जाता है और तुम पानी को अपने अंदर समा लेते हो। पानी तुम्हें गला भी नहीं पाता। ऐसा क्यों है?" घट ने हँसकर कहा–"तुम्हारी बात सत्य है कि हम दोनों मिट्टी हैं, लेकिन मेरा जीवन संघर्षपूर्ण है। मुझे पहले पानी में भिगोया गया, पैरों से रौंदा गया, फिर कुम्हार ने चाक पर चढ़ाया। मैंने थपकी की चोट और आग की तपन को सहन किया। इस प्रकार संघर्ष को झेलकर मैंने पानी को अपने अंदर भर लेने की ताकत पाई है।

मंदिर की सीढ़ियों पर जड़े पत्थर ने मूर्ति के पत्थर से पूछा–"भाई तू भी पत्थर मैं भी पत्थर, लेकिन लोग तेरी पूजा करते हैं और मुझे पैरों से रौंदकर चले जाते हैं। ऐसा क्यों है?" मूर्ति के पत्थर ने उत्तर दिया–"इसका कारण यह है कि मैंने जीवन में संघर्ष किया है। अपने शरीर पर छैनियों का प्रहार सहन किया। मुझे काटा और तराशा गया। इस प्रकार संघर्ष का कष्ट झेलकर मैं इस रूप में आया हूँ। 'संघर्ष की आग में तपकर ही जीवन स्वर्ण बनता है।'

2. अर्जुन या एकलव्य

अध्यापक ने बच्चों को अर्जुन और एकलव्य की कहानी सुनाई और पूछा–"तुम एकलव्य बनोगे या अर्जुन?" सभी बच्चों ने एक स्वर में उत्तर दिया–"अर्जुन।" अध्यापक बच्चों की समझदारी पर बहुत खुश हुए। तभी उनकी दृष्टि कोने में बैठे उस बच्चे पर पड़ी, जो उत्तर देने के बजाय मौन बैठा रहा था। अध्यापक ने उससे पूछा–"रवि तुम अर्जुन बनोगे या एकलव्य?" "एकलव्य!" उसका उत्तर सुनकर कक्षा के सभी बच्चे हँसने लगे। "बेटा, तुम एकलव्य क्यों बनना चाहते हो, अर्जुन क्यों नहीं?" अध्यापक ने पूछा। रवि ने दृढ़ता से कहा–"श्रीमान जी, अर्जुन सब सुविधाएँ पाकर भी गलतियाँ कर देता था, लेकिन एकलव्य सुविधाहीन होते हुए भी कभी गलती नहीं करता था। उसका निशाना कभी नहीं चूकता था। कौन अधिक श्रेष्ठ हुआ, अर्जुन या एकलव्य?" अध्यापक के सामने एक नया 'एकलव्य' खड़ा था। अब अध्यापक क्या करने वाले थे?

3. समाधान

एक बूढ़ा व्यक्ति था। उसकी दो पुत्रियाँ थीं। बड़ी का विवाह कुम्हार के साथ हुआ और छोटी का एक किसान के साथ। एक बार वह पिता अपनी दोनों पुत्रियों से मिलने गया। पहले वह बड़ी पुत्री के पास गया, जिसका विवाह कुम्हार के साथ हुआ था। उसका हालचाल पूछा तो उसने कहा कि इस बार हमने परिश्रम करके बहुत सारा सामान तैयार किया है। यदि वर्षा न आए तो हमारा कारोबार खूब चलेगा। पिताजी, आप भगवान से प्रार्थना कीजिए कि वर्षा न हो।

इसके बाद वह किसान पति वाली छोटी पुत्री के घर गया और उसका हालचाल पूछा। पुत्री ने कहा कि इस बार हमने खेतों में बहुत परिश्रम किया है। फ़सल अच्छी है। यदि वर्षा अच्छी हुई–तो बहुत अन्न उत्पन्न होगा। पिताजी, आप भगवान से प्रार्थना कीजिए कि खूब वर्षा हो।

दोनों पुत्रियों की बातें सुनकर पिता दुविधा में पड़ गया। दोनों की प्रार्थनाएँ परस्पर विपरीत थीं। वह वर्षा होने की प्रार्थना करे या वर्षा न होने की। क्या समाधान हो? बहुत सोच-विचारकर वह पुनः अपनी पुत्रियों के पास गया। पहले वह बड़ी पुत्री के पास गया और उसे समझाया कि यदि वर्षा न हुई तो तुम अपने लाभ का आधा भाग अपनी छोटी बहन को देना। फिर वह छोटी पुत्री के पास गया और उसे समझाया कि यदि वर्षा अच्छी हुई तो तुम अपने लाभ का आधा भाग अपनी बड़ी बहन को देना। सोचिए, कैसा था यह समाधान?

4. संस्कृति

भूखा आदमी सड़क के किनारे कराह रहा था। एक दयालु आदमी रोटी लेकर उसके पास पहुँचा और उसे दे ही रहा था कि एक दूसरे आदमी ने उसका हाथ खींच लिया। वह आदमी बड़ा रंगीन था। पहले आदमी ने पूछा–"क्यों भाई, भूखे को भोजन क्यों नहीं देने देते?" रंगीन आदमी बोला–"ठहरो, तुम इस प्रकार इसका हित नहीं कर सकते। तुम केवल उसके तन की भूख समझ सकते हो, मैं इसकी आत्मा की भूख जानता हूँ। देखते नहीं हो, मानव-शरीर में पेट नीचे है और हृदय ऊपर। हृदय की अधिक महत्ता है।"

पहला आदमी बोला–"लेकिन इसका हृदय पेट पर ही टिका हुआ है। अगर पेट में भोजन नहीं गया तो हृदय की टिक-टिक बंद हो जाएगी।" रंगीन आदमी हँसा; फिर बोला–"देखो, मैं बतलाता हूँ कि इसकी भूख कैसे बुझेगी।" यह कहकर वह भूखे के सामने बाँसुरी बजाने लगा। दूसरे ने पूछा–"यह तुम क्या कर रहे हो? इससे क्या होगा?" रंगीन आदमी बोला–"मैं इसे संस्कृति का राग सुना रहा हूँ। तुम्हारी रोटी से तो एक दिन के लिए ही इसकी भूख भागेगी। संस्कृति-राग से इसकी जनम-जनम की भूख भाग जाएगी।" वह बाँसुरी बजाने लगा और तब वह भूखा उठा उसने बाँसुरी झपटकर पास की नाली में फेंक दी।

5. रोशनी

मिट्टी का दीया खामोशी से कोने में आलोकित हो रहा था। बल्ब ने हँसते हुए पूछा–"इस समय तुम्हारे जलने का क्या औचित्य है?" दीया खामोश रहा, मुसकुराता रहा।

बल्ब ने फिर कहा–"मेरे प्रकाश की चकाचौंध के सामने हर कोई नतमस्तक है, फिर तुम्हारी क्या बिसात है?" दीया फिर भी खामोश रहा।

बल्ब को बहुत गुस्सा आया। उसने कहा–"लगता है तुम्हें मुझसे अपने अस्तित्व का खतरा है, इसलिए तुम खामोश हो।"

अचानक बाहर ज़ोर की बिजली कौंधी और तेज़ हवाओं के साथ पानी बरसने लगा। इसी के साथ बिजली गुल हो गई और बल्ब की रोशनी भी खत्म हो गई। दीये की लौ अभी भी कोने में आलोकित हो रही थी। वह मुस्कुरा रहा था और बल्ब सामने दीवार पर बेजान-सा लटका था।

6. जहाँ चाह, वहाँ राह

(CBSE 2023)

मेहनती रोहन अपनी माँ के साथ गाँव में रहता था। वह बहुत ही गरीब था। बचपन में ही उसके पिता की मृत्यु हो गई थी। रोहन की पढ़ाई-लिखाई व उसके भरण-पोषण की जिम्मेदारी उसकी माँ पर ही थी। माँ सब्जियाँ बेचकर घर चलाती थी। रोहन बहुत ही होशियार था। वह हमेशा बुद्धिमानी व चतुराई से कार्य करता था। जीवन में एक सफल इंसान बनकर दूसरों की सेवा करना उसका लक्ष्य था। एक दिन अचानक बीमार पड़ने के कारण माँ सब्जियाँ बेचने नहीं जा पाई। दवा खाने के बाद भी माँ की तबीयत में कोई सुधार नहीं हुआ, बल्कि हालत और भी खराब होती गई। रोहन ने बड़े डॉक्टर से माँ का इलाज करवाया। घर में जितने भी पैसे थे सारे माँ के इलाज में खर्च हो गए। डॉक्टर ने माँ को कुछ दिन आराम करने की सलाह दी।

सारे पैसे खर्च हो जाने के कारण रोहन अपने विद्यालय की फीस नहीं जमा कर पाया। शिक्षक ने जब उसे बुलाकर फीस न जमा करने का कारण पूछा तो रोहन ने सारी बात शिक्षक को बताई। शिक्षक ने प्रधानाचार्य से बातकर रोहन की उस महीने की फीस माफ़ करा दी।

रोहन की घर की स्थिति देखकर उसके पड़ोसियों ने उसे समझाया कि तुम पढ़ाई-लिखाई छोड़कर कोई नौकरी करो और अपनी माँ की देखभाल करो। रोहन को अपनी पढ़ाई नहीं छोड़नी थी। उसे पढ़-लिखकर डॉक्टर बनना था, परंतु उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या करे। अगले महीने जब फिर से वह विद्यालय की फीस नहीं भर पाया तो, शिक्षक ने उसे एक सुझाव दिया कि तुम विद्यालय के बाद छोटे-छोटे विद्यार्थियों को पढ़ाया करो, उससे तुम्हें थोड़ी आर्थिक मदद मिलेगी। रोहन भी इस बात के लिए मान गया। उसने अपने शिक्षक की सहायता से छोटे बच्चों को पढ़ाना शुरू किया और अपने मित्र की सहायता से सुबह घर-घर अखबार पहुँचाने का कार्य करने लगा।

माँ अपने बेटे को इस तरह कड़ी मेहनत करते देख परेशान हो गई, परंतु रोहन ने माँ को प्यार से समझाया कि अब वह बड़ा हो गया है। अपने बेटे की बड़ी-बड़ी बातें सुनकर माँ की आँखों में आँसू आ गए। देखते-ही-देखते रोहन के पास ढेर सारे पैसे जमा हो गए और उसने वे पैसे अपनी माँ को दिए और विद्यालय की फीस भी जमा कर दी। पढ़ाई में कड़ी मेहनत करके रोहन इस वर्ष परीक्षा में अव्वल आया और विद्यालय ने उसकी आगे की शिक्षा के लिए छात्रवृत्ति देना शुरू किया। इस तरह रोहन ने अपनी पढ़ाई के साथ-साथ अपने घर को भी सँभाला और आगे चलकर वह एक डॉक्टर बन गया। गाँव के लोग रोहन की तरक्की देखकर बस यही कहते थे, 'जहाँ चाह होती है वहाँ राह निकल आती है।'

7. ममता की छाँव

माँ मेरे बेटे सुयश के जन्मदिन पर नैनीताल आई थीं। सालों बाद ऐसा अवसर आया कि माँ हमारे साथ थी। मैंने माँ से न जाने कितनी बार कहा था कि नैनीताल की पोस्टिंग का ये मेरा आखिरी साल है। कई बार मैंने फोन पर कहा कि आप और बाबू जी आ जाओ। वो तो सुयश इस बार जिद पकड़ गया कि दादी आपको मेरे जन्मदिन पर आना ही पड़ेगा। रोज़ दादी को वीडियो कॉल करता था, 'दादी आओगी न मेरी बर्थडे पर, वरना आपसे मेरी कट्टी हो जाएगी। मैं आपसे बात नहीं करूँगा।' किसी ने सही कहा है, 'मूल से सूद ज्यादा प्यारा होता है।' माँ सुयश की मनुहार को टाल नहीं सकी।

सुयश का बर्थडे हम सबके लिए यादगार बन गया। इंदु ने ढेर सारी डिश बनाई थी। बर्थडे में बच्चों ने खूब एंजॉय किया। माँ जबलपुर घर वापस जाने वाली थीं। लॉकडाउन की घोषणा हो गई। बस बंद। रेल बंद। हवाई जहाज बंद। जाने का कोई साधन नहीं था। माँ हफ्ते भर का प्रोग्राम बनाकर आई थीं। जिस तरह से कोरोना संक्रमण की देश भर से खबरें आ रही थीं, लॉकडाउन खुलने की संभावना क्षीण थी। माँ को रुकना पड़ा।

एक अनोखी दिनचर्या हम सबकी हो गई थी। जिसकी कल्पना हमने कभी नहीं की थी। सुयश का स्कूल बंद। मेरा ऑफिस बंद। इंदु का सुबह से रात तक काम के चक्कर में चकरी की तरह घर में घूमते रहना बंद। माँ ने भी अपने को एडजस्ट कर लिया था। सुबह की पूजा के बाद टी०वी० पर धार्मिक सीरियल देखकर उनका समय निकल जाता था।

मेरा 'वर्क फ्रॉम होम' चालू हो गया। मन की तसल्ली के लिए था, ये घर से काम करने का फंडा। ऑफिस वालों ने चौबीस घंटे की घेराबंदी कर रखी थी। आप घर के बाहर निकल नहीं सकते। कुछ दिन तो ये सब अच्छा लगा, परंतु अब शारीरिक और मानसिक थकावट होने लगी थी।

मुझे बोर्ड के लिए प्रजेंटेशन तैयार करना था। डेड लाइन थी। आज शाम तक किसी भी हालत में मुझे प्रजेंटेशन तैयार कर बॉस को मेल करना था। सुबह से नॉन स्टॉप लैपटॉप के सामने बैठे-बैठे मेरी आँखें भारी हो रही थीं। इंदु ने तीन-चार बार कॉफी बनाकर दी, पर सिरदर्द कम नहीं हो रहा था। माँ सुबह से कई चक्कर मेरे कमरे में लगा चुकी थीं। मेरी व्यस्तता और बैचेनी को देखकर चुपचाप चली जाती थीं।

'क्या हुआ बेटा····तबीयत ठीक नहीं लग रही तेरी?' माँ ने कमरे में प्रवेश करते हुए पूछा। 'कुछ नहीं माँ बस थोड़ा-सा सिरदर्द है। काम का प्रेशर है। ठीक हो जाएगा।' मैंने माँ की चिंता को कम करने का प्रयास किया।

'चल अब बंद कर। बहुत हो गया तेरा काम। कुछ देर सुस्ता ले।' माँ ने मेरा हाथ पकड़ लिया और मुझे उठा दिया।

'दो मिनट रुक, मैं तेरे सिर में तेल से मालिश कर देती हूँ। तुझे आराम मिल जाएगा।' माँ ने कमरे में ही रखी तेल की शीशी उठा ली। मैंने माँ की गोद में अपना सिर रख दिया। माँ की तेल में डूबी उंगलियाँ हौले-हौले मेरे बालों को सहलाने लगीं। माँ के स्नेहिल स्पर्श से मेरा पूरा शरीर शीतल होने लगा। नींद का एक झोंका मुझे परियों के देश में ले गया। आँख खुली तो देखा माँ आँचल से अपने आँसू पोंछ रही थी। मैं माँ की ममता से पूरा भीग गया था।

8. एकता में बल

किसी गाँव में एक किसान रहता था। उसके चार बेटे थे और चारों आपस में लड़ते रहते थे। उनको लड़ता हुआ देखकर किसान को बड़ा दुःख होता था। मगर वह कुछ कर नहीं पाता था। एक बार किसान बीमार पड़ गया। तब एक दिन उसने चारों बेटों को अपने पास बुलाया और एक लकड़ी का गट्ठर तोड़ने के लिए दिया। चारों बेटों ने गट्ठर को तोड़ने के लिए खूब ज़ोर लगाया। किंतु चारों में से कोई भी उसे न तोड़ सका। अब किसान ने गट्ठर खोलकर चारों से एक-एक लकड़ी तोड़ने के लिए कहा। चारों ने बड़ी आसानी से एक-एक लकड़ी तोड़कर पूरा गट्ठर तोड़ डाला।

किसान ने अपने बेटों को समझाया कि एकता में बड़ी शक्ति होती है। जब तक लकड़ियाँ एक साथ थीं, तब तक तुममें से कोई भी उन्हें नहीं तोड़ सका। उनको अलग करके तुमने सभी लकड़ियों को आसानी से तोड़ डाला। इसी प्रकार यदि तुम भी एक होकर रहोगे तो कोई भी तुम्हें किसी प्रकार की हानि न पहुँचा सकेगा और अगर तुम ऐसे ही लड़ते हुए अलग-अलग रहोगे तो कोई भी तुम्हें हानि पहुँचा सकता है। इसलिए तुम्हें आपस में प्रेम से मिलकर रहना चाहिए।

9. करत-करत अभ्यास के जड़मति हो सुजान

वरदराज एक बालक था। पिता ने उसे गुरु के पास पढ़ने के लिए आश्रम में भेज दिया। पढ़ने-लिखने में वरदराज का मन बिलकुल नहीं लगता था। वह एक ही कक्षा में कई-कई बार अनुत्तीर्ण होता रहता था। दूसरे शिष्य उसका मज़ाक उड़ाते थे। एक दिन गुरु जी ने उसे बुलाकर कहा–"वरदराज, तुम अपने घर लौट जाओ और पिता के काम में उनकी सहायता करो।"

गुरु जी के कहने पर वरदराज अपना सामान समेटकर घर की ओर चल दिया। चलते-चलते उसे प्यास लगी। एक कुएँ पर कुछ स्त्रियाँ पानी भर रही थीं। वरदराज ने उनसे पानी पिलाने को कहा। तभी उसका ध्यान कुएँ की मुँडेर पर बने निशान की ओर गया। उसने स्त्री से पूछा, "यह निशान कैसे बना?" स्त्री ने उत्तर दिया, "लगातार रस्सी की रगड़ लग-लगकर मुँडेर पर निशान बन गया है।"

वरदराज की बुद्धि के पट खुल गए। वह सोचने लगा, "यदि एक रस्सी की रगड़ से पत्थर पर निशान पड़ सकता है तो क्या बार-बार अभ्यास करने से विद्या ग्रहण नहीं की जा सकती!" ऐसा सोचकर वह आश्रम की ओर लौट पड़ा। गुरु जी के चरण पकड़कर उसने प्रार्थना की, "गुरु जी, आप मुझे एक अवसर दीजिए। आज से मैं खूब अभ्यास करूँगा और मन लगाकर पढ़ूँगा।"

गुरु जी प्रसन्न हो गए और वरदराज की प्रार्थना स्वीकार कर ली। उस दिन से उसने विद्या-प्राप्ति का अभ्यास प्रारंभ कर दिया और परम विद्वान बन गया। उसने कई संस्कृत-ग्रंथों की रचना की। सोचो, अभ्यास से क्या नहीं हो सकता!

10. मैं और मेरा गाँव

शोभित ने सुबह जागते ही ताई जी से कहा, "ताई जी, मैं सुबह के नाश्ते में मक्खन-रोटी खाऊँगा। पहले जब मैं गाँव में रहता था तो दादी मुझे रोज़ सुबह मक्खन-रोटी ही खिलाती थीं।" वह ग्रीष्मावकाश में शहर से अपने गाँव आया है। गाँव में शोभित के ताऊ जी का परिवार रहता है।

शोभित की बात सुनकर ताई उदास हो गईं और बोलीं–"बेटा, अब गाँव में मक्खन-रोटी कहाँ है! गाँव का सारा दूध तो दूधिया ले जाते हैं। लोग बस चाय बनाने के लिए थोड़ा-सा दूध बचाते हैं, बाकी सब बेच देते हैं। अब गाँव पहले वाले गाँव नहीं रहे।"

शोभित सोचने लगा, "ताई जी ठीक कह रही हैं। अब गाँव में न पनघट है, न पीपल की छाँव है, न अमराई है। न बच्चों की टोली है, न पहले जैसी दीवाली और होली है। न छुपमछुपाई का खेल है, न पहले जैसा हेल-मेल है। न दूध, दही और मक्खन है तथा न मक्का की रोटी और चने का साग है। अब शाम को दादी परियों की कहानी नहीं सुनाती हैं, बल्कि वे स्वयं टी०वी० के सामने बैठ जाती हैं। जैसे शहर में जाकर मैं, मैं नहीं रहा हूँ वैसे ही अब गाँव, गाँव नहीं रहा है। वास्तव में कितने बदल गए हैं, "मैं और मेरा गाँव।"

11. पश्चात्ताप

(CBSE SQP 2023-24)

किसी गाँव में एक किसान अपनी पत्नी और नन्हे बच्चे के साथ रहता था। वे बहुत खुश थे। एक दिन किसान एक नेवला घर ले आया। किसान की पत्नी पहले तो थोड़ा गुस्सा हुई कि नेवला कहीं नन्हे बच्चे को नुकसान न पहुँचाए, किंतु बाद में मान गई। उसके बच्चे को साथी जो मिल गया था। नेवला बच्चे का ध्यान रखता था।

एक दिन किसान खेत पर गया हुआ था। उसकी पत्नी को बाज़ार से सामान लाना था। वह बच्चे को नेवले के साथ छोड़कर बाज़ार चली गई। बच्चा नेवले के साथ खेल रहा था। तभी वहाँ एक साँप आ गया। नेवले ने देख लिया। इससे पहले कि साँप बच्चे के पास पहुँचे, नेवला उस पर झपट पड़ा और कुछ ही क्षणों में साँप को मार डाला।

किसान की पत्नी बाज़ार से लौटी तो दरवाज़े पर ही उसे नेवला मिल गया। उसके मुँह पर खून लगा हुआ था। किसान की पत्नी ने सोचा कि इसने मेरे बच्चे को काट लिया है। उसने आव देखा न ताव, सामान से भरा थैला नेवले पर दे मारा। वह भागी-भागी गई तो देखा कि बच्चा तो आराम से खेल रहा है। कुछ ही दूरी पर साँप मरा पड़ा है। अब सारी बात उसकी समझ में आई। वह सिर पकड़े बाहर आई, पर नेवला तो मर चुका था। उसे अपने किए पर बहुत पछतावा हुआ, लेकिन अब कुछ नहीं हो सकता था।

12. जैसे को तैसा

एक बार एक हंस और लोमड़ी में मित्रता हो गई। हंस बड़ा सीधा-सादा और सज्जन था। लोमड़ी उसके बिलकुल उलट थी, वह बहुत चालाक और धूर्त थी। वह सदैव हंस को नीचा दिखाने का प्रयास करती, किंतु हंस किसी तरह उससे बच जाता।

एक दिन लोमड़ी ने हंस से कहा कि भाई तुम्हारी कल हमारे यहाँ दावत है। अगले दिन हंस सही समय पर लोमड़ी के यहाँ पहुँच गया। उसने हंस का स्वागत किया और उसे पीने के लिए थाली में थोड़ा-सा दूध दिया। हंस की चोंच लंबी थी, इसलिए वह थाली में दूध नहीं पी सका। हंस भूखा अपने घर लौट आया।

एक दिन हंस ने लोमड़ी को अपने घर दावत पर बुलाया। लोमड़ी खुशी-खुशी हंस के यहाँ पहुँची हंस ने लोमड़ी से अपनी बेइज़्ज़ती का बदला लेने के लिए लोमड़ी को सुराही में दूध पीने के लिए दिया। सुराही के छोटे-से-मुँह में लोमड़ी का मुँह न जा सका, जिससे वह दूध न पी सकी। लोमड़ी समझ गई कि हंस ने अपना बदला लिया है और चुपचाप वहाँ से चली गई।

13. मूर्ख को उपदेश

एक घने जंगल में तरह-तरह के वृक्ष थे। उन वृक्षों पर बहुत-से पक्षी रहते थे। एक वृक्ष पर बया ने अपना सुंदर-सा घोंसला बना रखा था। एक दिन आकाश में बादल छा गए और घनघोर वर्षा होने लगी। बया अपने घोंसले में बैठी वर्षा का आनंद ले रही थी। उसी समय एक बंदर भीगता हुआ आया और उसी डाल पर बैठ गया। वह ठंड से काँप रहा था। घोंसले में बैठी बया ने बंदर को इस दशा में देखा तो वह बोली, "बंदर भाई! तुम्हारे हाथ पैर तो आदमी जैसे हैं।

तुम अपना कोई घर क्यों नहीं बना लेते? देखो, घर न होने के कारण तुम्हें वर्षा में भीगना पड़ रहा है। मैं तो इतनी छोटी-सी हूँ, फिर भी मेहनत करके अपना घर बना रखा है।''

बंदर ने बया की बात सुनी तो आग बबूला हो गया। सोचा–''यह तुच्छ बया मुझे उपदेश दे रही है। मैं इसे अभी सबक सिखाता हूँ।'' उसने आव देखा न ताव, झट से बया का घोंसला तोड़कर तिनका-तिनका कर दिया। यही है मूर्ख को उपदेश देने का परिणाम।

14. मधुर वचन है औषधि

[CBSE 2023]

मधुप नामक एक व्यक्ति शहद बेचा करता था। उससे कोई शहद खरीदे या नहीं पर वह सभी से बड़े प्रेम से और मधुर वाणी में बात करता था। उसके स्वर में इतनी मिठास थी कि कई बार लोग उसकी बोली से ही प्रभावित होकर शहद खरीद लेते थे। इस प्रकार उसकी दिन-दूनी, रात चौगुनी तरक्की होती जा रही थी। कुछ ही समय में वह इतना संपन्न हो गया कि उसने अपनी एक दुकान खोल ली। दुकान खोलने पर भी उसका व्यवहार पहले की तरह मधुर बना रहा।

उसके साथ वाली दुकान पर एक व्यक्ति फल बेचा करता था। मधुप के आने के बाद उसे ऐसा महसूस होने लगा कि उसके व्यापार में घाटा हो रहा है। वह मधुप से ईर्ष्या करने लगा। उसने मधुप को सबक सिखाने का निश्चय किया। उसने भी फलों के बजाय शहद बेचना आरंभ कर दिया। फिर भी सभी ग्राहक मधुप की दुकान पर ही जाते और उसकी दुकान पर केवल मक्खियाँ भिनभिनाती रहतीं। यह देखकर वह चिड़चिड़ा रहने लगा।

उसकी इस स्थिति से उसकी पत्नी बहुत दुःखी रहती थी। एक दिन उसने अपने पति को समझाया, तुमने मधुप की देखादेखी शहद तो रखना शुरू कर दिया मगर उसके जैसी मिठास अपनी बोली में क्यों नहीं डाली? यदि वाणी मधुर न हो तो अच्छे से अच्छा व्यवसाय भी ठप हो जाता है। व्यवसाय क्या, जीवन के हर क्षेत्र में व्यक्ति असफल हो जाता है। तुम अपना पुराना फलों का व्यापार ही करो। बस अपने अंदर परिवर्तन लाओ। अपनी कर्कश वाणी को तिलांजलि देकर मधुर वाणी से नाता जोड़ो, तुम्हारा व्यापार भी आगे बढ़ेगा और तुम्हारी किसी से दुश्मनी भी नहीं होगी।'

पत्नी की बात दुकानदार की समझ में आ गई। अगले ही दिन से उसने अपना पुराना कारोबार शुरू कर दिया और अपनी बोली में मिठास डाली। उसके फलों की बिक्री तेज़ी से होने लगी। इस बीच उसकी मधुप से भी दोस्ती हो गई। उसका व्यवसाय भी मधुप के कारोबार की तरह आगे बढ़ने लगा। उसकी समझ में यह बात आ गई कि मधुर वचन एक औषधि है, जो अपने और दूसरों के दिल की जलन को शांत कर देती है।

15. बंदर की बाँट

एक दिन दो बिल्लियों को कहीं से एक रोटी मिल गई। वे उस रोटी को बाँटने के लिए आपस में झगड़ने लगीं। उसी समय एक बंदर वहाँ आ गया। उसने बिल्लियों से कहा–'अरे! तुम दोनों इस प्रकार मत लड़ो। कहीं से एक तराजू ले आओ। मैं रोटी का बराबर बँटवारा कर दूँगा।

बंदर की बात मानकर, बिल्लियाँ तराजू ले आईं। बंदर ने रोटी को दो असमान भागों में तोड़ा और दोनों पलड़ों में रख दिया। जिस पलड़े में बड़ा टुकड़ा था, वह नीचे झुक गया। बंदर ने उस टुकड़े में से एक टुकड़ा तोड़ा और खा लिया। फिर दूसरा पलड़ा नीचे झुक गया। बंदर ने उधर से भी एक टुकड़ा तोड़ा और खा लिया। इस प्रकार वह बारी-बारी से दोनों ओर से टुकड़े तोड़ता और खा जाता। थोड़ी देर में बंदर सारी रोटी चट कर गया और मुसकराकर बोला–''लो भई! हो गया तुम्हारा बँटवारा।''

बिल्लियों को यह बंदर की बाँट बहुत महँगी पड़ी। वे अपना-सा मुँह लेकर चली गईं।

16. यदि मैं समाचार-पत्र होता

[CBSE SQP 2020-21]

यदि मैं समाचार-पत्र होता तो प्रातःकाल लोगों के हाथों में होता। वे चाय की चुस्कियों के साथ राजनीति, अर्थव्यवस्था, समसामयिक घटनाओं, क्षेत्रीय समाचारों और रोजगार आदि से संबंधित खबरों में मेरे द्वारा अवगत होते। मैं लोगों के सम्मुख समाचारों को बिना पक्षपात किए तथ्यों और प्रमाणों के साथ रखता, जिसमें संबंधित सभी पक्षों की बातें होतीं। मैं पूरा प्रयास करता कि घटना से संबंधित सभी बातें बिना किसी भेदभाव या पक्षपात के साक्ष्यों के साथ लोगों के सामने आतीं, जिससे वे 'संपूर्ण सूचना' से अवगत होते और स्वस्थ जनमत का निर्माण होता।

मैं, लोकतंत्र के चौथे स्तंभ 'पत्रकारिता' के मूल्यों का अनुपालन करते हुए और इसके मानकों के प्रति समर्पित दृष्टिकोण रखते हुए उन समाचारों को प्राथमिकता देता जो 'लाइम लाइट' और 'टी आर पी' के कारण नज़रअंदाज हो जाती है। सत्ता प्रतिष्ठानों की नीतियों और प्रशासनिक अभिकरणों की कार्यदायी शक्तियों की मैं अपने संपादकीय में प्रामाणिक और वस्तुनिष्ठ समीक्षा करता और ऐसा करते हुए मैं जरा भी भयभीत नहीं होता।

मैं समाज के सबल और निर्बल पक्षों से संबंधित समस्याओं को उनकी 'मेरिट' के अनुसार अपने अंगों (पृष्ठों) में स्थान देता। मैं इस बात पर विशेष ध्यान देता कि लोगों को जो सूचनाएँ मिलें वे केवल सत्य हों 'सनसनी' फैलाने से मैं परहेज करता। पाठकों को बौद्धिक रूप से सुदृढ़ बनाने हेतु मैं समाज के प्रबुद्ध व्यक्तियों से बात करके उनका विवरण लोगों के सम्मुख रखता ताकि सूचना प्राप्त होने के साथ-साथ उनका समुचित ज्ञानार्जन हो सके।

17. गुरुभक्त शिष्य

प्राचीनकाल में एक महर्षि थे। उनके आश्रम में बहुत-से शिष्य विद्या अध्ययन करते थे। उनके एक शिष्य का नाम था–आरुणि। वह परम गुरुभक्त था।

एक दिन शाम के समय घनघोर वर्षा होने लगी। महर्षि को चिंता हुई कि कहीं खेत की मेड़ टूटकर सारा पानी न बह जाए। उन्होंने आरुणि को बुलाया और खेत की मेड़ को देखने के लिए भेजा। गुरु की आज्ञा से आरुणि तुरंत खेत की ओर चल पड़ा।

खेत पर पहुँचकर आरुणि ने देखा कि एक जगह से मेड़ टूटी हुई है और उससे पानी बह रहा है। वह उस स्थान पर मिट्टी डालने लगा, लेकिन पानी के तेज़ बहाव से मिट्टी रुक नहीं पा रही थी। अंत में आरुणि स्वयं टूटी हुई मेड़ के स्थान पर लेट गया। इससे पानी का बहाव रुक गया।

प्रातःकाल अन्य शिष्यों के मध्य आरुणि को न देखकर, गुरु जी चिंतित हो गए। फिर उन्हें ध्यान आया कि उन्होंने शाम के समय आरुणि को खेत पर भेजा था। वे अन्य शिष्यों के साथ उसे ढूँढ़ने के लिए खेत की ओर चल पड़े। वहाँ जाकर उन्होंने देखा कि आरुणि खेत की टूटी हुई मेड़ के स्थान पर लेटा हुआ है। गुरु ने आरुणि को उठाया और इस प्रकार लेटने का कारण पूछा।

आरुणि ने कहा, ''गुरुदेव आपकी आज्ञानुसार खेत से बह रहे पानी को रोकना आवश्यक था। जब मिट्टी से पानी का तेज़ बहाव नहीं रुका तो मैं स्वयं इस स्थान पर लेट गया। इस प्रकार बहाव रुक गया।''

आरुणि की गुरुभक्ति देखकर महर्षि भावविभोर हो गए। उन्होंने आरुणि को हृदय से लगा लिया और परमविद्वान होने का आशीर्वाद दिया।

18. जैसी करनी वैसी भरनी

एक छोटा-सा तालाब था। तालाब के किनारे एक बगुला रहता था। बगुला बहुत चालाक था। अब वह बूढ़ा हो गया था। उसे कम दिखाई देता था, इसी कारण वह मछली नहीं पकड़ पाता था। एक दिन उसने सभी मछलियों को बुलाया और बोला, ''यह तालाब सूख रहा है। मैं तो गाँव के पार जंगल में एक तालाब देख आया हूँ। वहीं रहने जा रहा हूँ।''

यह बात सुनकर सभी मछलियाँ चिंता में पड़ गईं। उन्होंने बगुले से कहा, "हम भी तो तालाब सूखने पर मर जाएँगी!" "बगुले दादा! हमारी मदद कीजिए। हम तो आप की तरह उड़ नहीं सकतीं, हमें बचा लीजिए!!"
बगुला बोला, "वैसे तो मैं अब ज़्यादा उड़ नहीं पाता, पर तुम्हारे साथ इतना लंबा समय बिताया है। तुम्हें मरने के लिए भी नहीं छोड़ सकता। चलो एक-एक करके अपने चोंच में दबाकर तुम सबको वहाँ ले चलता हूँ।"

मछलियों ने बगुले की प्रशंसा की और बगुले ने सबसे पहली मछली को चोंच में दबा लिया और उड़ चला। जंगल में कोई तालाब न था। बगुला एक चट्टान के पीछे बैठकर मछली को चट कर गया। थोड़ी देर में उड़ता हुआ फिर आ पहुँचा। अब दूसरी मछली ले उड़ा। उसे देखकर सभी मछलियाँ पहले मैं पहले मैं करती उछल पड़तीं। वह मस्ती से दावत उड़ाता। कुछ ही दिनों में सभी मछलियाँ मर गईं। तालाब के किनारे रहने वाला केकड़ा बोला, "बगुले दादा मुझे भी ले चलो ना!" बगुले ने कहा, "हाँ! हाँ! तुम भी चलो!" बगुले की गरदन पर सवार केकड़े ने आकाश से ही बेचारी भोली मछलियों के कंकाल देख लिए। उसने बगुले की गरदन को जकड़ लिया और उसे मार डाला। बगुले को अपनी करनी का फल मिल गया।

19. परहित सरिस धरम नहिं भाई

एक बार देवों और दैत्यों में भयानक युद्ध हुआ। बहुत प्रयत्न करने पर भी देवता दैत्यों को पराजित नहीं कर पा रहे थे। देवराज इंद्र बहुत चिंतित थे। उन्होंने ब्रह्मा जी से दैत्यों को पराजित करने का उपाय पूछा। ब्रह्मा जी ने बताया कि यदि महर्षि दधीचि की हड्डियों से वज्र नामक अस्त्र बनाया जाए तो उससे दैत्यों का विनाश किया जा सकता है।
इंद्रादि देवता महर्षि दधीचि के पास गए और उन्हें अपनी समस्या बताई। महर्षि दधीचि बहुत परोपकारी थे। जनकल्याण के लिए उन्होंने देवताओं की प्रार्थना स्वीकार कर ली। उन्होंने योगबल से अपने प्राणों को अंत कर लिया और अपनी अस्थियाँ देवताओं को दे दीं। महर्षि दधीचि का अस्थियों से वज्र बनाया गया, जिससे इंद्र ने वृत्रासुर सहित सभी दैत्यों का विनाश किया। महर्षि दधीचि जानते थे कि "परहित सरिस धरम नहिं भाई।"

20. भूल-सुधार

प्रताप नामक एक राजा ने अपने गुरु का सत्कार करते हुए उन्हें एक रेशमी शाल भेंट किया। गुरु ने राजा को आशीर्वाद दिया। जब वे घर जा रहे थे तो देखा कि एक गरीब ठंड से थर-थर काँप रहा है। गुरु जी ने वह शाल उस गरीब को दे दिया।
अगले दिन जब राजा कहीं जा रहे थे तो उन्होंने गुरु जी को भेंट किया शाल उस गरीब पर देखा। राजा को अपने गुरु पर बहुत क्रोध आया।
फिर एक दिन राजा ने गुरु का पुनः सत्कार किया और उन्हें सोने का कंगन भेंट किया। गुरु ने वह कंगन एक कारीगर की पुत्री के विवाह में कन्या को दान कर दिया। राजा को जब इस बात का पता चला तो वे बहुत क्रोधित हुए। उन्होंने गुरु जी को बुलाया और कहा कि आपने मेरे द्वारा भेंट की गई वस्तुओं का अपमान किया है।
यह सुनकर गुरु जी ने कहा, "हे राजन्! पहली बात तो यह है कि दान की गई वस्तु पर दाता का कोई अधिकार नहीं रहता। आप मुझे भेंट की गई वस्तुओं को अपना क्यों कह रहे हैं? दूसरी-मैंने आपके द्वारा दी गई दोनों वस्तुओं का सदुपयोग किया है। वस्तुओं का सदुपयोग करना उनका सम्मान है, अपमान नहीं। यह सुनकर, राजा को अपनी भूल का अहसास हुआ। उन्होंने अपने गुरु से क्षमा माँगी। गुरु जी ने समझाया, "हे राजन्! भूल को स्वीकार, करना ही भूल-सुधार है।"

21. जंगल का कानून

कत्ले-आम के आरोप में खरगोश कटघरे में खड़ा था। भेड़िए, लोमड़ी, सियार उसके खिलाफ अपनी-अपनी गवाही दे चुके थे।
प्रतिवादी वकील ने उनकी गवाही के प्रतिकूल अपना तर्क अदालत के सामने रखा–"योर ऑनर! मेरे मुवक्किल की बेगुनाही का सबसे बड़ा सबूत यह है कि वह मांसाहारी ही नहीं है। उसके दाँत मेरी इस बात के गवाह हैं।"
सरकारी वकील ने उसकी बात काटते हुए कहा–"जज साहब! सवाल शाकाहारी या मांसाहारी होने का नहीं, हत्या का है। मेरे काबिल दोस्त ने इसके दाँतों को इसके बेगुनाही का सबूत बताया है, लेकिन इसके पैने नाखून देखिए, क्रूरता से भरी इसकी आँखों के स्थायी लाल डोरे देखिए। पुलिस आहट से चौकन्ने और हर दिशा में घूम सकने वाले इसके बड़े-बड़े कान देखिए। हादसे को अंजाम देकर पलभर में ही मौका-ए-वारदात से गायब हो सकने में सहायक इसकी ग़ज़ब की फुर्ती देखिए।"
यह कहकर सरकारी वकील ने आरोपी को कड़ी-से-कड़ी सज़ा देने की सिफ़ारिश अदालत से की।
उसके द्वारा पेश सबूतों और जंगल के प्रभावशाली गवाहों के बयानों पर अदालत ने गंभीरता से विचार किया। जज ने जंगल में अमन-चैन को बनाए रखने की दृष्टि से खरगोश को सज़ा-ए-मौत सुनाई और वहीं पर अपनी कलम तोड़ दी।

22. गया समय फिर नहीं आता

दिवाकर की स्टेट बैंक में नौकरी लग गई। उसके घर में खुशियाँ छाई हैं। मिठाइयाँ बाँटी जा रही हैं। दूसरी ओर, उसका पड़ोसी मित्र दीपक हताश-निराश है। वह चारपाई पर लेटा है। जब से उसने दिवाकर की सरकारी नौकरी लगने की बात सुनी है, तब से तो उसकी उदासी और भी गहरी हो गई है। वह कई प्राइवेट कंपनियों में नौकरी का प्रयास कर चुका है, लेकिन कहीं काम नहीं मिला है।
दीपक को बीता समय याद आ रहा है। दिवाकर, उसका पक्का मित्र है, लेकिन दोनों का स्वभाव भिन्न है। दिवाकर धीर-गंभीर है। वह अपना अधिक समय पढ़ने-लिखने में व्यतीत करता था। दीपक खेलने-कूदने और दोस्तों के साथ मौज़-मस्ती में समय गँवाता था। वह दिवाकर को "रट्टू तोता" और "किताबी कीड़ा" कहकर उसकी हँसी उड़ाया करता था।
बी०ए० करने के बाद दोनों ने नौकरी ढूँढ़नी प्रारंभ की। विद्यार्थी जीवन में अच्छी मेहनत न करने के कारण दीपक पढ़ाई में कमज़ोर रहा। सरकारी नौकरी के लिए होने वाली परीक्षाओं को पास करना उसके वश की बात नहीं थी। वहीं दूसरी ओर, दिवाकर ने पहले ही प्रयास में बैंक की परीक्षा उत्तीर्ण कर ली।
दीपक को आज इस बात का पश्चात्ताप हो रहा है कि उसने अपने समय का सदुपयोग नहीं किया। लेकिन अब कुछ नहीं हो सकता, क्योंकि गया समय कभी वापस नहीं आता।

23. गंगा और मैं

(CBSE SQP 2020-21)

भूगोल की दृष्टि से 'गंगा' एक नदी मात्र है, मेरे लिए गंगा एक सजीव प्राणी है। यह प्राणी आज प्रदूषण के कारण विचलित है। मनुष्य के कल्याण हेतु इसने कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी, लेकिन कृतघ्न मानव ने इसके उपकार का ऋण 'प्रदूषण' के रूप में चुकाया। हे गंगा! तेरे विराट स्वरूप को प्रदूषण से मुक्त कराने के लिए मैं जितना भी प्रयास कर सकता हूँ, वह निरंतर अथक रूप में करूँगा। तेरे आशीर्वाद से मेरा यह प्रयास कितना फलीभूत होगा, इसका ज्ञान मुझे नहीं है। गीता के उपदेश 'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन............' का अनुसरण करते हुए प्रदूषण मुक्ति के अभियान में मैं अपने में समर्पित करूँगा।
इस पवित्र कार्य हेतु मैं अन्य सुधी और संवेदनशील लोगों से संवाद भी स्थापित करूँगा ताकि मेरे द्वारा किया गया प्रयास अविलंब अभियान का रूप धारण कर ले। नीतिगत स्तर पर जिम्मेदारों का ध्यान आकृष्ट करने हेतु बौद्धिक लोगों का समूह पत्र व्यवहार या सम्मेलन के माध्यम से प्रदूषण से गंगा की पीड़ा की बात उन तक पहुँचाएगा, ताकि प्रदूषण से संबंधित कानूनों का समुचित और संवेदनापरक क्रियान्वयन हो सके। हे गंगा! मेरा यह प्रयास रहेगा कि प्रदूषण से तेरी मुक्ति हेतु चलाया गया अभियान अविलंब 'क्रांति' के रूप में परिणत हो जाए ताकि प्रदूषण का समूल नाश हो और तेरी अविरल मुक्तिदायिनी जलधारा प्रांजल होकर पूर्व की भाँति प्रवाहित हो सके।

24. रास्ते का पत्थर

एक बार एक राजा ने अपने राज्य की मुख्य सड़क के बीचोबीच एक बड़ा-सा पत्थर रखा और स्वयं पेड़ के पीछे छिपकर खड़ा हो गया। वह देखना चाहता था कि उसके राज्य के लोग सड़क पर पड़े हुए उस पत्थर का क्या करते हैं? उस सड़क से बहुत-से लोग गुज़रे। गुज़रने वाले लोगों ने राजा को भला-बुरा कहते हुए कहा कि राज्य का इससे अधिक और बुरा हाल क्या हो सकता है? संध्या समय एक निर्धन किसान अपने खेतों से कार्य करके अपने घर की ओर आ रहा था। उसने सड़क पर रखे हुए उस पत्थर को देखकर सोचा कि पता नहीं इसके कारण कितने लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ा होगा। उसने धक्का देकर कठोर परिश्रम से उस पत्थर को सड़क के किनारे कर दिया। यह देखकर राजा बहुत प्रसन्न हुआ। उसने किसान को दस सोने के सिक्के पुरस्कार में देते हुए कहा कि वह इस राज्य का सबसे अधिक ईमानदार और सच्चा नागरिक है, जो राज्य के प्रति अपनी ज़िम्मेदारी को पूरी तरह से समझता है। यदि हम स्वयं को अच्छा नागरिक समझते हैं तो देश के प्रति हम सबकी ज़िम्मेदारी है कि हम अपने देश को साफ़-सुथरा और सुंदर बनाएँ।

25. नाराज़गी

(CBSE 2021 SQP Term-2)

परीक्षा के दौरान मेरी प्रिय सखी बार-बार सहायता माँग रही थी लेकिन मैंने मदद नहीं की तो वह मुझसे नाराज़ हो गई। उसने मुझसे बोलना और मेरे घर आना-जाना बंद कर दिया। अब वह मुझसे टेलीफ़ोन पर भी बात नहीं करती थी और न ही मुझे अपने घर बुलाती थी। पहले हम दोनों प्रतिदिन एक-दूसरे से मिलती थीं और घंटों बैठकर, बातें किया करती थीं। हम एक-दूसरे के बिना नहीं रह सकतीं, इस बात को हम दोनों के माता-पिता अच्छी प्रकार, जानते थे। जब कई दिन तक मैं अपनी सखी के घर नहीं गई तो उसकी माता जी ने मुझे टेलीफ़ोन किया और एक-दूसरे से न मिलने का कारण पूछा। मैंने उन्हें सारी बातें सच-सच बता दीं। एक घंटे बाद वे मेरी सखी को लेकर हमारे घर आ गईं। हम दोनों को आमने-सामने बैठाकर, उन्होंने मुझे कहा–"बेटी! तुमने अपनी सखी की परीक्षा में सहायता न करके एक सच्चे मित्र का कर्तव्य निभाया है। सच्चा मित्र वही होता है, जो अपने मित्र को कुमार्ग पर चलने से बचाता है। परीक्षा में नकल करना या दूसरों से सहायता लेना अनुचित है। तुम्हारे प्रति इसकी नाराज़गी ठीक नहीं है।"

अपनी माता जी की बातें सुनकर मेरी सखी को अपनी गलती का अहसास हो गया। उसकी आँखें भर आईं और 'सॉरी'! कहते हुए वह मुझसे लिपट गई।

26. परोपकार का परिणाम

(CBSE 2021 SQP Term-2)

एक बार जंगल में एक शेर पेड़ की छाया में गहरी नींद में सोया हुआ था। तभी एक चूहा आकर उसके ऊपर उछल-कूद करने लगा। शेर की नींद टूट गई। उसने चूहे को अपने पंजों में दबा लिया। चूहे ने शेर से प्रार्थना की "हे जंगल के राजा! मुझसे बहुत बड़ा अपराध हो गया है। आप मुझे क्षमा कर दें। मैं आपके इस उपकार, का बदला अवश्य चुका दूँगा।"

शेर को चूहे पर दया आ गई। उसने उसे छोड़ दिया!

कुछ दिनों बाद शेर शिकारियों के जाल में फँस गया। वह ज़ोर-ज़ोर से दहाड़ने लगा। उसकी दहाड़ सुनकर चूहा बिल से बाहर निकला और शेर के पास आया। उसने शेर से कहा–"हे जंगल के राजा! आप व्याकुल न हों। आपने एक बार मुझ पर उपकार किया था। आज उस उपकार का बदला चुकाने का समय आ गया है। मैं आपको इस जाल से अभी मुक्त कर देता हूँ।"

इतना कहकर चूहे ने अपने पैने दाँतों से जाल को काट दिया। शेर मुक्त हो गया। उसने चूहे का धन्यवाद किया। शिक्षा–उपकार का परिणाम सदैव अच्छा ही होता है।

27. अपूर्व संतोष

(CBSE 2021 SQP Term-2)

गौतमी नाम की एक स्त्री का बेटा मर गया। वह शोक से व्याकुल होकर रोती हुई महात्मा बुद्ध के पास पहुँची और उनके चरणों में गिरकर बोली, "किसी तरह मेरे बेटे को जीवित कर दो। कोई ऐसा मंत्र पढ़ दो कि मेरा लाल जी उठे।"

महात्मा बुद्ध ने उसके साथ सहानुभूति जताते हुए कहा, "गौतमी, शोक मत करो। मैं तुम्हारे मृत बालक को फिर जीवित कर दूँगा।! लेकिन इसके लिए तुम किसी ऐसे घर से सरसों के कुछ दाने माँग लाओ, जहाँ कभी किसी प्राणी की मृत्यु न हुई हो।"

गौतमी को इससे कुछ शांति मिली वह दौड़ते हुए गाँव में पहुँची और ऐसा घर ढूँढ़ने लगी, जहाँ किसी की मृत्यु न हुई हो। बहुत ढूँढ़ने पर भी उसे कोई ऐसा घर नहीं मिला। अंत में वह निराश होकर लौट आई और बुद्ध से बोली, "प्रभु ऐसा तो एक भी घर नहीं, जहाँ कोई मरा न हो।"

यह सुनकर बुद्ध बोले, "गौतमी, अब तुम यह मानकर संतोष करो कि केवल तुम्हारे ऊपर ही ऐसी विपत्ति नहीं आई है, संसार में ऐसा ही होता है और ऐसे दुःख को लोग धैर्यपूर्वक सहते हैं।"

महात्मा बुद्ध की बात सुनकर गौतमी को अपूर्व संतोष की अनुभूति हुई।

28. सपना

(CBSE 2021 SQP Term-2)

मैं घर पहुँची तो टेबिल पर मेरी पसंद के व्यंजनों की भरमार थी। अड़ोसियों-पड़ोसियों की भीड़ देख कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि पापा ने गले लगाते हुए बताया कि "बेटी! दसवीं कक्षा की बोर्ड परीक्षा का परिणाम आ गया है। तुमने इस परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। मैंने तुम्हें डॉक्टर बनाने का जो सपना देखा था, वह अब अवश्य पूरा होगा। तुमने अपने परिवार, विद्यालय और गुरुजनों का नाम रोशन कर दिया है।"

यह कहते-कहते पापा की आँखों से खुशी के आँसू छलक पड़े। मैंने दसवीं की परीक्षा में टॉप किया है, यह सुनकर मुझे अपने कानों पर विश्वास ही नहीं हो रहा था। तभी पापा ने मुझे अखबार दिखाया और अपने हाथों से मिठाई खिलाई। वहाँ उपस्थित सभी पड़ोसियों ने मुझ पर बधाइयों की झड़ी लगा दी। पापा ने उन सबको खूब मिठाइयाँ बाँटी।

हर माता-पिता का अपने बच्चों के विषय में एक सपना होता है। उसे पूरा करना योग्य संतान का कर्तव्य है। मैंने अपने पापा का सपना साकार कर दिया है, यह सोचकर मुझे मन-ही-मन गर्व का अनुभव हो रहा था। ●

ई-मेल-लेखन

पत्रों में हम सभी भली-भाँति परिचित हैं। अभी तक हम जो पत्र लिखते रहे हैं, वे डाकघर के माध्यम से हमें प्राप्त होते हैं। पत्र लिखने के बाद हम पत्र-पेटिका (Letter Box) में पत्र डालते हैं। वहाँ से डाकिया उन्हें एकत्र करके डाकघर लाता है। वहाँ उन पर लिखे पतों के अनुसार उनकी छँटाई होती है और फिर उन्हें स्थान के अनुसार अलग-अलग बोरों में भरकर संबंधित डाकघर तक भेजा जाता है। वहाँ से डाकिया पत्रों को लेकर संबंधित व्यक्ति तक उन्हें पहुँचाता है। इस सारी प्रक्रिया में कई दिन लग जाते हैं। कभी-कभी तो पत्र रास्ते में खो भी जाते हैं। पत्रों को क्षणभर में ही संबंधित व्यक्ति तक निश्चित रूप से पहुँचाने के लिए **ई-मेल** (E-mail) का जन्म हुआ।

ई-मेल का अर्थ

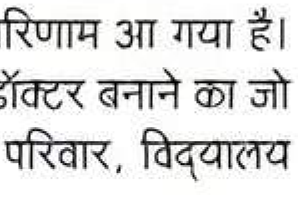

ई-मेल
(E-mail)

ई-मेल (E-mail) शब्द इलेक्ट्रॉनिक मेल शब्दों का संक्षिप्त रूप है। यह पत्र भेजने का सबसे आधुनिक और तीव्र (तेज़) माध्यम है। इसलिए हम इसे **तीव्रगामी** या **द्रुतगामी पत्र** भी कहते हैं। इसे डाकघर के माध्यम से नहीं, बल्कि कंप्यूटर या आधुनिक स्मार्ट मोबाइल फ़ोन के माध्यम से भेजा जाता है। यह सब सूचना और संप्रेषण तकनीक (Information and

Communication Technology—ICT) के द्वारा संभव हुआ है। कंप्यूटर और मोबाइल फ़ोन ने इस क्षेत्र में क्रांति ला दी है।

आज घरों से लेकर सरकारी दफ़्तरों तक में इसका खूब प्रयोग किया जाता है। अब सभी कार्यालयों, न्यायालयों, स्कूल-कॉलेज़ों आदि में ई-मेल को सूचना भेजने तथा प्राप्त करने का आधिकारिक तरीका मान लिया गया है।

ई-मेल का इतिहास

अमेरिका के रे टॉमलिंसन को ई-मेल का आविष्कारक माना जाता है। इन्होंने सन् 1972 में पहला ई-मेल संदेश भेजा। यह संदेश रे टॉमलिंसन ने किसी अन्य को नहीं, बल्कि स्वयं को ही भेजा था।

सन् 1978 में भारतीय मूल के अमेरिकी वी०ए० शिवा अय्यदुरई ने एक कंप्यूटर कार्यक्रम (प्रोग्राम) तैयार किया, जिसे 'ई-मेल' कहा गया। इसमें इनबॉक्स, आउटबॉक्स, फोल्डर्स, मेमो, अटैचमेंट्स आदि विकल्प (ऑप्शंस) थे। 30 अगस्त, सन् 1982 को अमेरिकी सरकार ने इन्हें आधिकारिक रूप से ई-मेल का आविष्कार करने वाले के रूप में मान्यता दे दी। इस प्रकार औपचारिक रूप से वी०ए० शिवा अय्यदुरई को 'ई-मेल' का आविष्कारक माना गया है।

ई-मेल के प्रकार

ई-मेल दो प्रकार का होता है–

1. वेब आधारित ई-मेल, 2. पॉप आधारित ई-मेल।

1. **वेब आधारित ई-मेल**–यह एक ऐसी ई-मेल सेवा है, जिसे कुछ व्यावसायिक कंपनियाँ अपनी वेबसाइट पर उपयोगकर्त्ता को निःशुल्क उपलब्ध कराती हैं। इनमें हॉटमेल, याहू मेल, आउटलुक, जीमेल, रेडिफ़मेल आदि मुख्य हैं। इसके लिए पहले आपको उस वेबसाइट पर अपना ई-मेल खाता बनाना पड़ता है। तब वह वेबसाइट आपको एक लॉगिन नेम (Login Name) और पासवर्ड (Password) देती है। इनका उपयोग करके आप अपने ई-मेल खाते को खोल सकते हैं और वहाँ से ई-मेल भेज सकते हैं तथा प्राप्त कर सकते हैं।
2. **पॉप आधारित ई-मेल**–पॉप (POP) का अर्थ है–पोस्ट ऑफिस प्रोटोकॉल। यह एक ऐसा नियमबद्ध शिष्टाचार (प्रोटोकॉल) है, जो वेब सर्वरों द्वारा अपनाया जाता है। जब आप किसी इंटरनेट सेवा प्रदाता कंपनी से कनेक्शन लेते हैं, तो लॉगिन यूज़रनेम और पासवर्ड के साथ ही आपको एक ई-मेल खाता भी दिया जाता है। यह खाता एक प्रकार का मेल-बॉक्स (Mail Box) है, जिसमें आपके नाम आई सभी ई-मेल को रखा जाता है। दिए गए पासवर्ड का उपयोग करके आप इस ई-मेल बॉक्स को खोल सकते हैं और अपने नाम आई सभी ई-मेल को इंटरनेट सेवा प्रदाता कंपनी के सर्वर से अपने कंप्यूटर में डाउनलोड कर सकते हैं। बाद में आप कभी भी उस ई-मेल को पढ़ सकते हैं। डाउनलोड की हुई ई-मेल को पढ़ने के लिए कंप्यूटर को इंटरनेट से जोड़े रखना आवश्यक नहीं होता, बल्कि उसे ऑफ़लाइन भी पढ़ा जा सकता है। इस ई-मेल खाते से आप ई-मेल भेज भी सकते हैं।

ई-मेल के मुख्य उद्देश्य और विशेषताएँ

ई-मेल के मुख्य उद्देश्य और विशेषताएँ इस प्रकार हैं–

- तेज़ गति से संदेश भेजना।
- कम खर्च और कम समय में निश्चित रूप से संदेश भेजना।
- निजता को बनाए रखते हुए सुरक्षित रूप से संदेश भेजना।
- कागज़ एवं श्रम की बचत करना।
- कागज़ की बचत के कारण पर्यावरण का संरक्षण करना।
- असीमित पत्रों अथवा संदेशों को सर्वत्र वहन करने (लाने-ले-जाने) की सुविधा।
- कंप्यूटर के अलावा मोबाइल, लैपटॉप, टैब आदि के द्वारा संदेश भेजना आसान।

ई-मेल के लिए ज़रूरी साधन

ई-मेल के लिए निम्नलिखित साधनों की आवश्यकता पड़ती है–

1. **कंप्यूटर या मोबाइल**–ई-मेल के लिए कंप्यूटर या आधुनिक स्मार्ट मोबाइल की आवश्यकता होती है। लैपटॉप या टैबलेट में भी इसे आसानी से चलाया जा सकता है।

2. **इंटरनेट कनेक्शन**–ई-मेल के लिए इंटरनेट कनेक्शन की आवश्यकता होती है। यह कनेक्शन हमारे कंप्यूटर या मोबाइल आदि से अवश्य जुड़ा होना चाहिए। कनेक्शन के साथ इंटरनेट की उचित गति भी इसके लिए ज़रूरी है।

3. **ई-मेल अकाउंट**–ई-मेल भेजने और प्राप्त करने के लिए ई-मेल भेजने वाले और ई-मेल प्राप्त करने वाले का ई-मेल अकाउंट होना आवश्यक है। एक तरह से यह ई-मेल अकाउंट ही हमारा ई-मेल का पता (E-mail ID) होता है।

ई-मेल और पत्र में अंतर

उद्देश्य और विषयवस्तु की दृष्टि से पत्र और ई-मेल में कोई विशेष अंतर नहीं है। इन दोनों में सबसे मुख्य अंतर केवल माध्यम का है। पत्र को हम कागज़ पर लिखते हैं और ई-मेल को कंप्यूटर या मोबाइल पर लिखते हैं। जिस प्रकार एक साधारण पत्र में पहले पाने वाले (Receiver) का नाम, पता (Address) लिखना होता है, उसके पश्चात् संदेश (Message) और फिर उसके नीचे भेजने वाले (Sender) का नाम लिखते हैं। उसी प्रकार ई-मेल में भी प्राप्त करने वाले का नाम, पता (E-mail ID) और संदेश लिखना पड़ता है। इसमें ई-मेल भेजने वाले का पता अपने आप ही पाने वाले के पास पहुँच जाता है।

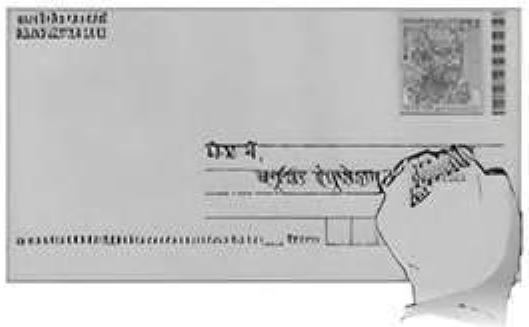

ई-मेल अकाउंट का आशय और ई-मेल अकाउंट बनाना

ई-मेल अकाउंट

हम एक-दूसरे को भौतिक रूप से उसके नाम और उसके रहने के स्थान यानि पते (Address) से जानते हैं। हमें जब किसी व्यक्ति विशेष से कोई काम पड़ता है तो हम उस व्यक्ति विशेष से उसके रहने के स्थान पर संपर्क करते हैं या फिर उसके पते पर पत्र लिखते हैं। ठीक इसी तरह से ई-मेल भेजने तथा प्राप्त करने के लिए भी एक पते (Address) की ज़रूरत होती है, जिस पर मेल (संदेश/पत्र) आएँ और यहाँ से चले जाएँ। इस पते को ही इंटरनेट की दुनिया में E-mail ID कहते हैं। यह ई-मेल पता ही हमारा ई-मेल अकाउंट होता है।

ई-मेल अकाउंट बनाना

ई-मेल अकाउंट बनाने के लिए हमें सबसे पहले अपने कंप्यूटर या मोबाइल में ब्राउज़र (क्रोम, मोज़िला आदि) में जाना पड़ता है। जीमेल, आउटलुक, याहू, हॉटमेल, रेडिफ़मेल आदि कुछ मुख्य मेल साइटें हैं। इनमें से किसी भी साइट का प्रयोग करते हुए, हम अपना ई-मेल अकाउंट बना सकते हैं। ई-मेल अकाउंट बनाने के लिए हम इन साइटों में से किसी एक का पता डालते हैं। यदि हम जीमेल पर अपना ई-मेल अकाउंट बनाना चाहते हैं तो गूगल को खोलकर उस पर (http://www.new-google-account/) लिखकर क्लिक करते या एंटर दबा देते हैं तो हमारे सामने दिखाए गए पेज़ की तरह एक पेज़ खुलता है–

इस पेज़ पर माँगी गई सभी सूचनाओं को भरकर लगातार आगे बढ़ते हैं। आखिर में हमें एक ई-मेल आई०डी० (ई-मेल पता) मिलती है। जो कुछ इस तरह होती है–dr.avneeshkumarakela@gmail.com एक तरह से यह ई-मेल पता ही हमारा ई-मेल अकाउंट होता है।

ई-मेल अकाउंट बनाने की इस प्रक्रिया को बिंदुवार क्रमशः इस प्रकार समझ सकते हैं–

- Internet Explorer, Google Chrome, Mozilla Firefox आदि में से किसी एक को खोलें।
- वेब ब्राउज़र के पते पर www.gmail.com या yahoo.com आदि लिखें।
- Create Account बटन को दबाएँ।
- सामने आपकी जानकारी माँगता एक पृष्ठ खुलेगा।
- उसमें सारी जानकारी भरें। Next पर Click करते जाएँ।
- एक स्थान पर आपका फ़ोन नंबर माँगा जाएगा। उसी नंबर पर Code भेजा जाएगा।
- उस Code को लिखकर Continue पर Click करें।
- आपका Account आपके सामने होगा; जैसे–dr. avneeshkumarakela @gmail.com

ई-मेल भेजना

ई-मेल पर संदेश भेजने के लिए हमें निम्नलिखित क्रियाएँ करनी होती हैं–

पहली क्रिया – सबसे पहले हम अपना मेल (जीमेल, याहू, आउटलुक, हॉटमेल, रेडिफ़मेल आदि) अकाउंट खोलते हैं।

दूसरी क्रिया – दूसरी क्रिया में हमें निम्नलिखित को समझना और भरना पड़ता है–

(i) To–यहाँ पर हमें उस व्यक्ति का ई-मेल पता लिखना होता है, जिसको हम ई-मेल भेजते हैं।

(ii) Cc (Carbon copy)–मुख्य ई-मेल प्राप्तकर्त्ता के अलावा हम जिन-जिन लोगों को वह मेल भेजना चाहते हैं, उनके ई-मेल पते यहाँ लिखते हैं। इसके द्वारा हम अधिक-से-अधिक लोगों को एक बार में ही ई-मेल भेज सकते हैं।

(iii) Bcc (Blind carbon copy)–यहाँ पर हम उन लोगों के ई-मेल का पता लिखते हैं, जिन्हें हम कोई मेल भेजना तो चाहते हैं, किंतु ई-मेल के मुख्य प्राप्तकर्त्ता को यह नहीं बताना चाहते कि वह ई-मेल उसके अलावा और किन-किन लोगों को भेजी गई है। इसके द्वारा भी हम एक ही बार में अधिक-से-अधिक लोगों को ई-मेल भेज सकते हैं।

(iv) Subject (**विषय**)–इसमें हम ई-मेल द्वारा भेजे जाने वाले संदेश का विषय लिखते हैं।

तीसरी क्रिया – विषय के रूप में अपना ई-मेल लिखने के लिए हम Compose का चयन करते हैं। ऐसा करने पर एक नई विंडो खुलती है, जिसमें हम ई-मेल लिखना आरंभ करते हैं।

चौथी क्रिया – ई-मेल के द्वारा भेजा जाने वाला संदेश लिखकर पूर्ण करते हैं।

पाँचवीं क्रिया – संदेश लिख चुकने के पश्चात् Send का चयन करते हैं। Send पर क्लिक करते ही हमारा ई-मेल द्वारा भेजा गया संदेश To, Cc तथा Bcc में लिखे पतों पर चला जाता है। हमारे द्वारा भेजे गए सभी संदेशों की कॉपी Sent फोल्डर में जमा होती रहती है।

ई-मेल के द्वारा हम लिखित संदेश के अलावा कोई फ़ोटो, चित्र ऑडियो और वीडियो आदि भी भेज सकते हैं। ये चीज़ें हम Attachment के द्वारा अपने कंप्यूटर में स्थित संबंधित फाइल को Attach करके भेजते हैं।

ई-मेल-लेखन के प्रकार

पत्र-लेखन की तरह ई-मेल-लेखन भी दो प्रकार का होता है–

(क) औपचारिक ई-मेल-लेखन–अधिकारियों, कंपनियों, प्रकाशकों, विक्रेताओं आदि को किया जाने वाला ई-मेल-लेखन औपचारिक ई-मेल-लेखन कहलाता है।

(ख) अनौपचारिक ई-मेल-लेखन–सगे-संबंधियों और मित्रों आदि को किया जाने वाला ई-मेल-लेखन अनौपचारिक ई-मेल-लेखन कहलाता है।

ई-मेल-लेखन का प्रारूप

प्रेषक (From)	....	← भेजने वाले का ई-मेल पता
प्राप्तकर्त्ता (To)	I	← मुख्य प्राप्तकर्त्ता का ई-मेल पता
	Cc	← Cc प्राप्तकर्त्ताओं के ई-मेल पते
	Bcc	← Bcc प्राप्तकर्त्ताओं के ई-मेल पते
विषय (Subject)	....	← संदेश का विषय
संदेश (E-mail)	....	← संदेश की विषयवस्तु

ई-मेल-लेखन में ई-मेल भेजने वाले का ई-मेल पता और दिनांक स्वतः प्राप्तकर्ता के पास पहुँच जाता है; अतः उसे लिखने की आवश्यकता नहीं होती है।

ई-मेल-लेखन के कुछ उदाहरण

निर्देश–*निम्नलिखित में प्रत्येक विषय पर लगभग* **80** *शब्दों में ई-मेल-लेखन कीजिए–*

1. आपके बैंक खाते में गलती से 5000 रुपये की राशि अधिक आ गई है। इसकी जानकारी बैंक अधिकारी को ई-मेल लिखकर दीजिए।

(CBSE SQP 2023-24)

From	abc@gmail.com
To	pnb@gmail.com Cc Bcc
Subject	खाते में अधिक राशि आने की सूचना।

महोदय,

आपके बैंक में मेरा बचत खाता संख्या 2001007512XXX है। कल मैंने अपने खाते में कुछ धनराशि जमा की थी। मेरे खाते में उस धनराशि से 5000 रुपये अधिक आ गए हैं। आपसे प्रार्थना है कि खाते की जाँच करके जमा धनराशि की संख्या सही करने की कृपा करें।

धन्यवाद।

भवदीय

अ०ब०स०

2. अपने बड़े भाई के विवाह में सम्मिलित होने के लिए चार दिन के अवकाश हेतु प्रधानाचार्य को ई-मेल लिखिए।

To	sjschool@gmail.com	Cc Bcc
Subject	चार दिन अवकाश हेतु।	

महोदय,
मैं आपके विद्यालय की कक्षा दसवीं 'ब' का छात्र हूँ। मेरे बड़े भाई का विवाह 3 दिसंबर, 20XX को होना निश्चित हुआ है। इसमें सम्मिलित होने के कारण मैं चार दिन तक विद्यालय नहीं आ सकूँगा; अतः आप मुझे दिनांक 1-12-20XX से 4-12-20XX तक का अवकाश प्रदान करें। आपकी अति कृपा होगी।
धन्यवाद।
भवदीय
अ० ब० स०

3. भ्रामक विज्ञापन से परिवार को हुई आर्थिक हानि की शिकायत करते हुए समाचार-पत्र के संपादक को ई-मेल लिखिए।

To	jagran@gmail.com	Cc Bcc
Subject	भ्रामक विज्ञापन से हुई आर्थिक हानि के विषय में।	

महोदय,
आपके प्रतिष्ठित समाचार-पत्र में जोड़ों के दर्द के लिए 'संधि पीड़ांतक हर्बल तेल' का विज्ञापन छपा था। उसमें बताई गई विशेषताओं से प्रभावित होकर हमने अपनी दादी जी के लिए वह तेल मँगवा लिया। उसकी कीमत ₹ 4,000 थी। प्रयोग करने पर पता चला कि वह केवल सरसों का तेल है, जिसमें कोई सुगंधित वस्तु और तीव्र जलन पैदा करने वाला कोई रसायन मिलाया गया है। उसके प्रयोग से दर्द में तो कोई राहत मिली नहीं उल्टा उनके हाथ-पैरों में फफोले और पड़ गए। इस भ्रामक विज्ञापन के कारण हमारे परिवार को, जहाँ आर्थिक नुकसान हुआ, वहीं दादी जी को हुई पीड़ा के कारण हमारे सारे परिवार को मानसिक पीड़ा भी झेलनी पड़ी। आपसे निवेदन है कि आप अपने प्रतिष्ठित समाचार-पत्र में ऐसे भ्रामक विज्ञापन न छापें और इनकी धोखाधड़ी के विषय में विस्तार से छापकर इनका भँडाफोड़ अवश्य करें, इससे समाचार-पत्र की विश्वसनीयता और दृढ़ होगी।
धन्यवाद।
भवदीय
अ०ब०स०

4. पाठ्यक्रम का बोझ कम करने के लिए केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष को ई-मेल लिखिए।

To	xyzcbse@gmail.com	Cc Bcc
Subject	पाठ्यक्रम का बोझ कम करने हेतु।	

महोदय,
मैं आपके बोर्ड से संबद्ध एक विद्यालय का दसवीं कक्षा का छात्र हूँ। इस ई-मेल के द्वारा मैं आपका ध्यान दसवीं कक्षा के बोझिल पाठ्यक्रम की ओर दिलाना चाहता हूँ। दसवीं कक्षा के सभी विषयों की तीन-तीन पुस्तकें हैं, जिनमें पाठों की संख्या बहुत अधिक है। प्रत्येक विषय का परियोजना-कार्य और शिक्षेतर गतिविधियाँ इससे अलग हैं। यह पाठ्यक्रम इतना विस्तृत है कि पूरा वर्ष मारा-मारी करने पर भी पूरा नहीं होता। इस पाठ्यक्रम के बोझ से छात्र और शिक्षक दोनों ही तनाव में रहते हैं।
आपसे निवेदन है कि पाठ्यक्रम का यह बोझ कुछ कम किया जाए और इसे अधिक रुचिकर और उपयोगी बनाया जाए। इससे हम छात्रों का तनाव कम होगा और हम इसका रुचिपूर्ण अध्ययन कर सकेंगे।
धन्यवाद।
भवदीय
अ०ब०स०

5. सर्दियों के मौसम में कोहरे के प्रकोप के कारण, संभावित दुर्घटनाओं से छात्रों की सुरक्षा हेतु स्कूल प्रशासन ने, स्कूल का समय परिवर्तित करने का निर्णय लिया है। विद्यालय के प्रधानाचार्य की ओर से लगभग 100 शब्दों में बदले हुए समय की जानकारी अभिभावकों तक पहुँचाने के लिए एक ई-मेल स्कूल की वेबसाइट पर डालने हेतु तैयार कीजिए। ***(CBSE 2023)***

From	principal@gmail.com	
To	parents@gmail.com	Cc Bcc
Subject	स्कूल के समय-परिवर्तन के विषय में।	

महोदय,
सर्दियों में कोहरे के प्रकोप को देखते हुए संभावित दुर्घटनाओं से छात्रों की सुरक्षा हेतु स्कूल प्रशासन ने स्कूल का समय परिवर्तित करने का निर्णय लिया है। अब स्कूल का समय प्रातः 9 : 00 बजे से सायं 3 : 00 तक होगा। परिवर्तित समय के अनुसार ही बच्चों को स्कूल भेजने की कृपा करें। आगामी सूचना तक इसी समय-सारणी का पालन करें।
धन्यवाद।
भवदीय
प्रधानाचार्य

6. अपने क्षेत्र के विधायक को क्षेत्र के एकमात्र सरकारी अस्पताल की अव्यवस्था को सुधारने के लिए ई-मेल लिखिए।

To	abcmla@gmail.com	Cc Bcc
Subject	सरकारी अस्पताल की अव्यवस्था के विषय में।	

महोदय,
मैं आपके क्षेत्र का एक जागरूक नागरिक हूँ और इस ई-मेल के द्वारा आपका ध्यान अपने क्षेत्र के एकमात्र सरकारी अस्पताल की अव्यवस्था की ओर दिलाना चाहता हूँ। अस्पताल में चिकित्सक सप्ताह में केवल एक या दो बार ही आते हैं। जाँच के लिए अस्पताल में सभी उपकरण हैं, लेकिन मरीज़ों को बाहर से जाँच कराने के लिए कहा जाता है। जो दवाइयाँ अस्पताल से मिलनी चाहिए, वे भी मरीज़ों को बाहर से खरीदनी पड़ती हैं। चिकित्सक सारी दवाइयाँ बाहर के मेडिकल स्टोर पर बेच देते हैं। अस्पताल में साफ-सफाई की भी कोई व्यवस्था नहीं है। आपसे अनुरोध है कि अपने प्रभाव का प्रयोग करके अस्पताल की व्यवस्था ठीक कराएँ, जिससे क्षेत्रवासियों को चिकित्सा सुविधा मिल सके।
धन्यवाद।
भवदीय
अ०ब०स०

7. समस्त औपचारिकताएँ पूर्ण करने पर भी आधार कार्ड न मिलने की शिकायत करते हुए संबद्ध अधिकारी को ई-मेल लिखिए।

To	dpo@gmail.com	Cc Bcc
Subject	आधार कार्ड न मिलने की शिकायत हेतु।	

महोदय,
मैं शिमला के सिरधूर क्षेत्र का निवासी हूँ। मैंने अपना आधार पहचान-पत्र बनवाने के लिए 'भारतीय विशिष्ट पहचान प्राधिकरण' के क्षेत्रीय कार्यालय में दो माह पूर्व आवेदन किया था। समस्त औपचारिकताएँ पूर्ण करने के उपरांत भी मुझे आज तक मेरा आधार पहचान-पत्र प्राप्त नहीं हुआ है। यह एक महत्त्वपूर्ण दस्तावेज़ है। इसके बिना मेरे कई कार्य अधूरे पड़े हैं। मैंने संबंधित अधिकारियों से कई बार पूछा, लेकिन कोई संतोषजनक उत्तर नहीं मिला।
आपसे अनुरोध है कि इस विषय में उचित कार्यवाही करके मुझे मेरा आधार पहचान-पत्र शीघ्र उपलब्ध कराकर अनुगृहीत करें।
धन्यवाद।
भवदीय।
अ०ब०स०

8. आप धनुष सांगवान/धनुश्री सांगवान हैं। आपने ऑनलाइन लैपटॉप खरीदा है परंतु खरीदने के एक महीने के भीतर ही उसमें खराबी आ गई है। इस बात की जानकारी देते हुए तथा उत्पाद (लैपटॉप) को बदलने का आग्रह करते हुए कंपनी के ई-मेल पते पर ई-मेल लिखिए। *(CBSE 2023)*

From	dsangwan@gmail.com	
To	abccompany@gmail.com	Cc Bcc
Subject	लैपटॉप बदलने हेतु।	

महोदय,
मैंने आपकी कंपनी से ऑनलाइन एक लैपटॉप खरीदा था। खरीदने के एक महीने के बाद ही इसमें खराबी आ गई है। मेरे पास इसका वारंटी-कार्ड भी है। आपसे प्रार्थना है कि यह लैपटॉप बदलकर दूसरा लैपटॉप देने का कष्ट करें।
धन्यवाद।
भवदीय
धनुष सांगवान

9. अपने क्षेत्र में एक पार्क विकसित करने के लिए नगर निगम अधिकारी को ई-मेल लिखिए।

To	Mca@gmail.com	Cc Bcc
Subject	क्षेत्र में पार्क विकसित करने हेतु।	

मान्यवर,
मैं अंबाला शहर की सैनिक विहार कॉलोनी का निवासी हूँ। हमारे क्षेत्र में नगर निगम का कोई पार्क नहीं है। 'पार्कों को शहर का फेफड़ा कहा जाता है।' इससे पर्यावरण शुद्ध रहता है और नगर के सौंदर्य में वृद्धि होती है। नागरिकों को सुबह-शाम भ्रमण के लिए प्रदूषण-मुक्त स्थान मिल जाता है। इस भ्रमण से उनका स्वास्थ्य ठीक रहता है। मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि पार्क के महत्त्व को समझते हुए हमारे क्षेत्र में खाली पड़ी भूमि पर एक पार्क विकसित कराने का कष्ट करें। आपकी अति कृपा होगी।
धन्यवाद।
भवदीय
अ०ब०स०

10. विद्यालय में दसवीं कक्षा की परीक्षा से पूर्व अध्यापन की अच्छी व्यवस्था कराने के लिए प्रधानाचार्य एवं शिक्षकों को कृतज्ञता व्यक्त करते हुए ई-मेल लिखिए।

To	davprincipal@gmail.com	Bcc
Cc	xyz@gmail.com	
Subject	पढ़ाई की अच्छी व्यवस्था के लिए कृतज्ञता-ज्ञापन।	

मान्यवर,
अगले महीने बोर्ड की परीक्षाएँ आरंभ होने वाली हैं। आपने परीक्षा से पूर्व सभी विषयों के अध्यापन की जो विशेष व्यवस्था की है, उसके लिए मैं आपका और सभी अध्यापकों का आभार व्यक्त करता हूँ। सभी अध्यापकगण हमें अतिरिक्त समय में महत्त्वपूर्ण प्रश्नों का अभ्यास करा रहे हैं और हमारी विषय संबंधी समस्याओं का समाधान कर रहे हैं। इस अतिरिक्त तैयारी से हमें विश्वास हो गया है कि हम सभी विद्यार्थी परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करेंगे। इस अनुकंपा के लिए मैं सभी विद्यार्थियों की ओर से एक बार पुनः आपका आभार प्रकट करता हूँ।
धन्यवाद सहित।
आपका आज्ञाकारी शिष्य
अ०ब०स०
दसवीं 'ब'

11. चैक बुक खो जाने की सूचना देते हुए बैंक प्रबंधक को ई-मेल लिखिए।

To	pnb@gmail.com	Cc Bcc
Subject	चैक बुक खो जाने की सूचना देने हेतु।	

महोदय,
आपकी बैंक शाखा में मेरा बचत खाता संख्या एम-5275XXXXXXX है। मेरी चैक बुक कहीं खो गई है। उसमें चैक संख्या 627XX से 627XX तक आठ चैक बचे हैं। कृपया इन चैकों के भुगतान पर प्रतिबंध लगाने का कष्ट करें, जिससे कोई इनका दुरुपयोग न कर सके।
धन्यवाद।
भवदीय
अ०ब०स०

12. नगर में बढ़ रही कोरोना रोगियों की संख्या के प्रति चिंता व्यक्त करते हुए स्वास्थ्य विभाग के अधिकारी को ई-मेल लिखिए।

To	cmo@gmail.com	Cc Bcc
Subject	नगर में बढ़ रही कोरोना रोगियों की संख्या के विषय में।	

महोदय,
हमारे नगर से कोरोना पूर्णतः समाप्त हो गया था, लेकिन विगत चार दिनों से पुनः कोरोना रोगियों की संख्या बढ़ रही है। यह चिंता का विषय है। इसका कारण यह है कि लोगों ने मास्क पहनना, दो गज की दूरी रखना, सेनिटाइज़र का प्रयोग करना आदि कोरोना से बचाव के नियमों को ताक पर रख दिया है।
आपसे अनुरोध है कि लोगों से कोरोना बचाव के नियमों का कड़ाई से पालन कराया जाए और टीकाकरण की गति को तेज़ किया जाए; ताकि इस भयानक बीमारी पर नियंत्रण हो सके।
धन्यवाद।
भवदीय
अ०ब०स०

13. आप कुछ दिनों के लिए विदेश जा रहे हैं। इस दौरान आने वाली अपनी डाक को डाकघर में ही सँभालकर रखने के लिए प्रार्थना करते हुए डाकपाल को ई-मेल लिखिए।

To	Postmaster@gmail.com	Cc Bcc
Subject	डाक सँभालकर रखने के विषय में।	

महोदय,
मैं अतुल गोयल, 225, शारदा नगर, प्रयागराज का निवासी हूँ। मुझे मेरे सभी पत्र आपके डाकघर के द्वारा ही प्राप्त होते हैं। मैं 1 जून से 30 जून तक विदेश यात्रा पर जा रहा हूँ। आपसे निवेदन है कि इस समय के बीच मेरी जो भी डाक आए, उसे डाकघर में ही सँभालकर रखा जाए। यात्रा से वापस आने पर मैं स्वयं आकर अपनी डाक ले लूँगा।
धन्यवाद।
भवदीय
अ०ब०स०

14. नव प्रकाशित पुस्तकें मँगवाने के लिए नेशनल बुक ट्रस्ट को ई-मेल लिखिए।

To	nationalbook@gmail.com	Cc Bcc
Subject	नव प्रकाशित पुस्तकें मँगवाने हेतु।	

महोदय,
आपके प्रशासन से कुछ नई पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। मैं इन नई पुस्तकों में से कुछ पुस्तकें मँगवाना चाहता हूँ। उचित कमीशन काटकर पुस्तकें वी०पी०पी० द्वारा मेरे पते पर भेजने की कृपा करें। मैं पाँच सौ रुपये अग्रिम भेज रहा हूँ। पुस्तकों की सूची निम्नलिखित है–
1. सफलता के सूत्र – देवधर -1 प्रति
2. उभरता भारत – ए०के० पाटिल -1 प्रति
3. फूल और काँटे – सुरेंद्र -1 प्रति
भवदीय
अ०ब०स०

अभ्यास प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित विषयों में से किसी एक पर दिए गए संकेत-बिंदुओं के आधार पर 80 से 100 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए–*

1. **भ्रष्टाचार**

   संकेत-बिंदु– • भ्रष्टाचार का अर्थ • तेज़ी से फैलता भ्रष्टाचार • भ्रष्टाचार के रूप • कारण • मिटाने के उपाय।

2. **बालश्रम**

   संकेत-बिंदु– • समाज के लिए अभिशाप • बच्चों का शोषण • कारण • सरकारी प्रयास • हमारी ज़िम्मेदारी।

3. **देश पर पड़ता विदेशी प्रभाव**

   संकेत-बिंदु – ● हमारा देश और संस्कृति ● विदेशी प्रभाव ● परिणाम और सुझाव।

निर्देश–*निम्नलिखित में से किसी एक औपचारिक विषय पर पत्र-लेखन कीजिए–*

4. हिंदी दिवस पर विद्यालय में आयोजित गोष्ठी का विवरण देते हुए किसी प्रतिष्ठित दैनिक पत्र के संपादक को प्रकाशनार्थ पत्र लिखिए।
5. माननीय प्रधानमंत्री जी को पत्र लिखकर अपने मन के किसी महत्त्वपूर्ण विचार का उल्लेख करते हुए उस पर 'मन की बात' के आगामी प्रसारण में चर्चा करने का निवेदन कीजिए।

निर्देश–*निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर 20-30 शब्दों में सूचना-लेखन कीजिए–*

6. एक विद्यार्थी, जो आज ही नई टाइटन की घड़ी पहनकर विद्यालय आया था। भोजनावकाश के पश्चात् उसकी घड़ी कहीं विद्यालय परिसर में खो गई। इस आशय की सूचना जारी करें।
7. 'शिक्षक दिवस' के अवसर पर कार्यक्रम आयोजन करने के लिए आपको संयोजक बनाया गया है। कार्यक्रम के बारे में विद्यार्थियों की सभा के लिए एक सूचना लगभग 30 शब्दों में प्रस्तुत कीजिए।

निर्देश–*निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर 25-50 शब्दों में विज्ञापन तैयार कीजिए–*

8. हिंदी की पुस्तकों की प्रदर्शनी में आधे मूल्य पर बिक रही महत्त्वपूर्ण पुस्तकों को खरीदकर लाभ उठाने के लिए लगभग 25 शब्दों में एक विज्ञापन लिखिए।
9. स्वच्छता के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए सरकार की ओर से विज्ञापन लगभग 50 शब्दों में तैयार कीजिए।

निर्देश–*निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर 100-120 शब्दों में लघुकथा-लेखन कीजिए–*

10. संघर्ष का महत्त्व।
11. कोरोना से डरो ना।

निर्देश–*निम्नलिखित में प्रत्येक विषय पर लगभग 80 शब्दों में ई-मेल-लेखन कीजिए–*

12. पाठ्यक्रम का बोझ कम करने के लिए केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष को ई-मेल लिखिए।
13. समस्त औपचारिकताएँ पूर्ण करने पर भी आधार कार्ड न मिलने की शिकायत करते हुए संबद्ध अधिकारी को ई-मेल लिखिए।

●